বিজ্ঞাপন



চারি বংশর পূর্ব্ধে আমি কাব্যপ্রদ্ম রচনা করিব ভাষা স্বশ্নেপ্ত জানিতাম না। তিন বংশর অতীত ঘইল, আমি "চিত্রঞ্জিনা" নামে একখানি ক্ষুদ্র কাব্যপ্রস্থ রচনা করি। "চিত্রঞ্জিনা" নিশিয়া আমি ষেরপ্র গুংশাহ পাইয়াছি, বোধ হয়, কোন কালে কোন দেশে কোন প্রস্থার রেনরপ্র ওংশাহ পান নাই। তবে আমি কি সাহসের উপর নির্ভর করিয়া এই বহুবায়সাধ্য ব্যাপারে পুনর্কার প্রব্রত ঘইলাম। সক্ষদম পাঠকগণ! ইমার উত্তর আমি নি ছুই নিতে পারিলাম না। তবে যদি আপনারা অনুগ্রহ করিয়া এই পুত্তক খানি অধ্যয়ন করেন, বোধ হয়, ইঘার উত্তর কিছু পরিমাণে পাইলেও পাইতে পারেন। এই গ্রন্থখানি বাল্লালা কাব্যপ্রস্থা পাঠ করিবার ফল। ব্যেহতুক আমি বাঙ্গালাক্ষাব্যপ্রস্থা তাধিক পাঠ করিবার কল। ব্যহতুক আমি বাঙ্গালাক্ষাব্যপ্রস্থাক পাঠ করিবার কল। ব্যহতুক আমি বাঙ্গালাক্ষাব্যপ্রস্থাক পাঠ করিবার কল। ব্যহতুক আমি বাঙ্গালাক্ষাব্যপ্রস্থাক পাঠ করিবার

উপকার স্থাকার না করা বড় অধর্ম। সেই অধর্মপ্তরে আমি এই স্থলে স্বীকার করিতেছি যে স্কটলগু ও ইংলও দেশীর প্রসিদ্ধ করিম্বর বরক্ষ ও বাইরণের কিছু কিছু ভাব এই পৃস্তকের কোন কোন স্থানে স্মিবেশিত করিয়াছি।

অবশেষে সহাদর পাঠকগণের নিকট আমার নিবেদন এই, ধদি উহার। অস্থ্রহ করিরা এই পুশুকখানি একবার পাঠ করেন, সকল শ্রম সার্থক জ্ঞান করিব।

ঞ্ছকারস্য।

মানাবর শ্রীযুত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর মহাশয় মহাশয়েয়ু।

ওহে সুধীবর, তব ও অন্তর, কোমল কমল যেন, দয়ার আকর, বিদ্যার সাগর, কয় জন তোমা হেন ? প্রকৃতি স্থন্দরী. এ ভব উপরি অত্যে গঠনিল ক্ত জीব बढ थानी, नाहि পारत वानी বর্ণনা করিতে তত। দর্ব্ব শেষে নর, প্রফুল্ল-অন্তর্ প্রকৃতি গঠিল করে, রতি নানা রূপ. • একের স্বরূপ[্] ক দেখে, বল অপরে ? মানব থেমন, কুতুহুলী মন রহস্ত বেড়ায় খুজি, প্রকৃতি তেমন, রহুন্ডে মগন রহস্তের ভরে. এই ভব'পরে প্রকৃতি গঠিল তাই,

প্রাণী এক আর, প্রাকৃতি তাহার বড়ই মঞ্চার ভাই। পর সুখ ভরে, অঙ্গ কালি করে ভাবি ভাবি সারা দিন. পর সুখ তরে. স্বাস্থ্য ভঙ্গ করে, আমোদ প্রযোদ হীন : পর তুথ তরে অশন উদরে: জুটে,না তাহার রোজ, ভবিষ্যত তরে, ভাবেনা অন্তরে, যেই জুটে তাই ভোজ। এর পুরক্ষার, গালাগালি ভার ইবা নিন্দা কুৎসা তীর, বক্ষ ভেদে তার, জ্বালায় যাহার, হ্রাদ তার নহে স্থির। নাম এ প্রাণীর, হলো প্রকৃতির, ইস্থা কবি বলি দিতে. কিন্তু সে প্রকৃতি পাঠান প্রকৃতি নিভান্ত না বুঝি চিতে। হুঃখ ভাবি ভারঁ, প্রকৃতি আবার আশ্রয় করিয়া দিল। সুধী, দয়াবান্, আশ্রয়ের স্থান, তার সে তাই হইল।•

কাব্য লতিকার, কে আছে আমার
তোমা ভিন্ন গো সহায় ?
বির তবাপ্রয়, কাব্যলতাচয়,
ব্যাপুক উদ্যান প্রায়
এ বিশাল বঙ্গে. যেন তব সঙ্গে
কাব্য বল্লী না শুকায়।
"চিন্ত-রঞ্জিকার," যেমন স্থালায়
পাদপ কল্টক-প্রায়,
ভাবি সহকারে, "চিন্ত-রঞ্জিকারে "
কঠিন শমীরে দিহু,
"মোহিনী-মোহন" পাদপ-চন্দন
ভোমায় ভাবি অপিনু।

একান্ত বশবদ **এইশ্বচন্দু চটোপাধ্যায়,** সাং বালি।

্ শুদ্ধিপত্ত।

	*		
7 र्छ।	পংক্তি	ভ্ৰম	সংশোধন
ર	્ ૨૨	যুঠেনি 🥤	যুটেনি
b -	, 50	পৌছছিতে	পঁহ ছিত্তৈ
٦	. : &	म म ७	শত ত
76	* 59	मन=हहरू	भन्म एक
96-	39	নজিল	ल ्जि
85	২৩	সদত	স ত্ত
90	\$ ₹	পড়েছে	পরেছে
93	২	চাৰু তায়	চাৰতায়
92	br	मज़ भी दि	मदः भी द
95	>A	সাম্ম-কলে	আশ্ত ফলে
-99	২৬	কন্দা	শোভা
b 9	>0	ফুপ	কুল
25	২৩	পরিশর	পরিসর
200	હ	কয়	কর
**	7.2	সম্ভোগি	न रेग्र
220	76	বিদ্ধান	বিশ্বান
224	>>	স র্গ	শ্র্!
25.0	ર .8	হশ	र् षा
399	2 9	খাসি "	षा'रम .
Sha	২৩ .	डिक रेक् ।	কত সাধ
>>6	æ	≆्र्य	र् गा
ンタト	25	হৰ্ম ৾	र् शा
520 .	२०	श्रम	धूटम
२२७	30	কিবা	কেৰা
२ 8२	9	म् कंतिरन	मूळ्जिटव

মে হিনীমোহন কাব্য।

প্রথম সর্গ।

معدووووووووو

"What is man! for simple us he look."
Do but try to decelop his hooks and his crocks,
With the decelor and his shallows, his cood and his evil,
All in all he's a problem must puzzle the devil "--BOBS".

'১ সংসার সথ আগার যেই জন কর,
দরাখুনা সারি দেই কি আছে সংশয়।
যে পার্শ্বে কিরাই জাঁথি দেখি জীবকন্ত,
স্থে স্থ্ শব্দমাজ, জান হয় স্পন্ত।
হর্বলের প্রতি প্রবলের প্রপীড়ন,
প্রাণ কাদি উঠে হাহা করি সন্দর্শন।
স্বচিত্র চিক্রণ ই আদ পত্তম পাদপে
পশিয়া প্রকৃতিশোভা, করিছে আতপে।
কি চাক বরণ প্রভা সাঁথি ভৃত্তিকর,
নিরীক্ষণে নির্বাশিত উত্তপ্ত অন্তর।
এমন সময় এক কাল বিছদ্দা,
ধরিল পত্তম আগি প্রকৃশি বিক্রম।
কোন স্থানে দ্বীমুখী বদি শাখী পরে,
করিছে সংগীত কিবা স্থাধুর অরে।

ति बूतनी - श्रीन श्रीन मन श्रीनिकंड, विश् भीना मञ्जा भाग्न छनि तम मश्मीछ। अमन ममन्न अक मिकानिया गांधी, দেয়ে। দে দধীমুখী হতে এক শাখী। কাৰাতক কাল সম করি পরাক্রম, ক্ষিত্ৰ কৰ্মস্থিত তাহারে অধম। কোন ছলে নয়ন পুতলি পুত্রবরে জননী হইয়া হারা কাঁদে শোকভরে। अमृति निर्मन्न काल मन्नायुना मन, জननीत क्लाफ़ इट्ड कार्ड श्वधन। कक्ष अस्मनश्चि असि अमनीत. আছে কি এমন মন হতে পারে ছির চ বক্ষে করাম্বাত করে ধ্লায় লুপ্তিত, ঝার ঝার ঝারে অঞ্চ হাহাসছলিত। कल्पन धान्ता छ। इत्र समग्र निम्दत्र, ठाकित्रो मश्मात, वत्म य;¥ रूक् कत्त्र । कोन चार्न नार्विज्ञा मिन दिन पति, अधिर उर्ष बादर बादर मुखिकिका कति। मिम वमन हिंद्र जाएक में जानि, टिति यादां इके निछ (नम्म कत्रजानि। কক্ষে বুলি করাছুলি ধরি বংশ**ষ্**ঠি, शुर्ठिन केमरत अंत वृति मिन मन्त्री, কক কেশ অন্থিপেৰ তাহে চকু বসা, **छेनग्र अन्तर्भ नेका** निर्देश मक्ता। कान कृति कुईवाधि गणि-भक्ति हीम, रख धर्मातिश किका हाटर वित भीन।

খন খড়ো কার শির কার কাটে ছাত শোণিতে ভাগমে ভূমি তাহার পশ্চাৎ। সমরের সহোদর ছর্ভিক ভীষণ, পশ্চাতে আদিয়া তার নাশে নরগ !!. (मानत क्रिक छोडे मङ्क इक्ता, \ বিস্তারিত করে পরে ধোর মারীভয়। कान च्रान पारिक, शीमान, शीत करन, भाषिक भाष्ठ नह नियुक्त भौड़ान। 'रेनाशी नन अग्र मात्य राधु मठाशिश, দোষী নন অন্ত দোষে ক্লব্ব জিতেভিয়। मजा धर्म जागा कथा (यह जान नात्म, निर्द्धा थिन हा प्रके जो होत्त मकारम । •शरका, धाराद्रग्, शद्रश्रीहर, क्रिंदिङ छूनका (यहे (महे विक छन। मग्रायान, माननील, छुश्यी छुश्यह्रज, নিৰ্বোধের শিরোমণি তাদের গোচর: পরদেষী, পরস্তুপ, পর-হিংসাকারী, वृक्षिकी वी मिर कर मानत जाराति! गठिनिन (यहे जन এ ছाর সংসার, কেমনে হদর তার কৰণা আধার। कीरवरत यखना फिट्ड वरे कन मक, म जन नकम मिए मान्दर माक। সতা, ধর্ম, যে সংসারে এত স্থবিরল, विषयना (म मश्मादि वम् कि किवन। মনোমত লোক খুঁজি না পাই জগতে, বল মন সে সংসারে রছিব কেমতে।

भाग नार्ष्ट भागकृति जाट कर गंड, ভন্ ভন্ করে মাছি তাহে প্রবিরত। কোন, ছানে অন্ধ্ৰুতন প্ৰদারিয়া কর " দে বাপুরে ভিক্ষা মোরে" বলে নিরন্তর। দুৰ্ভিছীৰ থেই জন কি কফটই তার, হতভাগ্য তার সম কেবা আছে আব ? ষে জন জীবেরে পারে সৃজিবারে অন্ধ, কভু না তাহার হলে আছে দ্যা-গন্ধ। উচ্চ - অভিনায - হুত্ত সমর অগম, প্রকাশিছে কোন স্থানে বিষম বিজ্ঞা: বিশাল দক্ষিণ করে অগ্নি অন্ত ধবে, চক্তকি তরবার ৰলে বাঁদ করে। লোহিত লোচন তার যেন প্রভাকর, মানবশোলিতে ভার রক্তাকে অহর। অক্ষে অনল অস্ত্র মবে সঞ্চালন . अहितिशा मानवकुरल नागरत इड्डन मूक्यूक कीत माटन वक शात लाक. উপালক হয় মনে প্ৰলয় বিয়াজ। छनित्रकि मिथि इटक थान कारन उद्द, শিলার্ছি, বলি জম জনমে অন্তরে। श्रीकृत्वरि यटक रमेरे करत वित्रमण, भंड फेल्कार्भिश वर्ष त्यम करैंग करा। সহল্ল সক্ত লোক পাত সে প্রহারে, অট্টালিকা কত শত ফাব্ল ছারখারে ৷ ञ्चुमा बर्गतत्मोकः गूड्टार्छ विनके न। करा जिल्ली मारा कात महन करें ?

गत्भागजः नर्स भूं कि कांग्रेस् कान. না পাই ধার্থিক জনে এ বড় জঞাল। অমৃত বলিয়া জ্ঞান যাসা হয় মটন, গরল প্রতীত হয় সেই পরকণে। मिन्डायी, शामामूब, मठावठी कठ, জিতেন্দ্রিয় সুগন্তীর, ধর্মপথে রত**া** কথা ভানি মনে গণি ধর্ম-আবতার, মনে করি এই বুকি পাত বন্ধুতার। ্ অটল বন্ধুহপাশে আবন্ধ হইতে, ভূমিক্ত-মতনে নন তারি একচিতে, যেমন সভাব যার ক্রমেতে একাশ, সতা অভাবের শেষে পাইল জাভাষ। ভন-কাব্যপ্রস্ম - উভ্তানে যের৷ বাস, শকু छन। ह्यांक मूर्थ खंडाव छेमान्। অন্তর-উদ্যান ত'র করি বিলোকন অবাক্ হইয়া আছি না সরে বচনঃ यज्ज्ञ भाभज्य थारक मरमामारम, সতেজ দে সর্বতক নহুনে প্রদানে। কুটলতা-তৰু যিটি সিটি ভরঙ্কর, नित्रिथित मिष्टि हत्क भारत जारम खता এ সংসারে বাসতরে যাখা ছিল আশ, এ বর্র সহবাসে গেছে সে. প্রবাস। 'ব্যুন সংসারে আর নাকরিব বাস, ত্যজিব ভুজজ্মম নরসহবাস। " जिमिश्रा कांगिक काल यांच मिनाखर्द, সভাবের শোভা হেরি ছুডাব অন্তরে!

किंछ होत्र आवनम सम (अत्रनीत्र. जिल्हा कर्मान यारे कि मिसिय किरत। महला ज्यला नाहि जातम जामा वहे. विरम्भं खमर्ग याव (कमरन वा कहे। र भिष्डा भिष्वकारम शतिगम्भार b কেৰ বা বাৰিয়া ছিলে ! অঞা নীয়ে ভাষে তारे मम कृषि धरवः, रल श्री अथन কেমনে সে স্বেছপাশ করিব ছেদন। हि शिलः ! जामाति मात्र मिहे व। कमत्त. काल मिनाहात्रवर्ग मेर्डि अवस्थार्थन्य রে দেশাচার ছাট তুই কত দিনে, कांस इवि मंकारेट वक्कन मीरन। তো होत क्यांति १ छि यउ बन्न छत्। कतिराज्य इष्टेक्टे विश्वत खनान। या इराज इत्र ठारे जनमा कथम, তিলেক এ পাপাপারে করিত মমন। शर्यातिय नाम। (मन, नगद, धालुद्र, সভাবের শোভা চেথি জ্ভাব অভর। নির্ধিব রত্বাকর, স্রোত্থিনী শত, ভূমিৰ কাননপথে দেবিৰ প্ৰত্ত। निर्मात सर्मात भाग खानव ध्यान विष्क्रम-भाग विष अभिव कागता। কিন্তু হার বিদায় চাহিব কোন্প্রাণে, धांशमम मम मिर खिता-मित्रिश्व। याहे नम्र मा विलिया नजूबा कथन, मिट्न मा विभात मादित मि विश्वनमा

कि कहिन्न, हेरेनाम तुबि भूगा-कान, নতুবা এমন চিন্তা ছদে পায় স্থান। यनि यारेना दनिया थिया अखिगातन, निक्ता विधित (महे जार्शन श्रद्धाः। त्य हेग्रा यकि विन बुबिट्व निम्हण, मम अनिश्चिमी कड़ जारवाध उ नश्। विन गित्रा यारे छारे छाटिएंग विमाह कला यांद (मर्गेष्ठर कि मत्सर जाता" श्हेत्राप युवा धक विश्वा विकास, विल प्राप्ति विश्वास्त गता। वयः भक्षविश्मधात्र काछि मताइत, শুচিক্রণ কাল কেশ দেখিতে স্থমর। •ললাট বিশাল ছেরি মনে জান হয়. ধীশক্তি বসতি করি চির তথি রয়। স্থচাৰু চিৰূণ কিবা তার যুগা ভূক, হেরি রমণীর ছিয়া কাৃণে হ্ৰ ছক। जाकर्व नवन-घूग मोन्नर्या - जानाम, कि माधुरी तमरनति कतिरह धकानी। আঁথি ছুটা হেরি তার মনে জ্ঞান হয়, বিক্ষারিছে বুদ্ধি-জ্যোতি দিয়া তারাদ্বর नामिका श्वाप अंडि, 'क्डिय मन्नन, नेयम् भारकत दिशा हाक श्रामाजन। ওঠাধর হুইথানি স্থাতের অতি, মুত্রল মধুর হাসি তথি নিবসতি। कोयूनी किनिया ता शामित तथ इही, (गाँकक्रभ-चम भार्ष ददि-त्रिय-वर्षे !

च्रमञ्जूत कथाश्वलि कातात्र च्रशहरत, त्म खन्न अवर्ग नाजी नार्थ कि ध्वकारन कून, भीन, नक्कां, खग्न ; करत्र मरन भर्म, कुरम जाबि मना अरन रम यशुनिकर्ण। विभान म वक्काइन मोन्नर्ग कि जात्र, নারী ভিন্ন সে রূপের মর্মজান কার? हिन बकः इन मार्त , जाउद जावान, যে অন্তর কত উচ্চ বলিয়া প্রকাশ कतिरव (कमरन कवि: शांति विनिर्गात अना नत मन उथि (भी हैं दिक्ट को दार रायन तम डेक थूनः उपनि कामन, জগতে নাহিক যার উপমার ছল। কুংখী ফুঃধিনীর অঞ্চ মুছাবার তরে, যত্ন করি গঠিছিল তার যুগা করে এ বিশ্ব - সূজন - পাতা, সে বাছযুগল পর-উপকার-ব্রতে সদত চঞ্চল। जना जम अञ्चल माधुरी वर्तिवादत কিরা প্রয়োজন আর; সেন্দ্র্যা যাহারে निट्ड পরিণয় করি শরীর মাঝারে বিরাক্ত করিত সদা শোভিত তাহারে। অভিধান মোহন স্ত্রাক্ষণ সন্তান, চিন্তাপুর নিবসতি মনোরম স্থান। क्रमनीत अक याज महान त्यांचन, অতি প্রিয় মধা ষ্টি খঞ্জ প্রিয়ধন। উত্তম সঙ্গতিপন্ন জনক আছিল, आंश्रात्क कारनटक विमा यर् भिका मिन।

जर्ल क्टिंन कुडिंका इरेन माइन, वृद्धिकीयी दिन मग्राम्य श्रीक्षनः করিত চাহার অতি; অসা বয়ঃক্রা, বিভা দিয়া পিন্ধ তার রাখিন সহমে। তে किशान, त्रकिशान, विद्यान (य अन, বল-রাজে। বাস তার বিষম জ্লুনু। অজ্ঞতা-তিমিরে যথা চির আক্রাদিত, বিদ্বান তথায় কোণা হয় গো,আদুর্ত। মুর্খের কোখায় মিল সহ পণ্ডিতের, विवास पूर्व मिन क्रीड्रास छिता । विवादक कार्या स्मिथ पूछ कार्य कार्य, মিছা কত অপবাদ তাঁহারে আরোপে। कू काँ एक किलिए जाँदि इस यह वान, मन (रुके। करत किरम इरव जानमान इन मना चिन भाइत्वत विक थारिम, জুলিয়া উঠিত সব মোছনের নামে। **(मर्गंद कूमःकांत्र किरम इहेर**वक पृद्र, করিল মোহন তার যতন প্রচুর। विश्वा निवाह न्याटि इम्र अहनन, ধন মন দিয়া চেটা করিল মোহন। कूष्रश कूलगर्शामा किरम इति श्रः म, বছল মোহন তার পরিশ্রম অংশ লইল আপন করে; ফল'লাভ তার, কুবচন, জ্বালাতন, অপমান ভার। इः एथ मक्ष कति मिन मिर मोर्मित, সরল স্বভাব যার সে কি অসতের

5.

क्षेत्र व्युवित्त नक १ मानव - ध्वकृति मिलिया कैंकिल धान कर्नामा बाक्रि । मत्नाइः एष जारे नजरति भूग अता, ত্যজিতে বাসনা তার হলো মনোভর।। यथा बाजिशूर्व वन छाजि म्गमन, অবেষণ করি তারা অক্স বনক্ল, शनात्र हूर्णे मद्दत नाहि हाट किर्द्र, · যায় তারা শৃষ্ঠাপুত্র অরণানী তীরে। हि शाठक मझनज्ञ त्यांहम यजन, नद छे शबूक नइ वास व कृत्र। वहू अठि जविशाम नेवाह महिला. না কর কোন পাঠক না করছে কেছ। (मिष्ड आर्थन हरू उंव दक्षक्रन, তব সর্বনাশ তরে, একান্ত যতন।° তোমার মঙ্গল দেখি ঈ্গায় কাতর, তৰ যশ আকৰ্ণনে ব্যাকুল অন্তর। - তথাপিও তার প্রতি সন্দেহ ন। কর, বুঝোনি কিছুই যেন তাহার অন্তর ' হেন ভাবে কথা কবে তুমি তার সনে, नक्म इक्टर उटर ब्रह्मिं जूरान। জিজাসা করহ যদি বন্ধু সৈ কেমন, अभन्न अरवसर्ग करत राहे जन। তহুত্তর দিতে কিনা সক্ষম সহর, কোণা পাৰে সতা বন্ধু অবনী ভিতর ? কেছ না আপন তৰ আপন সহল, क जार्भन वन उत् विना जर्थ वन ?

দারা, হুড, ডাই, ভগ্নী হউক না যে জন, विना अर्थ अर्थमार्थ एक कर्द्र यछन ? काश जित्व बहु वल ? श्रेड वर नज्ञ, रमिश्रा जाहात हैरी ना मान विश्वता কৰ্ণনা মনেতে ঈগা মুখে রেখো প্রীতি, সম্পুত্তি শাস্ত্রজ্ঞদের এইরপ নীতি। হয় যদি উচ্চ মন, হেন আচরণ, श्राप्त्रम विल यनि कत्र ग्राप्ता তবে যাহ বাদী জাজি মোহন মতন, তুমি উপযুক্ত নও র'তে এ ভুবন ! পাযু*क्षी* शामक नेत्र (विकं उपन, তার মধো ভূমি যদি মুধিষ্ঠিও জন ! इटन मना उन नित्म निनाकीक नमः दाशम- हथः का कत यञ्जन विषय। প্রাণের প্রতিমা প্রিয়া হক্ক্ না শমতে: প্রাণের প্তলি পুত্র যাগ না জীবনে: इष्ट्रम्ब माथा त्यत्य श्राकना क्रिया, षात बात जिला जत या अना भू जिला ; उथार्थिक मृष्ट ভक्তि ज्ञाबित्व जेबाद्य, নতুবা নান্তিক তুমি এ ভব ভিতরে। হেখায় মোছন বসি দিয়া গণ্ডে কর, রাছ অভ্যত্তে যেন ক্রুর নিশাক্র। চিন্তা-রাছ মুখটাদে কলিয়াছে আস, সদা হাস্য যার আস্যে তার নাহি হাস। ভাবিতে ভাবিতে দিবা ক্রমে অবসান, मिनम्बि मौन जारव क्रिन अधान।

गार्मनी-काविनी शति कालिका लेलेब, व्याहिक्छं ध'कूरान, श्र्मी कीरभन। तमगी-कनत-निकु (इति कान्त-भनी, क्षितिका उठिन त्य, प्रशेष्ठ क्षणि। महा। मनाभेज दिति हिनना माहम, করিতে প্রেম্নীস্থানে বিদায় প্রহণ। रंगाकिनी मार्थत्त्र रहति कहिएह ज्थन. कद्रशाखाः कद्रशम् कद्रिया थाइन ;--" अम अम अपूर्णनाथ! अ आहा रक्मनः " मनिन रंगन उद आंक्रि कि क्रांदर ! " नमा यात शांति पूर्व, रेल-पूर्वम छत्तू "বসতি করেছে কেন বিষাদ-গরলে। " (मर्था इट्रम जाना मिन विशे ने जावटर्ग " তुशिए माजीय मन, जालि कि कांत्ररन " र्यान राज जाइ नाथ ? नीज स्मादद रन, " জানিতে ইহার হেতু চিত্ত সচঞ্চল। " ছि हि अकि ध्यममत्र जला विमर्कन, " क्तिएं मागिता किन ? धार्ग य किमन " করে মম ছেরি তব শোক-ত্তাশন। " সে মন্ত্ৰীর মূর্ত্তি এবে এ ভাব ধারণ " कडिन (कम, ८१ मार्थ, नीज तम कांत्रप "কছি ভুষি কর মোর সম্পেত্তঞ্জন। " (मथ, नाथ, ध्वतन वार्षिका छत्त्र गांधी " ছিল ভিন যদি হয়, আঞ্জিত দতা কি " কভু রছে পুর্বভাবে ? দে ছচাক কান্তি " হয় না মালন তার ? দেবি জ্বো ভাত্তি

" वज्जे क्षा वात दिल दिल का प्राप्त किला कि का कि " इहेल जामात जांश ,इडेइ दिवला। " বাক্তু তি নাহি ছয়; প্রাণ যে কেমন " कतिशा डेठिए मम ; दूबि अ क्षीवंन, " न हितिन धरेवाद्य; नजूवा जामाद्य " তৰ মনোহঃখ কছি রাধ জীবাস্বারে। "আমারে হেরি বিষয় কতই কাতর " হইত বল হে সংগ তোমার অন্তর। " আজি এত হঃখ প্রকাশিছি তব স্থানে, " তথাপি কেন ছে বল নাছি শুন কাণে।" কিছুক্ণ ছজনায় এ উহার পানে রছিলেক জানিমিযে; উত্তর প্রদানে অশক্ত মোহন; অনুগল অঞ্জল वर्डिए नागिन जोत संमदा किवन : জ্ঞান হলে। মনে, ছঃথ ত্তাশনে वाका सवीज्ञ इस्म अतिम नगरन। ধরিয়া মোহন শেষে হাল ধীরতার, উদ্বেশ- তুকানে তত্ত্-তরীর উদার

করিরা চকিত মনে কহিতে লাগিল;— "মম সুখশনী প্রিয়ে, রাত্তে গ্রাস্ল।

'' যে রাভ স্থ-রতনৈ স্থরিল আমার,

" সে রাভ্ কিঁ ভয়কর কহিব কি তার।

্, রবি, চাঁদে, যে রাহতে করে, ধনি, জ্বাস, দ্রাহ্ন এ রাহ্ কাছে পারবো তরীকা

' চিন্তারাত নাম এর অতীব ভয়াল,

" মানৰের স্থপণী আসিবারে কালঃ

[उथ मर्ग ।

" धारवण करत थ तांक स मनिय-कांत्र " অহি শেষ করি ভার রক্ত চ্যি থায়। " जमा होत कांखि शूकि नित्रथि नत्राने, " इमग्र श्रेक्स इत्र जानि सूथ गत्न; " কল্য যদি ছদে তার প্রবেশে চিন্তার, " কোথা সেই কান্তি রছে বলনা আমার। " जित्र थिएत रामना करति जामि मरम, " काहीन जीवन मम वित्ममं जमत्।। " त्रवना अ खतकत मरमात-मासारिक, "পর্যাটিব বন উপকন ও কব্ডিকে। " अक्रुं ि-त्रमे शिष्ट क्ति मन नीन, "काठांव जमग्र मम दाँहिव " প্রকৃতির প্রেমমুধা যে করেনি পান, " রথা তার তত্ত্ব, প্রিয়ে, রথা তার প্রাণ 🔭 (माइटेन ब्र कथा खिन कहिल माहिनी, धित्रा कारखन गमा वन भागमिनी। "কি বলিলে, জীবিতেশ, আর ঝোলো নাই, " विराम या हेर व के का जा है सम ठा है " চাছिছ विमान, वन कान आत्म " कंडिट्रल मांकर्ग वाका मम महिधारन। " এ জীবন এই কণে পারি তাজিবারে, " তবু ছে বিদায় আমি দিব নী তোমারে। " विरमण जमरण छेम्हा यनि इरत थारक, "চল ওত্তৈ গুণনিধি লইয়া আমাকে। " जुमि यांटन मिणाखन आमि तन घटन, " धरब्रष्ट अमन हिन्छो क्यम्सन अन्तरत्र।

"তোমার অন্তরু আর আমার অন্তর. " (अरमन्न निकरंत्र दौधा-आरई निवस्त । '' म् (क्ष्रमणुक्षाम, मथा, करंत्र जूमि हिन्न, " ছু-অন্তরে একৃষ্টির করিবে ছে ভিন্ন ? " বঁছিশিখা যদি ইচ্ছে বায়ু ছাড়া থাকি, " विकल (म डेक्ट) नाथ छात्र दग्न ना कि ? " ভূমি ছাড়া থাকি যদি লতা ইচ্ছা করে, " বিফল সে ইচ্ছা তার জান হে অওরে: " आंग्रांजा शांकि यमि हेण्या करत मह, " (म रेष्ट्र) विकल जांत्र कि आह् मत्ल्र । '' ত্যেমা ছাড়া থাকি যদি ইচ্ছা করে মন, " (म इंक्ट्र) विकल इत्र अट्ट्र मजन। " विट्रांच उ:, छनेशांग, जगरनेत्र क्लां "সাইতে অশক্ত হবে শুন স্বিশেষ।" किहूकन स्मीन ভाবে इहिन्ना स्माइन, भारत मधुराका जीत कतिन वर्षन। " যা কছিলে, বরামনি, সব সত্য মানি, " একান্তর তুমি আমি ভাল আমি জানি : " কিন্তু, চন্ত্রাননি, আমি ক্রিয়াছি মনে, " कना याव (मनास्त्र नगत जमर्ग। " প্রকৃতি গঠিল মোকে করিয়া পুক্ষ, " সহিতে হৰিবে তেঁই যন্ত্ৰণা পৰুষ। " काश्रुक्य (यह छन, विरम्भ जगरन, "আশক্ষা তাহার হয় জেনো তুমি মনে। " সাহসী পুৰুষ যারা বিদেশ ভ্রমণ 'করিছে অকুতোভায়ে না ডারে শ্যন।

" अर्थाथ सन्धिनः (भाउ चौद्राहर् " छेड़ीर्थ इंटर्ड मना वानिका काबरन । " উত্তাল তরজমালা হেরি জলবির, "কাঁশে ভরে ভীক্ষন হইয়া অছির। " সেই সে পর্বতাকার উর্বি পরোধির, " সাহসী আরোহী চলে ছদর হছির। "সাহসী পুৰুষ যারা স্তুর্গম দেশে, "यश्टिष्ट् निः भन्नमत्न मुश्रीज-व्यातिष्य । " বাহির করিছে নানা প্রদেশ দুতন, " वाहित कतिरह नाना नमी धाळवन। " উঠিছে গিরি-শিখরে লয়ে তাপমান, " गानिष्ट छेकंड। शीम इस्त यक्नरान। "ভয় যে কছে কাছারে জানে না তাছারা, "কথন হয় না তারা ভয়ে জানহার।।° "সাহস অমূল্য ধন সংসার মাঝারে, ''নাহিক সাহস যার কাপুরুষ তারে "কছে সাহসিক জন জেনো তুমি মনে, "পুৰুষত্ত মানবের সাহস ভূবনে।" (राइटनद कथा अनि साहिनी चुमदी. কহিতে লাগিল কান্তে সবিনয় করি। " প্রাণনাথ, দেখ থোর इইল যামিনী, " घूमा केटह यठ जर श्रूक्य की मिनी। "जामदा इकत्म खर्दे जाहि हर जागिता, " শরীর করিছ শীর্ণ ভাবিয়া ভাবিয়া। "या हरात हर कमा आकि निजा यां छ, " সন্তাপহারিণী-নিক্রা-ক্রোড়েন্ডে ক্ডাও

" তোমার আঁকুল চিত্ত করি হে মিনতি, " হৃদয় হুইতে দুর কর চিন্তাসতী।" এত বলি মোহনী মোহন-কর ধরি, শয়ন করিল . सिंह পर्गक-উপরি। (४, हिमी-नश्रात निका भीख छेर्राञ्चित. সে স্থাধ মোছনে নিজা করিল বঞ্চিত। िखाबार यात माट करबाह धाराम, তার চক্ষে কোথা হয় নিজার আবেশ! (माहिनी निक्छि। (मिथ छेठिन (माहिन, **धक मृत्ये भा**हिनीत वनन করিতে লাগিল, তবু না ফিটিল আশ. কে করে চাঁলে ছেরিতে বিরাগ প্রকাশ ? माहिनी-वनन हाहि निकल नग्रत. ডোছন কহিছে কথা স্থ প্রিয়াসনে। " অয়ি প্রাণেশরি আজি বাঞ্চা পূর্ণ করি. " (इति उर हक्षानन; अहे मि मर्ज्ती 'জাগিয়া রহিব হুগু নেহারিতে কান্তি "তব। ফত হেরি তোমা নাহি জবে আছি। "একেতো তোমার রপ জগণ-খোহিনী, "তবসম নিকপমা কোনু সে ভামিনী ? " তাহে निकारण ज्ञान विश्वन डेक्क्न, " সতা কি না এই কথা রসিক কেবল "कश्रिक सक्तम, खिता, द्वीति यह लाटक, " ऋद्ध समती नात्री त्रत मीलाटक। " मीश्रामिश (कम खुरल मिछित मिछित ? '' धनीः' প নাছিক তৈল। তাই হবে ছির।

" वर्षे . (यं ध्वमी भ-भून ठिल इश्विहाँ एह , " কি 'নিৰ্বোধ আমি রহিয়াছে কাছে "কারণ ইহার, তবে আমি মিছে কৈন ' ভ্রমে পড়ি অক্ত রূপ ভাবি মনে হেন। "যথা ভামু গগনেতে হইলে উদিত্ত " প্রদীপ-শিখার জ্যোতি কবে সে বঞ্চিত, "मम প্রাণেশ্বরীরপ দিনাণি জিনি. "প্রদীপ-শিখার জোতি যদিও মেহিনী, · পাবে পরাজয় কিবা আছে সে সন্দেহ, "कूट्य उन्हें धतिशाष्ट्र स्थमिन (मह "অরি ইত্রুথি আজি মিটাইয়া আশ. "হেরি তব চন্দ্রানন, তব সহবাস-"সুখে বহু দিন আমি রহিব বঞ্চি, "क्रमि**श्ट**ि उव क्रश्न कविव ख्रिडः। " তোমার কারণ হ'লে আকুলিত মন, "করিয়া আমার কদি-পট উদ্ঘাটন "মনশচচকে নেহারিব ও চারতদন, " श्राट्याथ मिलिएल (धी ठ कहित ८ मन : "यामिनी रूरेन देशक नाहि निक्रा धटला, "वांत्रांनभी होन करम काम जाउन राजा "श्रकृष्ठिश्रमती सभी निकात् दिस्तन, " ज्ञांभिशा दिहिष्टुं सुदू चंडाभा दिवन। "কতিয়ে শয়ৰ করিবারে আতাধন: 'निमादमवी, अकिंकि अदमत कामरा। 'यमि भूवें दर्द धनी दक्षा कदिया, " कृशानीत्म, क्रशामुक कर भा जामितः। " ं उत्तर विन साइन कतिल भग्नन महार्खः इदेशां निका निर्मं नत्रभेग्। शति, नित्य, धत कृषि कि मेखि स्माकिनी, সদয় হও যাহারে সম্ভাপহারিলী, क्रिंप-जामार्श ठात्र कि कदिए भेर्दिश কিঞ্চিত কৰুণা দৃষ্টি কর্মো আমারে। ত্র আশে নিশাকালে করিলে শয়ন. পলাও জাগি ছইতে বল কি কারণ ? জায়ি নিজে, তব দোৰ দিই বা কেখন গ তোগার সতিনী চিতা যে করে ভজন. তাহার নিকট তুমি কভুত অংশ মা, লার সনে তব প্রেম কড় ও হর ম। হেন খাচরণ তব নছে শ্রেষক্ষ্যা, ভাবির। দেখুন দেবি তোমার অন্তর। भागात्वर भञ्जाञ ७ ७ ७ ७ १ भने ্য নহে নাডিডা করে সেত পশুমতী। তোমায় মে জন ভজে সাস্থা তার গাবে তোমায় যে জন ভাজে রক্ষা কব তাকে हरेएंड मश्माव कर्युः, त्यरे प्रस्तुः ज्ञास्त्र, त्मरे जन जारन युद्ध कि आरमारम भरज । ক্রীশ্বর দেক্ষপিরর ভজি চিন্তাসতী, ार्ट्या कि नारवामान, यरम वस्त्रमञी বহিয়াতে পূৰ্ব সদা, হিৰে মত কাল, गमानत ज्योक्रांन जिल्ला द्रमान काता। य नात्यामान क्यूमिकमिड, भोतरास करा **जरन** करह आंत्रमं निज:

य काना-कूछ्य कछू रश नी मनिन, य क्रांबा-कूर्रभ-गक्ष ब्राष्ट् विविधन, य काना-कृष्य-मधु ककु ना कुक्षात्र, যার লোতে হুখী অনি জানুখুন্য ধার। হেন কাব্যোদ্যান, দেবি, চিন্তার সূজন, मिंडिए अमन प्रया मक कब्रजन? श्रध (मरे जन कम (य जनात मन, চিন্তার সহার করি অমে ত্রিভুবন। वर्ग, मर्ख, शांजान यादात मत्नाशित्वे शिन तरइ धकवारत (महे क्रम वर्ष কবিপদ পেতে দক; আর চিন্তাসতী, গঠিয়া অৰক্ষা দ্ৰব্য হয়ে যতুৰতী नका कति (मग्र हत्कः; यां श्रेश शृंश्रमः, कवित्र (मर्थनीषूर्थ बश्च फान इता হেন যে কবির পদ হার চিন্তাসতী, প্রদান করিতে পারে মানবের প্রতি। ভারত-গৌরৰ ক্বীশ্ব কালিদাস, यात यण:-व्रवि- (क्यां डि युधी-म्बाकां न উজ্জ্বল করিছে চির; যার কাখোদ্যান, श्रीजात कि जानम कृत्त व अमान, कहिन कि मीन याम। जातन तमहे जन, त्म कारा-कृष्यम्भश्र यात्र सुक्षं मम করিয়াছে পান কভু। হেন কালিদাস, কৰিপদ পাইৰারে কাহার আখাস পাইল বল গ্লে দেৰি? ডোমার সভিনী िखारमधी, निया निका भक्ति स्म स्माहिनी,

যদি না কবির মন করিত উজ্জল, োখা পাইতাম অভিজ্ঞান শক্ষল বল মোর।? অয়ি অভিজ্ঞান শকুন্তলে, কোন এব্য তব সম আছে ভূমগুলে ? ধর বামে হেন দ্রব্য যদি কিছু থাকে, स्थीमन लुक्तं इत्र शाहेट याहाटकः থাকে যদি কোন দ্রব্য অবনী ভিতরে, য'তে সুবিমল সুখ লভিতে জন্তুরে बग्रामा जक्तमा विमर्भत । श्रामाहत, সার কোন দ্রব্য যদি পারে থাকিবারে, ত্র নাম, শক্তনে, করিবারে পারি। मम भट्ड मिट्र में या प्राप्त विहाति। सन्तिभी काकाद, निध्य, यल भाकुसना, यात ल्वार छ छभीमन अठरमा छेउला। বুঝি দেখ অগ্নি নিজে, তব সতিনীয় সে সন্ততি; যার স্থাপূর্ণ হাদর গভীর ভাগারেতে রম্বর্থনি চির বিরাঞ্জিত, যে রত্বরাশি লভিতে সকলে ব্যক্তি। সে রক্তরাশি হৃদয়ে যতই সঞ্চয় कब्र, मार्थक भनीत् मार्थक क्रमग्ने। ञ्ज्यत, जात नित्य, हिंखामिती मह, হয় না উচিত তব বিবাদ কলছ। এার্থনা করি গো তাই মবৈ চিন্তাসভী ভাবিয়া ভাবিয়া হৃদি আকুনিত অভি कतिरव आश्रम, जरब हरम ममावजी, কৰি জোড়ে কোরো ভুষ ক্লিষ্ট চিন্তাৰতী।

া হৈ । দ্বিতীয় সর্গ ।

" Thou glorious mirror where the Almighty's prm Glasses itself in tempests." Brnos.

উয়াসতী প্রাচী দিক করিয়া উজ্জল, তুষিতে মানবে আবিভূতি ভূমওল। किंत्रे परिम धनी कि श्रुष्टांक कांखि. নির্থি নয়নে নাহি জবে কতু আহি। किया (महे अश्रृष्ठी निक आदमा करत, वत्रभ অতি ऋमत জन-मरना करत्, শুক্তারা মনোহরা ফুডণ ভূষণ, প্রিদিয়ে ধনী তাহে রভিম। বসন, र्दवि আংগ প্রভাগে আসি দেখা দিল, উষার পশ্চাতে রবি আপনি রছিল। यथा यदव नदब कड़ि नद পदिनंध, মনস্থে নব বধু আনিলে আলয়; নিজ পুরংঙ্গনা গণ করিতে বরণ, অংগ ছাপে নববধ পিছে योगी त'न , যথাৰ্থই ছেন জান হয় কবি-মনে, উষাসতী দিনপতি সহিত মিলনে। জাগিল প্রকৃতিসতী-সহ দিবাচর, भीजन मनश्मिन बट्ट बात तात। , কুজনিল বিহলম প্রফুল, অন্তরে, ছুটিল মধুপকুল মধুপান তরে।

গুন ধন স্বারে পাশে প্রকুল কুম্বামে, " भृदिल जुरन यन स्फेल्मर श्रमा "রাতি **পালা, রাতি পালা**" কোকিল ডাকিল, मानरम् मव गानव छेठिम। निकृष ल्यां स्माइटन व मानम मन्दित, छेतिल तमगी अक सभीर्य मतीरत। আহুল কুত্তল তার লোহিত লোচন, স্থচঞ্চল ভাব তার বালিকা মতন দ সাস্তার হাস্থুর তিল নাহি স্থ, নির্থিলে বেংগ হয় সদাই অস্ত্রণ। देश्हामञी नाम छोत्र (६ भारत जन) रेक्ट्रानादी मनस्थ तल (६ कथन। (माइन मानरम शिंग जाकृत इन्त्र, সম্ভাষিক ধনী তায় অতি স্বিশ্ৰে। " উंधर साइन हत्ना निर्मा अवमान. িকি আশ্তর্যা এ পর্যান্ত রহিলে শ্রান। " यशिष्ठ जमर्ग ज्ञां कत जार्शक्त. · নারিবে মাইতে পরে মোহিনী-মোহ-" উঠিলে इभनी उर: कर आकर्न, ' এনো মম সঙ্গে শীত্র শীত্র সে করিন।'' চমকি উঠি মোহন জাফিলা উঠিল, ধীরি ধীরি মোহিনীর বদন চ্রিল। ,প্রয়েজন মত নিল করিধেয় বাস. সহজ মুদ্রার নোট নিলা অপ্রকাশ। িখানকত মনোমত **ংস্ত**ক লইল, স্থবিশ্ব'ন' ভুলা এক স∙ করি নিল।

जनक जननी शेष कहिशी व्याहर. श्व जारव नाहिन्तिम स्ट्रेंट जनन। इंचक निक्छे यमि एडी कान भारक, আকর্ষণ করে যথা সত্তর ভাহাকে ৷ जनधिजन-निमध इत्रक शार्थत, আকৰিল স্চীরূপ মেছন-অন্তর! जर्गद रहित्र जाय मोहत्नत मन, **इहेल** চঞ্চল তাই স্থচীর মতন। বনচর বিহঞ্ম আবদ্ধ পিঞ্জর, স্বাধীনতা পেলে যথা প্রস্কুল অন্তর, সংসার-পিঞ্জর হ'তে তেমনি মোছন. হইয়া মোচন তার বিকসিত মন। প্রতিঃকাল স্থনিম্ল গগন মওল. মুহু সমীরণ তাহে বছে পুশীতল। त्मिर तम मभीत प्रश्न स्माहासद मन, डेरिन जानत्म नाहि, बानक यमन भूडिन नुउन (भारत। हाक (ध्रमीत শরিল নেহারি রূপ প্রকৃতি সভীর। कान कारन क्रजमान त्माकन क्रशीत. বনস্থলী নিরীক্ষণ করে, করি স্থির ভাহার নয়ন গুগ; কিবা শোভাষয়. বনরাজি-বিরাজিত শোভার মালয়। মুচাৰু তৰুর ক্ষি মব কিসলয়. नज्ञम, जीवन, अकवादत काड़ि मत्र। আহা কি মোহন মুর্ত্তি জাঞ্চি প্রীতিকর, कि अवा देशांत जूना जूवन जिजत?

मलत माक्ड मर्था मर्था ब्रह तह, गांनम छेथलि (मग्र वस्त মনসুখে তাই তারা সঞ্চালি পল্লব, (मशार**ा स्मान्स्या द्**षि डाकिएइ मानन। यक्त शामशकुम कतिम मर्गन. গ্ৰাহ্য না করিল কেছ বাতীত মোহন। তাই হাসি চলে তৰু তৰু-অলে পড়ি, কহিছে কোঁভুকে কথা ঝর ঝর করি। ' দেখ হে ছহন, নর সোভাগ্য-গোরবে, " চাতে ना स्मारमत शादन वाश्वि विंडरव। ' যে তুল্ছ বিষয় মধ্যে সুথ অৱেষণ ' করমে তাহারা তাহে বিষ দংমিজন। " বারাজনা-অজ বিভূষণে বিভূষিত, " করে নিরীকণ কত হ'রে পুলকিত; " थात्क हाहि जनिमित्य शर् ना शनक, " মুখমগ্ন পীতে জিহ্বা করে দক দক; " তাদের অন্তর यদি করে নিরীকণ, " अवाक् इहेशा शांदक ना मदत वहन। " মোদের অন্তর -আর তাদের অন্তর, " হয় সুধা হলাছলৈ যতেক অন্তর। ' কিন্তু ছে মোদের পার্নে চাছেনা তাছারা, ' দেখির' তাদের ভাব হই জ্ঞানছারা। " भारतक मधाना बर्स यह स्थीजन. " অই দেখ একদৃষ্টে চাহিয়া মোহন। " याहेरक जिल्ला शर्थ हरत भूज-कान, " মোদে কিকে কিরিয়া রহিচে বরাম;

" ड रहाउँ वाजिट्ड शात्र नार्दि कि हू जान, " এমনি আমর। প্রিয় হই ও র ছান। "তাহারা পাষ্ড নর চক্ষু খেকে অন্ধ, " মোদের সরিধি এলে পাই পাপ গন্ধ। " मामित मधामा जाता कि आनित या. " वांद्रांक्या नादी मरक शीख्य गदन। " ऋथी यनि धकक्रम करत जमामत. " डुक्ड कित यमि वाक करत लक नत ।" शानरभ भानरभ कथा छनिए मधुत, वृतिद रेश्त मर्ग शिंउ हजूत। পাদপে পাদপে कथा छनि পক্ষিগণ, সেই কথা কণ্ঠস্বরে করিল যোষণ। গায়ক যেমন শুনি বেহালা বাদন, কণ্ঠস্বরে গীত পরে করে দল্লীর্তন। ' আছা কি মধুর অর 'বেন স্থাকরে, मधिश्रंची करत गान क्रुंग अस्त । काकिन काकनी गात्र भाभित्रा बहार्य, ना करत (माहिज हैहा वनह काहारत? खिनाउ खिनाउ गांन हिनाइ स्माइन, ভাৰণে ইতেছে তাল ছখা বরিষণ। ক্রমে এক ফুল মাঠে আসি উপস্থিত, তকণ অকণ উঠে মোহন মোহিত। आंशं कि अनू के त्रश कि हाक लाजिन, लाहिज-वत्रगं कर्मः महत्र-त्रस्म। कविछ कांकन गम उनने उपन भीता भीता छेठिएछ इ'र्छ्यु वन्द्रभ।

রাখাল গোপাল লয়ে মাঠে উপস্থিত, * गामन न्यांत्र मान गाने स्रांगिष्ठ । প্রকৃতি-মেক্সন-মুর্ত্তি দেখিতে দেখিতে, মোহন লজ্বিল মাঠ প্রকৃত্রিত চিতে। थेंड!'इन आमि कारम अक मरतावरत, নাচারে তুলিল তাহা মোহন অন্তরে। स्मीर्भ मत्रभी (मह भौत नितमन, आभक्ष इंडरल्ड् यूठाक कमन। কেমনে ভাষার শোভা করিব বর্ণন, ভেবে দেখ স্থাবির কেমন সে ধন। আধক্ট শত শত পদা মনোহর নয়ন মেলিল শত যেন সরে বর দেথিবারে প্রকৃতির চাক স্থগোডন, নিস্তায় মৰ্থন ছিল যেই এডকণ। সরঃ চকু খেত-ষেরা মানিত কমল, চক্ষুতারা কোথা যাহা দৌন্দর্যার স্থল। जलिमम शिच्चित्रीत छेशदत विमिश्ना. চক্ষমণি আছে মরি যেন রে শোভিয়া। चष्ट्रगरत थाजःसान करत नात्रीगण. নির্ধি তাদের রূপ মোহিত মোহন। द्राया ना शाठकजून माहन-नग्नन লম্পট লোচনে তাহে করিন দর্শন। বে চক্ষে কমল-শোভা করিল দর্শন, मिरे ठिक वार्याकूटल मिथिन ब्याहन। ্একবার হুর্মার পালে ছেরে ধীর, জান বাব নারী মুখ হেরে জাঁথি স্থির।

দর্শনের ভঙ্গি হেরি মনে জ্ঞান হয়, वहक्रव और्थि स्वन भाषाभारत बन्न। হতে পারে এতে মনে মোহনের মন সমধিক মুগ্ধ ছেরি নলিনী বদন। বিষয় না মান মনে ইছাতে পাঠক; ইহার কারণ অংছে মন সন্তোষক। সরোজিনী কুল এই নাথ সমাগ্রে थ मिन्या प्रत किल इत्य कत्य कत्य। जिनहारक यात विविधारिक अलाहिक, भित्रा (माइन मृर्जि त्र कि कमन ? इम्भी अनग्रकांख निवा आगमत्म, किना शिशा ह नाती वित्रहम महत्। তাই মনোত্রংখে বুখ এত ম্রমীণ, তাই অন্ত-সুদোন্দর্যা করেছে প্রস্থান। धागवधु शीरत मधु गाइ कामिनीत, मिन मांधुना छारे विश्रक महीत। वागाकृत्व जर्भतादः स्थीत त्याहन, গাত্র-ধেতিকালে যদি করিত দর্শন; স্থকেশ - বিকাস করি পরি আভরণ, यथन তाहाता शास्त्र जीवरन मगन। যামিনী আগতাপার, পরির মিলন आगात्र जारमत् यत्न ध्रम्म वमनः उथन यमाणि किल जोतमत जानम, " कमिनी जामा शीव कविछ मर्मन। দক হতে। তবে কবি ক্রিতে ক্রিন, मका (मग्र मद्वां जिनी दमशी यंगनी।

या इंडेक शीठकजन इहे ममत्रभ, যদিও জান হে' নারী প্রভার্তে বিরূপ। অপরাত্তে নারীমুখ সহিত কমল তুলনায় হাস্যাম্পদ জানহ কেবল। নানা জলচর পক্ষী মুখে কেলি করে. निविधि नक्षरम क्षेत्र क्षमपरमा इत्। চারি ধারে পাড় উচ্চ, তাছার উপরে চাৰু তৰু-রাজ-রাজি কিবা শোভা করে। তারি প্রতিবিদ্ধ পড়ি বারির ভিতরে, वमगी जाजूत नीव कंन्शिज डेशात. সহসানির্ধি মনে হেন জ্ঞান হয়, কিলি বিলি করিতেছে ভুজন্প নিচয়। (इतिन मत्रमी-लांख) गाइन स्थीत, দাঁড়াইয়া কিছুক্ষণ আঁথি করি স্থির। প্রকৃতির প্রাতঃ শোডা দেখিতে দেখিতে. চলিল মোছন পরে প্রকল্পিত চিতে। স্ববিস্তৃত মাঠে এক ক্রমে উপস্থিত, করিতেছে ধৃ ধৃ মাঠ সৌন্দর্য বৰ্জিত। নাহিক সে ধান্ত-শোভা ইছা গ্রীমকাল. बनिन मिटिए ज्या दिन दिन किना ক্রমেতে বাড়িছে বেলা, উত্তপ্ত তপন, অত্যুক্ত মহুৰ রাণি করিছে বর্ষণ। र्गकडू शृद्ध (यह जृषि हिला इशामज्ञ, गत्रम वर्षिष्ठ उथि श्रित अविचात्र। भे का विषयकान मिनाकत-कत, শর সম ভেদিলেক মোছন - অন্তর।

माहरमत उर् श्रीम तम अवमीक আরম্ভিন ছাও এব ছইতে অপিত তাহাতে তপন তাপ। স্বেদ ছলে জাই प्रवीकुष उपननी बादा मर्कनारे। উত্তপ্ত মোহন মন নাহি সরে বাণী, ক্লান্ত কলেবর অতি বিশুক মুগানি। মূহুসরে রামধনে কছিল মোছন, " আর তো চলিতে নারি চলে ন। ५४।। " হইতে এ মাঠ পাব যাবে কতকণ, "তক্তৰ পাবে। শীষ্ত্ৰ না দেখি লক্ষণ।" "আহন বাহুগো আর বছদুর নাই, " তৰপুঞ্জ অই ৰাবু দেখিবারে পাই।" - সন্তাবিদ মুহুজাবে প্রভুৱে সে ভূতা, **खिन माह्या यन क्रि डेर्फ नु**डा। যত যার তত ধার সে রক্ষ অন্তরে, मागिन विषय थाँथा त्याइन जलता। यथा मकरमटन शासु रहति मज्रणान, লভিবার আশে ধায় আকুল পরাণ, যত যায় নাহি পায় মৰু উপবন, ক্লান্তকলেবর করে আ্কুলিভ মন। जनत्भारत होंगाइ उक महिश्व जांगिन, **ए**डा, भारतित भन जानत्म छातिन। उक्डरन जानि छाँम कुशाइ कृशीन, विमल आकूनमन भनीत अभिन। भगामाना हिना **धक उक्ता ी भार**म, তথি রামধন গোলা তালয়ন্ত আপো

আনি পাখা নিজ প্রভু করিল ব্যঞ্জন, प्राट्ट जात प्रष्टं अरमा जीवर्ग कीवन। পথ প্রাটন ক্লেশ কভুত মোহন, না জানিত তার মনে হঃলছ এমন। রামধন মোহনেরে সাত্নর করি, कहिल प्रृष्ट्रवहरूनं अज्ञाव विकाति। "দেখুন বাৰুগো এবে পথক্লেশ কত, '' যাইতে বিদেশে তাই হ'ন গো বিরত। " এक मिर्न उर मूथ घरना आध शानि, ' হৃদর বিদীর্ণ হর নেহারি মুখানি ''। "কি কহিলে রামধন" কহিল কুমার, "কর দূর হেন চিন্তা হতে দেহাগাব। " অন্তরে ভেবেছি যাহা তাহার অন্তর, " कीरन यमिन त्रत्य म्हार उठत, "কভুত আমি না করি জেনো তুমি মনে, "কার সাধ্য ফিরাইতে বল হে মোহনে। " यथा नमी वाश्तित हट धताधत, "গতি ফিরাইতে তার দক্ষ কোন্নর? " পশ্চিমে यनिও इम्र द्रवित्र छेमग्र, " পশুজাতি নর সম্যদি কথা কয়; " अमादिश कर यकि धना यात्र होन, " जमधित जल यनि भारत रहै उँ। मः "হুণীর বচন তুরু নুঁ হয় স্থালন, " নিশ্চয় জানছ ভুষি, গ্ৰছে রামধন। " এত পথ পর্যাটন কডু নাহি করি, " তেকারণ ক্লান্ত দেহ আজি এত ধরি।

ं किरम करम शतिखारम शाहर वान्छ। मू - " এ বিষয়ে দৃদ্ মোর আছমে বিশাস। "यङ कता यात्र कटनयदात क्रान्नी, " দেছ কি তত্ই দুঢ় বল হে হয় না ? " वार्यक्रत (नथ कृषि कठ वनाधान, " বাম করে সামর্থ্যের কোথা বল স্থান। "ইহার কারণ ডান করের চালনা, " বাম হতে সমধিক নিশ্চয় জান না।" यश्रम विमन जामि स्थीत माइन, উহা অতি রমা স্থান সহদয় জন। অশ্বস্থ পাদপ আর বট-রক্ষময়, নির্বি যাহার শোভা জুড়ার ঋদর। অশ্বর্থ পাদপ আর বট-রক্ষ তল, প্রদানিছে পামু জনে ছায়া স্থাতন। (कोम्।च-छ्रशन-कद्र धति भिताशित, তৰ্ৰেণী পাত্ত হং হরিতেছে মরি। **চাৰুপর্ণ স্মাকীর্প পাদপ-শরীর**, বরষিতে রশ্মি তথি কি সাধা রবির। কিবা রমণীয় স্থল তক-পুঞ্-তল। धीषकात, यात त्रवि माइ ज़म्छन। তরপরে নানা পক্ষী বনি স্তব্ধ রছে, প্ৰচণ্ড উত্তপ্ত বায়ু মধ্যে মধ্যে ৰছে। পাদপ পরের কিন্তু আছে ছেন গুণ, স্পর্ণান্তে শীতল করে কিরণ আঞ্চন। जमाय भागन-भक भवतम् कन्मिकः রবিরশি চকু চকে তাহে নিপতিত;

नितीकत्। यात त्नां । जूजां कनग्र ; ককিছে খতোৎ যেন মনে জান হয়। कि द्रथ छेमन्न इत्मा माइत्मन मत्न, ব্দিরা এছলে তাহা বর্ণিব কেমনে। याः कन जीयकातन मध्याक भगत्र, **~**श्विष्ठ मार्ठ हाँहि छेख्छ इन्य, পরে হেন রমণীয় স্থানে উপস্থিত, জানে অধু সেই জন খন আনন্দিত কতই যে হয় তার বসি হেন স্থলে, ণে স্থার সমস্ত্র নাহি ভূমওলে। দেই জন মোছনের বুঝিবে অন্তর, क्यार प्रस्त स्व ख्रा क्या कि स्वी नह। পণাশালা সরিকটে ছিলা সংখ্বক, অবগাহি দেহ দোঁহে প্রক্র অন্তর। জলপান করিয়া রন্ধন সাংগ্রেজন, করি দিল মোছনেরে ছরা রামধন। এ পর্যান্ত পাচকের কর্মে মোহন, অনভিজ্ঞ সম্পূর্ণ আছিল, সে কারণ হলো সুচঞ্চল অতি কুমারের মন। नक्ष इटना डान कद्र; जुनदन जीवन নৈক্ষেপ করিল কভু, কভু বা দহন মিটির মিটির স্থলে; ক্রোমল-লোচন আঁগুনে ফুণ্ফার দিতে লোছিত বরণ। तक्कन इहेटन क्षाय वह कर्छ शेट्स, ভোজনে বিসিল দোঁহে প্রফুল অন্তরে।

ভোজনাতে অভ্যাগ क्षकानि त्रीहर, সম্ভাবি কহিল ভৃত্যে হরিব বলন। " (मस क्रोमश्रम मम' क्रीवन श्रांतर्भः " হুতৃগু জীবন এত হয়নি জোজনে। '' ভক্প যে করে নিতা নিজের রশ্বন, " নিতা নিতা তারি তৃথি হয়ত এমন। "নিজ বিনিৰ্মিত ক্লবা কিমা জান হয়, "হইলেও মন্দ তাহা মধুরতা মর।" উৎস্ক কুমার চিত্ত লভিতে বিশ্রাম, পরিজম পরে নিজা কভু নছে বাম। অলম শরীর ভারাকাত হ নয়ন, ছাপিল আসিয়া নিক্রা আপন আসন (माइन नहान, नीखि-भून क मश्मात , साहरनत भएक मर इहेल जाधात। मिहे मिन मिहे श्रुल हिन इक्रान, পর हिन था उक्ष्मां हिन क्षा क्षा व याहेट याहेट शर्थ धक उक्उरत, হৈরিল রাখাল এক বসি কুভূহলে। বিচরণ কিছু দুরে করে শান্তীদল, वरमभन कां हो कूमि मिथ मिट्ट बन राता साक्रामंत्र इन ; जाननिक मान, বিদল রাখাল সহ স্থামল আমনে। मधूर्य महिए अक निर्मन कीतन. कल कल द्वार भीत सूत अवस्ता; বহিছে নমীর মুদ্ন সলিল উপারে, · छेक्टिए हिल्लानकून कन कन चरतः

ভালিছে उत्रक्षंभाम। नमीउটে आर्मि, বরায়ছে অবণেতে ফেন স্থারাশি। **ठल-क्रम-उत्न विश भारत स्थी**त, খুত-মনা হয়ে হেরে শেতি। প্রকৃতির। मांना क्रथ हिन्दा कडू छेठिए इन्ट्स. প্রেমনীর কড় করে তার চক্ষুদ্বয়ে। নদীর প্রবাহে আর চিন্তার প্রবাহে, মোছনের মন মরি যেল অবগাছে। নদীর প্রবাহ আর প্রবাহ চিন্তার, তুলনায় সম দৌহে সঞ্চে কি ভার। ननी छैटर शिति इ'टड डिखा इ'टड मन, নদীবোত চিন্তাবোত একই গঠন। नमीत्यां उ-ठाउँ काम नाना जक्यत्र, চিন্তাত্র-তীরে জান-পাদপ হনর। नमीत्यां निकिष्ठ उक करन न न, আৰাদন ভার বল স্মিটাই কত; চিত্তাভোত নিকটছ জান-তৰ-ফল, आयामान स्थामम जीवन भीवन। নদীজোত নিকটম্ব প্রস্থন পাদপে. মজাইরা দেয় মন প্রাকৃতির জপে। ष्टिशास्त्र उदेवर्जी कार्य-कून-वन, भाहित न। करत वन कान् अल मन ? নদীলোতে উঠে ইশ্বি জীতি ভারহর, চিন্তাভোতে জ্বোধ রিপু ৰছে ধরতর। नमीत्वारल दिश्यक्त क्षीत, श्राहत, আদি করি রছে কত জন্ত ভয়ধর।



ঁঠিন্তাভোতে দেহ, ইৰ্বা, কাম কয়ে ৰাষ্কু: यादात जाहांत मिथ मरन नार्श जान । नमीत्यां शृष् भारत क्षाधित जाताः চিন্তাত্তোত পড়ে শেষে ঈশ পদতলে। হের হে পাঠক জন মোহন মান্দ্রে, চিন্তার প্রবাহ বহে তক্তলে বদে। প্রকৃতির চাক শোডা করি বিলোকন, करह कथा भन मत्न स्थीद त्याहन। " এতে উচ্চপদায়ত মানৰ মঙল. তৰ উচ্চাসন বল শুনা কি গায়ল গ আসীন হইয়া তব স্থউচ্চ আসনে, यात्र कि जीवन उर महामूख मतन ? নাহি কি বৈরি তোমার ? হৃদয় নির্ভয় ? उर ए जशीन जन मकरल कि कृत्र তৰ গুণ অকপটে? তব সন্নিধানে, ध्रम्भूक यथा धात्र वात्र वर्ष्ट्र भारतः অসমুধে যথা দীন ক্রোভ বিপরীতে, হেন তব অভুচর জেনো তুমি চিতে। **धरे** य द्रांशल श्रिविद्य हिन वाम. এই যে রাখাল যার ত্ৰুতলে বাস, **धरे (य क्रांशांन यात्र व्रक्ति (गाठांक्रण.** अरे य दाशान याद नना आहत्व।; **धरे (य दाशान पति वश्म-यकि करत्र, धरे (य त्राथान) फ्रांक क्**त्रिय आस्ट्र निक हाना यथा धनी विद्वित माधन, क्के नमधिक मिर्ड छाटा कवि मन।

भिर्देश नुवैशि विमि अर्थ मिर्द्रामत्न, श्रिक्षित्व **श्रेषाम सम्मा**ं लोहत्। (मह रम नुमिन विम खूत्रमा इत्रम, यात्र माम माम मामी कछ जरम। (मृहे तम नुमनि कदत ाजन ध धति, কি মাধুরী তারি বল আছ। মরি মরি। वन मिथि महीशान किछानि তোমারে, নম্ধিক সুখী কেবা কছ ছে আমাবে। इंड यमि अक्षमग्र ८८ समुर्गमिन, 'রাণালের সংখ সহ তুলনা কখনি হয় না আমার ছ্থা কহিবে অমনি कि मास्मर कर कर कर एर नुमन। দুর হ'তে রাজ্ঞাদ দেখিতে সুন্দর, লভিতে ৰাসনা করে মানৰ অন্তর। দ্য হ'তে নৃপ্পদ বারনাতী অজ माधुरी मिश्रति छात्र मद्र इत्हि महा। कठाम म कक मस्या त्रांग निवमति, ভূঞ্জিয়া তাহার সঙ্গ ইচ্ছা বলবতী হয় গো তৃত্ত ৰবে, হয়ে রোগাকাত, লাউ মন বুৰো তাবে ৰখন প্ৰাণান্ত। তেমান ভূপতি পদ ভাবিশ্মনে মনে, पृत्र २८७ गाँ**श्रुनीत्र कक्ट आटहा** €८९। छेठि छेळ निश्शामन युषु कर्छेगरा, আছে কে এমুন নর প্রতিকূলে কয়।" কিছু কণ খোহন করিয়া আলাপন, (भर्षे त्रांशात्मत मह इत्नां इसे मन।

निशा किছू वर्ष जात्त, চलिका कंवर्तन, वांथान शांथान नत्त्र थाक् स्वीकृत्त् । এইরপে প্রকৃতির শোড়া প্রীতিকর, ছেরি দিন দিন ছুল गোহন - অন্তর। নিত্য নৰ নৰ শোড়া করি বিলোকন, रहेल माइन-मन आमारिक मर्गन। কবি মন হয় যার, পথ পর্যাটনে কি আৰম্ম হয় তাহ। বলিৰ কেমনে। धक शटक साइन ममुक्त महिशातन, হলো উপস্থিত আমি: উৎস্থক বয়ানে करत नित्रीकन उथि य मिरक कनिंध, ना दक्षि भाक्रानद ऋत्थेत अविधि। काम काम ममूज श्रीनात छेशनी उ. নির্থিয়া র্ছাকর মোছন বঞ্চিত इरेम जायन कान; हिल शुल्तित नम करेन श्रीतः, शनक आधितः ना निष्न ; शिन किছू कर्ग धरेक्टरी, উথলিল অবশেষে তারি ভার-কুপে! " কি অভুত কৰা আজি হেঞিল নয়ন, " इरन। ५७ नित्य यम मार्थक जीवन। " ওয়ি মা একডিনতী ভাণার তোমার, " পूर्व कि अभूना धरम वर्त्व माधा कोई ? " यथन त्य अया इन तिराति डाणात, "कि जानम विजयन करत (य जामादा " কহিৰ কেমনে আমি ; মাধুৰ্য্য তাদ্ধারি " लग्न इति मम नश्का; खेळ्यूना योद्यति .

" अन्तर्भ (माहम भगः इहे न्यासहीत. "প্রকাশিবে সে আমন্দ কৈমনে এ দীন। "বিশংল তব ভাতার নানা রত্ময়, "কে আছে এমন নর তারি সমুদর " নির্থিবে তারি চক্ষে । মানব জীবন " क्षरः भी चनकात मामिनी रामन : " ফিশ্বা যথা বারিবিছ বারি নিপতনে "मह्तारत यात यह धन ७ जुनान। " ছেন যে নর জীবন বলগো কেমনে ' अहेरन मक्कम निभूक जा भारत निहीकारन ''ভব ? ওয়ি **ইঙ্গাস**ভী কহি গো ভোমাৰে " কেন কুতুহল-শিখা জ্বালিয়া আমারে "দেহ এত মনোকষ্ট ? এ মম মনন ' একবারে হেরি চক্ষে ভাগের চিক্রণ " প্রকৃতি সতীর, কিন্তু রুখা সে কামনা, " कमरत स्थूरे एक विषय यञ्जल।। " প্রবোদ আছিয়ে এক: সুধীর বর্ণন " করি পাঠ এ ভবের মান্স - নয়ন " इत्र भा मक्तम नित्तीकर्ण धकवाद्व, " यथा यथा धत मांछा स्वम आकारतः। " हि जनिषु पूमि मम जाइ य ममू(४ ' आहिल को मश्ब्ला मम : हिल्लिहिङ् छ्रथ " কতই ৰবীন চিন্তা; নয় তেঁ৷ নয়ন " निर्देश उपक्ष स्वयु छाति गतन मन। ''কি আছে সঞ্জেহ তায় ? বিক্ষারিত জাঁধি " আছিঁল সামার, মন, ছিন্ন তার রাথি

8 .

" यंजरन जनशि भारन ; किन्छ की दिक्कि "সমীপছ বিছত দাগ্র, বা দভিত্ " जानम नद्रानं यत जाहिए हिस्ता, " কি শক্তি নরন হেরে স্তদাস মনে। 'নিরনিধি তোমা হেরি আনন্দ অপার " कियां (य इरेन मम; अखद आमान " कि तरम इहेल भून किहिन किमरन ! " প্রকাশ কি করা যায় সে রস কথনে ? "কিবা স্থচিকণ তত্ত্ মুৰ্ভি কি গন্তীর ' উদক অতদম্পর্শ কত্র যে গাভীব " সক্ষ সে কোন নর করিবারে ছির ? " তোমা সন্দর্শনে যায় জড়িমা স্কলির। " জীবন-প্রস্থন যার অফ্টুট কুট্মল, " বহি ফুর্তি-বায়ু তহপরি স্তঞ্জন-" সে হৃদি কোরকে করে গ্রহুর তথনি **"মানমুখ ব্যিত হয় দৰ্শনে অমনি**! " একটী তোমার নাম হয় রভাকর, "হে জলধি: কতরত্ব তোমার অন্তর ''নিরন্তর আছে ধরি কছিব কেমনে; " इन्ध्र विनदः किन्ठ काँनि मत्न मत्न "হয় গো শ্বন বৰে তৰ দহারতি, " ছরিতে মানবধন চঞ্চল প্রকৃতি। "কত ধনীধন হাঁর তব কোষাগার, "পুর্নিত অমুলা ধনে বর্ণে সাধা কার? " इद्र (इ ज्यूना ४न इः स द्वाहि कति; " ভান হে অৰ্বপোত তৰ ছদি'পৰি;

''ভিক্ষা হে একটা মম আছে তব স্থানে,' " नः रहत्र अकृष्ठी धन अन ७ ट्र काटग्। " দে ধন অতি অ**ম্ল তোহার** আকর " আছে হে জানহ নর দেহের ভিতর। ''ুদে ধন জীবনধন যতনের অভি, " না হরে। সে ধন তুমি করি হে মিনতি। "কত চিরছখিনীর অঞ্চলর ধন "হরণ করিয়া নিজ উদর পুরণ 🕶 "করিয়াছ বল শুনি, হৃদয় বিদ্রে '' গুবাৰে ক্ৰম্মন মার স্থু আশ্রুচ করে। ''দরিকে জ্বালায় খুলি ম্ঞালের ধন, ''জাননী বিদায় দেয় তনয় আপান: ' ছেন পুত্রবার তুমি বল চে কেমনে, "নাশিতে বাসনাকর বল ভুমি মনে? "কত কামিনীর তুমি হৃদয়-বল্লভে 'করেছ হরণ বল; কভু না দল্পবে " হেন আচরণ তব। প্রেম-ভক্বর '' বহু যতনের ধন জেনে। ছে সাগার। ''কত শক্ত ধরে তায়না হতে অঙ্কুর, "অঙ্কুরিত যদি হয় সদা শ**লা**জুর "পাছে মরে শক্ষাতাপে; অকুর পালনে, ' क्रमिष्ठे काँग्लिश्र्व यजन-कीवतन ৷' সদত সিঞ্চিত্ত হয়, 'সরদতা সাহ " প্রদান করিতে হয় গরিমা কি তার। " করিলে এও যতন হয় পলবিত, " कूल्मा, नेना, की है जात्र धटन आहिए।

ें भारती के नामित्य अहा सन उर्व सम, " ধীরতা ক্যার নীর তার অহকেন, " निकटनत थाद्यां कन ; यनि कीत्य थादन, "প্রেমতক র্দ্ধি পায় নর সন্নিধানে। " হেন প্রেম-তক্বরে বল হে জলিধি "কেমনে निময় কর তুমি নিরবধি। '' করিছ না ভাল কাজ তুমি ছে সাগর, " ভাবিয়া দেখুক ওছে ভোমার অন্তর। " षश्मिन विद्वशिष कतिया कमान, " পরোধি इছৎ এক করিছে সৃজন। " गठन मन्भून इरल जडीर विशम, " তাজিয়া পলাতে ছবে তোমার সন্দান " তব তটে কত রাজ্য হলো বিনির্মিত, " করিলে ছে কত রাজ্য তুমি কুন্দিকত। " নগর নগরী কত নির্মিত কোশলে " ধনিত হইত আহা নর কোলাছলে , " কোপা তারা বল বল কোখা মে সকল, " তৃপ্ত কি করেছ তব জঠর অনল ! " তুমি ছে যেমন ছিলে আছছ তেমনি, " অমন্ত মৃত্ন তুমি তাছ আ অবনী। " হে মানব তব শিল্প রখা সিন্ধু কাছে, " गर्ठना कड गर्ठित अरु डेर्डि बार्ट। "হে মানৰ রুগা তব গৰ্বে আৰক্ষার, " দহিতে পার কি এক সিদ্ধুর ক্লংকার ? " হৰ্মনের কাছে তৰ খাট্টে ভাল জোর, ' বলিছের কাছে তুমি इ । যেন ছোর।''

"অধিক ছট্ল বেলা বাবু মুহাশয়," मञ्जाधिन जामधन कदिशः विनश्र। "অধিক 'হইল বেলা দেখুন চাহিয়া, " রবিকর তীক্ষ্ণ দেয় দেহ ঝলসিয়া। " फ़क्त कबन किছू जनगाहि (मह, " वहका जनभटन कि जाएह मटनह " হবে শারীরিক পীড়া; কহি আমি তাই, "রন্ধনের আয়োজন করি সই ঠাই।" এত যদি রামধন কহিল মোহনে, চমকি উ**ঠিয়া প্রভু ভূতা সঞ্চা**দণে कहिन मधूत छाट्य, " ७८ इत्मधन '' হইল যে এত বেলা অভ্ডব 'এতকণ " रहिन किहूरे मग, अहे (य जनिध " করেছিল সংজ্ঞাপুত্ত মোরে এ অবধি। " অতএব শীম শীম কর আংগোজন ''রন্ধনের করি স্নান আমি ততক্ষণ।" इकेटन तक्कन स्थित, स्थीत स्थाहन বসিলেক মনস্থাে করিতে ভাজন। ভোজনাত্তে দোঁহে পণ্যশালা অভ্যন্তরে, করিল শরন অতি প্রফুল অন্তরে। मिता जनमान करमः आङ्गक नद्गन **रहेल शीक्तम** जाग, नजनत्वन। मिर्च (म निमाधकान (गांध्नि मस्त्र) জানে স্থীজন স্থু কি ভাব উদয় इत जामि बनाकार्टन। तरह कि माहन এ হেন গ্রীয় নাহি করি সন্দর্শন

>

প্রবৃতি বিদ্ধিত্ব শোডা ডটে জন্ধিয়: थार्किएक शास्त्र कि मन स्माहरमद सिह ह **ठित्र हिमा जाकाक्ति** उं यन निशंदिएड कठित मर्भन यह मगन इक्ट्र রত্বাকরে দিবাকর স্থমোছন বেশে नारम भा गाम हर्ड जनिध धार्याम कति ममाशम काथा निकट्ड बाबिनी, স্থমোহন বেশে তার ছবিতে কামিনী। মন্তক উপর যবে ছিলা দিবাকর. কার সাধ্য সহু করে তব খর কর ? সে ভীষণ মৃত্তি এবে প্রশান্ত কেমন? না হয়ে প্রশান্ত আর কি কর তপন ? প্রের্গা প্রসাদ হবি লভিবার ভরে, খাটেনা জ্ব মুরতি বুবেছ অন্তরে। তাই হেন মৃত্ভাব বুঝি হে ধারণ ? তাই হে তপন তব বেশ সুমোহন। ছিছি দিনমণি তব উপযুক্ত নয়, ममल जगरजन यादर करद जग्न, ছিছি হে দিনেশ তব উ**পযুক্ত** নয়, তুষিতে নিজ রমণী মনে এত ভয়। কি নিৰ্কোধ আমি মিছা দোষ আৰোপণ, কেন করি ভোমা প্রতি বল হে তপন। य नुगंश्म नुभ ख़दा कां भ कन-मन, हन-क्रम-मन यथा आखि नमीत्रग। य मञ्जीवद्यत दर्दत आहरू नहन, थकानर्भ करम धरत विश्म कम्लाम :

(य मञ्जात मञ्जाहां हि इति मांख खन, দিবানিশি রছে অতি সপত্তি মদ, (इन नृथः, (इन मञ्जी, (इन मञ्जा जन, निक दमवीत कार्ड (मय्की (यमन। তুমিও হে দ্বিষাম্পতি কেন বা ন। হবে প্রশান্ত অতীব ধীর ? যে ভাব সন্তবে कामिनी कामन काह इरल महिहिछ, সে ভাব ধারণ তব নছে অবিহিত। উঠিল মোছন, তুরা প্রকৃতি দর্শনে এক কুদ্র গিরি'পরি প্রকুর লোচনে। হেরিয়া অপুর্বশোড: মোহনের মন, व्यभीभ जानम नीरत इक्त प्रान। "**সার্থক জীবন মম**" কছিল কুমার, " হেরিল নয়ন আজি হেরিবার সাহ। " অদ্ভত সৌন্দর্যা কিবা প্রকৃতি ধরিল, "হেরিয়া বিচিত্র শোভা মান্স টলিল। "কি আশ্চর্যা! রক্ত পদ্ম এক সিদ্ধু নীরে "বিকসিত ছেরি কাঁপিছে সমীরে ধীরে। "জলধি পশ্চিমে অই শোভা চমৎকার। " আমর কি ভাত্তি ছদে ধরিশ আমার। " मक्ताकान मगागंज; रकः थात्र निनी ' अक्त भाष्ति काति ? इम्र कि कामिनी "মগন প্রমোদে কছু পতির বিরহে? "কিষা কোণা কমলিনী প্রকুরিত রছে 'লবণামু প্রেমিধিতে ? কমলিনী কার " অতীৰ কোমল, লবণাক্ত নীর তার

"यथा (जारना फेकंश्य अकू में अक्टिन); "किश यथा निवनीं डे डे ज्यान आहरम्। " আরত মাহিক হেরি লৈ চাফ শোজন, " (मिंबिट पिथिट केंटन इरेडि मगंन। "तुविनाम नटक छेश शकूझ निनमी, ' विश्ति योशन पूर्जि योशिए यिनिनी। "गमन कडिट्ड स्प्री निज अखाहतन, "ধরিয়া অপুর্ব্ধ শোডা মন কুড়ছলে। 'প্রকৃতি পরিল কিবা বেশ মনোহর, " নিরবি জুড়ায় সাঁথি জুড়ায় অন্তর। "গগন পশ্চিম প্রান্ত কিবা শোভাময়, "मृतरमर्भ विद्व खुरल भर्न छन्न इत्र। "বহিছে সমীর মৃত্র লাগিছে পাদপে, "নতশির করি শির তুলিয়া আত্রেণ "উঁকি বুঁকি মারিতেছে মনে জান হয়, " भान किना तनि जल समग्र मज्य। "ममल मिंगम स्था कब्रजारम जात, 'দম্বীভূত তৰু তথু করেছে সবার। '' बार बार गमीदग वर्ष जक्ष शहर, ''অবংণ জুড়ায় খ্রুতি সূড়ায় অন্তরে। ''বার বার শব্দ করি মুহুল স্থীর, "তৰু কৰে জাদেশিছে যেন প্ৰকৃতির " जारमनेन, धरिएंड साइन राम धरा, "কহিতেছে বেন পুনঃ 'আইস আমরা "'श्रहेि युम्ही लाउ। कहि महीर्खन, " শান্তে গোহিত হবে করি আকর্ণ।

" (विश्व वीना श्राम जोत्रा **अर**न अक मरन " प्रमधूत विने मिरे बीभात निकर्ण · करह अ**रहात कंछ ; अ वीगा बहा**त "' अद्भारत (म गर्क धर्य इहेरवक जात'। "মহীকৃছ মাকতে মিশিয়া এক মনে, "তাই আরম্ভিল গীত গাইতে যতনে। " जा मति कि भन्मश थ मधुत अह, " (क क्ष्म द्विदि अब दिन। ऋभी नत्। ' খুরুল মলয়ানিল বছে অত্কণ, " পরশি শরীরে হুগা করে বরিষণ। 'অঙ্গ সঙ্গে সে সমীর করে হতজান, " शुक्ष कि शदम दर्भ **तृर**कन। भेदांग। "সম্ভা ইন্দ্রিয় মোর প্রায় বিচেতন, " गमधा देखिए स इस सूथ। १ तिस्प। ''সমুধে বিস্তৃত সিকু সলিল নীলিমা ' गम्मर्गत (म स्रयमा लक्षि किम-भीम " भनग्र-मागद (बर्ग इस्मा डेम्हिनिङ, ' সমস্ত শরীরে হুধা হলে। সঞ্জিত। "सूथ-मंगी मनांकार्य यदव ममूर्विछ, " হদি-সিন্ধু কেন বা না হবে উচ্ছলিত। " डेथिन मित्रू-मिन च्यार कितर्ग, " (तलाव्हिज खरवा करत मगन की वरन। "मम ऋष-भनी अर्व छैनिङ छेड्वन, " উष्ट्रिक ठाइ इत्ना स्नि-मिब्ब-क्रन। "(पर ज्ञ अ॰ (यम) भन्नि भनार्थ रेसिय, " ठकू, कर्ग, मामा, जुक् अमना भनीम

" यानम मनित्न छोडे इडेन यात्र. '' সমূর্যা শারীর মম তাই বিচেডম। " मारेहि विश्वकूत्र जानि निदूक्त, ' আপন আপন নীড়ে এবে প্রতিকূল "तजनी जानित्ह जारे। कृषिननदन "চলিছে আপন গৃছে শরীর বিকল। " ताथान गांभान नरत हरन गार्छ इर्छ, "ইম্বারৰে গাভীগণ**ুছুটিছে** কেমতে। " आमिरह जिमित गर्स रूड थाही मिक, " मश्रादि कि पार्टिशक समग्र निकीक। "करम हिक अञ्चलात ; অবতরি গিরি, " नातिव औंधारत (घटंं), जारे धीति धीति " नरेरा जावा जामि ; किन रेम्हामजी "কৰ করি পথ মম কৰা করে গতি। "চলিতে চলেন। পদ; समग्र वामना, " मना हरे गिति भिति करहा चुक्रमना. " कति मसर्गन आमि अकृष्ठि न्त्रमणी ; "मरकाय-डेमारिन याउ अमन नदगी " अगंदि भारेर (काश यन अदब मन ? । " विश्वक श्राम डेरम (इशा मर्कक्न) " वृथिंट मरू अगत्। इरेट भठन ; " अञ्च मर्डांग अन रेल्ड् का छन ? " ममन इन्न वैथः प्रःनीन उनन " यूनीन बहेरन कि रम छेल्यूक समग्र ; ",কুপৰ তাজিয়া কিলে স্থপথে আসিবে, " পরিহরি হুষ্টমতি সুমতি পাইবে;

" क उरे यं उस छात वन दन कांत्रण, মুহতের তারে উল্লেখ্য কথন -' इत सा खानक मतन ; दात श्वनत ''তত্ই কুপথে খায় নির্ভয় সম্ভর। "তেমনি প্রকৃতিসতী নরপুত্র তরে, " मुक्तिन। এ वस्त्रका मनग्र अस्टर "কত সুখমর দ্রো করিয়। পূর্ণিত, '' প্রমোদ প্রবাহে প্রাণ হয় উচ্চলিত " जुक्कित म गर सरा; अभि मानर, " হ্ৰা ভাজি পিয়ে বিষ একি সমন্তব। "यादेदल एम भरब भारत छश खुनियन. " गहित्न त्म भारत स्थापत्र कन, "যে পথ মতত রছে পীয়ুষ পুরিত. 'যে পথ ভ্ৰমণে মন হয় পুলকিত ' পরিহরি সেই পথ মানবের " গরল পুরিত পথে করিবে ভ্রমণ। '' যাইবে দে পথে যথা পূতিগন্ধময়, " यहित्य मि शेर्थ यथा कल विषयः। " मानवश्रक्ति (मिथ कामि छेट्रे शान, "কোধা পাই বল মন নরখুর স্থান। "এহেন বিজনু ছান কেন,"পরিছয়ি, '' নাকারজনক ছলে যেতে ইচ্ছা করি। "यामिनी कामिनी कटम जानि आविई छ, [া] প্রকৃতি ধ**রিল কিবা সোন্দর্য্য** অস্কৃত। " भधनमञ्ज करम करम (ज्याजियाँ इ. · " এ ভবদ कल इरला स्धू उरमामत।

(मंक्ति। (१३ मर्ग) " हरन नाहि मुक्टि जात हिन्सू वामात्र, " ठिखांगठी जात कर्छ मिछना जामात्र।' অবতরি ধীরি ধীরি সে গিরি মোছন, আপন বাসায় ধীর করিল গমন।

ভূতীয় সগ্ৰ

Loveliness

Needs not the foreign aid of ornament, But is, when unadorn'd, adorn'd the most. Thoughtless of beauty she was Beauty's self.

TEUMSON

বামা- মুখ - বিনিঃদৃত - বাক্য - মধুময়-य भाठकङ्ग मत्काध ना छनि मि पश्मार्थः कशः नहक्रत। বামা - মুখ - বিনিঃস্ত মধুর थित्र नरश क जूनरम ? नरहे भिष्ठिकञ्चल (म ত্র আচতি না করিল, ক্ষম অপরাধ। कतिएक मांच मरन इस माध विन जामि इति कथा कत्र প্রেমিক না জানে কভু প্রেমের विरम्भ यनि ना इग्र। विष्कृष-ज्यन्त किंदूकर्ग मट्ट किंग विदेश ध्वन। রক্ষিতে প্রেম-জীবন দেহ সভ্যন্তরে বিচ্ছেদ উষ্তা অতি প্রয়োজন করে। , बंधिटल खुत विकास हिमान उर्धि-वेक अत्मांग कतित्न **उभकात कटूत यथा; ध्यनम - विका**रत **ওয়ধি-তাপ প্রেম প্রাণাধা**রে

दक्ति विजीत नाहें शांठके उपनि, निरम्हमार्ड जेक जान श्रेक्य अमेनी। जारे रह लाठिक भेग कुवनरमाहिनी याहिन कांथि जस्ता जान्मनाहिनी। त्याहिनी - वर्षन-विनिः मुख वांकास्था পিয়ে পারছর এবে কৌতৃহল কুবা। निजारमंत्री उाकि (इशा माहिनी-माहन 'वाशन बाबाटन धनी कतिल गमन। শ্যা ভাষি মেনিনী উঠিব দলা করি, कां कारह बाहि (मशि हिस्डि) यमती। वास्टित जानिया मार्थ अवि-सन्ति-जान (गाल्डिया अंड्रह हाक महीकश-डाल। জনে জনে জিজানিল মোহন বারতা, অপ্রত্তে নাথের তত্ত্ব ছবি ব্যাকুলত।। গত রক্ষনীর কথা কহি প্রজানে आंकृत इत्नां स्मती जावि गर्देन गरन। भद्दारकानाचन পড़ि भना थून मास्य, (यार्क्नी क्षम् एत (यन नक्ष दश्न नाका) भूरकामिशास्त रिक्ट याचे **भार**पण **उ**द्य কেহ তুরা করি ধার সরিহিত সরে। क्ट यात्र मार्क इति दक्क आद्यानप्रदेश. কেছ না পাৰ্ক্ত উত্ত আৰু কোন ভাবেন वडा वथा प्राष्ट्रतक प्रक्रिविधि दिल, भूबनामिग्रव छाङ्। अवव व्यवस्थित। काम भारत कर उन्न नार्तिन करिएऊ, বাজিল বজের সম প্রবাসি - চিতে।

ं भा गांश वान साहिनी इहेन। हैक्छिंड, क्षानाहत मर्काण्य भग्न लिमिछ। গানি পাথা আনি বারি সহচরী তার, शक्रमिल वार्ति मिल वम्स डांशांत । मन्नी फिल इतना मरका वहन योशीएन, নয়ন আসারে মোহিনীর বক্ষ ভাসে। 'हा नाव' विनय्नां धनी कत्राय क्रम् ग. क পার্শ্বতী জন-হদি করি বিদারণ। " ওহে প্রাণনাথ ফেলি কোথা গেলে বল, . " তোমা বিনা অশ্বকার নেহারি সকল। ''क्तग्रगंगरन कृषि मच्यूर्ग हस्स्माः "মতুজ মাঝারে তব নাছিক উপম।। ' এ ছদি-আকাশ করি জীঘারে জাক্তর, ''অন্তমিত কোখা হলে হয়ে সঞ্সার। " কি দোষ পাইয়া নাথ হয়ে অস্বয়, · অহা দেশ উজ্জ্বনিতে তা**জি** এ হাদর ^{भी} कतिरम आहान वमः। उन क्र्यूमिनी "मध करन महतानद्व इहेबा मानिनी ्रुहा ভाবিলে একুবার ! তব অদর্শনে ! " আছি যে এখন প্লাণে তাই ভাবি মনে। " ওরে রে নিষ্ঠ্র প্রাণ, বিদি নিদাকগ ' কি স্তব্যে গঠিল তোৱে ? লৌহাপেকা বুল * কঠিন ত কভু নয় সৈ ছবা স্কল, " হতো না পথাবদিত শত চিরে বল " গুছলে কি দশ্ধ হৃদি ? ডাই ভাবি মনে। া দহাগার খুনাময় তোমার বিহনে।

े" ७८२ ७ । शाम, जूमि (थारमतः मांगन "তব প্রেমাধীন, আমি কুড়াও অন্তর " अक्वांत्र (स्था सिद्धा । अहे सम शार्म " आहित्न भंग्रन कृति; क्यान क्षारम " রহিবে বল ছে নাথ, কে সেরা ক্রিবে " দাসী ত্ৰুব হেখা পড়ি। কেবা খাছা দিবে " ক্ষুদ্ধিত হইলে তুমি করিয়া যতন? " হলে ভ্যাভুর, বল, কে দিবে জীবন ? " কোমল শ্যায় কান্ত করিলে শ্যন, " না হতো তব্ নয়নে নিমা আকর্ষণ। " मामां अस्यात्र अत्य कत्रिश भत्रन " कतिए इहरत नाथ यामिनी यालन। 'প্প্রবাসে, বস্তি কট্ট কত সংজ্ঞাটন " প্ৰাসে আছিল যেই জানে সেই জন। " (इन (य প্রবাসকেশ ওছে প্রেমময়, "তব হুকোমল অল কেমনে বা সয়। " ওরে রে দশ্ব লোচন, ডোর প্রীতিকর "প্ৰেমপূৰ্ব ক্ৰবা যেটী ছইল অন্তর। " যার স্থকোমল কান্তি করি সন্ধর্মন " इंडिम् श्रक्त उरे काथा (महे ऊने ? "कमनिनी मुझ मिश् यञ्ज कविशेश " দেয়রে উপমা তোর, তার নিদর্শন, "পদাশ পদ্মশোচন কহে শীতাৰ্বে,ূ ''कप्रनिनी मम् इरे जानिश्च जसदा। "কিন্ত কোথ। ভোর নাথ বল্ছর আমারে, " হবি বিক্সিত প্রাতে ছেরিয়া বাহারে।

"মম প্রাণনাথ যেরে তৌর দিনমণি, " অন্তমিতে সেই মণি পুই-রে অমরি "না হলি কেন মুদিত ় ছলে অঞ্জল, "নিৰ্গলিছে বটে তোর বল অন্বৰ্গন। " ছবি শুক্ক বলি তাই দুমিছা দোষ তোর, ''তবে কেন দিই আমি। উচিত না মোর "কটু ৰাক্য ভোৱে বলা, তুই রে যখন, " শুকাবার আশে এত রস বিসর্জন "করিছ[্]তো অঙ্গ হতে। অরে রে জবণ, " अवन किंद्रिक (मरे मधुद्र कहन " পাবি আর কোগা বল । সেই শিক্ষর, "জাবণে বঞ্চিত হয়ে রবি নিরন্তর " किमरम वन् ता पूरे ? इ.७ ता विधित "विषाक वाका विभिन्न मह ७ माई।ह " তোর ছারে প্রবেশিলে ছইবে নিক্ষল, "অক্স নর বাক্য ভোর যেমন গরন। "**ও**রে বাহনতা দয় ধ্নায় নুঠিত "রহিবি রে কত কাল ! যাছার আঞ্জিত ^দীন ভোরা কোথা বল সেই ভক্বর p " আজ্ঞর করিয়া কুঠ যার নিরভর "রহিতে ছাই অন্তরে? দেই তক তব "হতাশ পৰ্নবেশে ৰহিনা বিপ্লৰ " पढ़ेशिंग चूत्रहरः; श्टेंग विश्वपूर्ण " छेड़िना थाइ अ त्वरम ध्वनारम अकृत। " रूरे नजा अगरात्र भड़िया अथात्न, " তোর হংখ দেখি কেবা না কাঁদিৰে প্রাণে

⁻ (त अ**ण धाउा**जगन जाटर भौतेत्र "হইয়াই তোৱা লন, আন্ত অগত " मण जर्माहरू उनरे बानमान जन " कमिन बहिरि वस् कांश सक सम ! " जाध विना अ अवादिक मम स्थ शाक, " यम जाथ जर्मनार्थ जिमा त जर्कान। " अरमां निद्धाः, वन् छात्र क्षमन अ बीजि - গত নিশি তুই কেন বাড়ায়ে শীৱিতি "भम जांबि छाजियादा कतिनि विलय । " হরিবার তরে কিলো মোর অবলয় গ " অন্ত দিন তত্ত্ব কীণ প্রতাবে পলাও " आक्वानित्न धकवात्र किति माहि हा छ। "गंठ केमा मिए भंगा आत्रोत समरत. "वरमहिनि हरक यन करनोका मा कराः * কি করিছি অপরাধ বল তোর জামি, ^ হরিতে জীবিতেশরে হলি অতাগাদী। " বটে লো বটে লো তোর বন্ধ অপরাধ করিয়াছি আমি যবে মিটাইয়া সাধ " आबकास मान मिनि कति क्वांगतन " করিডাম দূর তোরে ছতে আ নরম। "তাই বুন্ধি তুই এলো দিতে তারি শোধ, " रिनिहिन जैं। वि'गेरत कति मंदा काथ। " (त मकः मध कमग्रे श्नकः विन छाएतः " तक्ति। कनिन क्षा आन्देनि काएकः। ' गित्राहिनि दिशे रंटे नगुर्देन कारन,

" পরার্ভ কেন ছলি াপড়ি মোছজালে?

"দগ্ধ দেখে পুনঃ কেন স্থানিতে আসিলি?' " वियाम विरय महुद्र चुनिः स्पर्मने किमिनि।" जार्क्म कतिम वह अक्रां त्याहिनी, অঞ্ধারে বক্ষবাস তিতিলা কামিনী। गत्नात्रमा नाशी अक अम्ली स्नीमा, शागमिश माहिनीत वह श्रावामिन।। माख्या मिल पाहिनीत मध पाह गिक्षनित्न मत्नात्राय मध किमिर्गाट्य বিগুণিত প্রজ্ঞানিত শোকততাশন, যথা দৰীভূত শুক্তি পাইলে সিঞ্চন শীর উত্তপ্ত হইয়। হয় চূর্বে পরিণত, ' माहिमी ककान ज्ञान हुन (नहे मछ। শোকসিফু বেগে মনে হলে উচ্ছলিত, প্ৰবোধ জাঙাল কোথা থাকে বল স্থিত। হুংধ বিশুণিত করে অকালে সাত্রনা, শোকাবেগ শান্ত হয় আপনি আঁপনা। তारे मत्नातमा सङ्ग इरेन विकन, করিতে সাস্ত্রনা মোহিনীর অঞ্জল বহিল দিঞ্জ বেগে। অঞ্চধারা শত, মোহিনী কপোন দেলে বহে অবিরত। मिनम ब्राइक्नी धनी क्षित्र दिशामन, লোহিত লেচিনম্ম না সরে বচন। আহার বিহার স্থাে ইইয়া বজিত, করিল হুন্দরী প্রায় সপ্তাহ অভীত। দিন দিন তত্ত্ব কীণ ভাৰি ভাৰি ধনী, शृतिमार्छ भागभन्न क्रममः (यमनि।

किया सामनाजी मधा कवि जीक्क कर्दक करम करम स्वा शैनि यह कह छति। (माहिनी कांगनकां सामनाकी, मंग, হতাশ অনুন অন্তে তাহাতে বিষয় . কেননা করিবে ক্ষীণা সেই স্থাচন क्तिना इरेट धनी मलिन दमना। श्रीजन त्म यहन कति मन्दर्भन, इरेन नियाम मत्न सर्वाहरू **मिवानिश गत्नात्रमा (माहिनी जनन,** রহিত ছঃথে মগনা প্রবোধ কারণ। रेश्या नारम मरहोयम कान चुक्तिक প্রয়োগ করিল যাহা অসাধা সাধক। বিচ্ছেদ বিষম রোগ ক্রমে উপশম, ·कममंश विमुक्त धनी यक्तां विवस। धकना प्यांकिनी मरनात्रमा कंत्र धित, কছিল প্রাণি স্থীরে স্বিন্য করি। " (मश, महे, ध्वाननाथ श्वात्र धक मान, " তাজি যোৱে শোকনীরে গেলেন প্রবাস। " अम स्थान याहे आगमाथ श्रूरणाचारम " क्रिटि गैडन मिश्र मस्त्रित आर्ग। " সধার কর রেপিত ছেরি তক্বর, " জুড়াবে নয়ন সই জুড়াবেঁ অস্তর। "যত পুষ্পতক আছে সধার বিহনে, " শুক-প্রাণ নিঃসন্দেহ ব্যতীত সিঞ্চন। "অতি আদরের ধন তাহারা নাথের, " मिलल निक्षन विना (बीटक निमार्थन

" मितिदव जीवत्न जादा ; विन जारे गरे, "अंखः श्रुद्धानगरन हम में छ इहे बहे "। वज रिन (मार्ट अर्गिन श्रूरणोष्ट्रारन, উন্থান নেহাকে দোঁহে উৎস্থক বয়ানে। দ্বীভূত দেহ আর সম্ভপ্ত জীবন. সম্ভোষিতে পুজেপান্তান হয় গো যেমন कि खवा आहर जुबान वल इस मन। छेशनित्म स्भाक्तिक्रू इत्र नियाद्वर। माहिनी-मानतम किन्छ इति विश्रतीछ, নেহারি উন্তান ধনী শেকে বিমোহিত ! माइन-मरकाउ-कथा ुडिठ मनुकारमा, আকুল করিল হদি; অঞ্নীরে ডানে হাকামৰ বন্ধ তার; গদ গদ ডাবে जार्शन आग मशीदा व तर्श महारम। " আহা মরি মরি সই নাথের বিহনে " শোভাত্রই ও উদ্ধান দেশগ্রো লোচনে। "यथा शृहकार्यो यनि मह शूतकन, 'গৃহয়ার ৰুদ্ধ করি কোখাও গমন " করে ওলে। প্রাণসই মাস হই তরে, " হয়ে প্রজাগত হেরে বাুটা অভান্তরে " कउरे आहिया अया। यथा पृक्तामन ' " आहिन ना किছू मांव जुशांत्र श्रामन "द्रमद हिक्क ज्म ; क्षिण जन्न, " जिमित्र। वनजु उक कके तमत्र मटन। "शृह मृत्यीन चल, शृह मंशा यक, "পরিছর পরিষ্ঠত হয় তে

" जानकनात्र जात नत्रनकछक; " महरू शृरक कार्या की वा मन महा " बनपूर गाँग करन लाखांक काउ, " নাৰখ্য এ উদ্যান আমার তেয়তি। " जनमूक बाँगे रहति स्य छात छेनत्र, " म जार थात्रश नहे कदत्र अ क्रमत्र '' হেরিয়া এ পুল্পোদ্যান। ছদয় বিদরে, " হেরি **শোভাষয়** তক শুক্ক জনাদরে। " नृर्त्तामम मधावजी भंत्रगी छेशद्य, " জৰিয়া ৰৰজ-তৰু 'নয়ন কাতৱে। " যে পথ থাকিত সই কতু পরিফার, " শোভাহীন এবেদেধ তাহার আকার। "জ্মিয়া বনজ্জ-তক চানকা উপরে, " চाक किमनत्र की हे काट है स्वास्त्र। "প্ৰাণনাথ বৰ্তমানে ফলে এ উন্থান, " চিত্ৰকর ছবি সম ছইত লো জ্ঞান। "মম এপ্রেমময় আর ভূতারামধন, " করিত এ উদ্থানের কডই যতন। " (मथ मा (मथ, मखनि, मना माधवीत, " সহকার পাধাজ্য করেছে সমীর। "করি বিলোকন সই মাধবীর 🛋, " মনে হেন ভাৰ মোর আসিল সহসা " (यन ध्यानकांच इः (य रहेश कांडत), " ध्नात्र सुधिज जारह कनि इः १ कहा। 🎄 " गंज मधूमारम यटन माधनी अन्दे" " कदिल मन असून, कजरे छे९नन

" প্রকাশ করিল নাখ; মম কর ধরি " कड़ित्मन (अभगः। :-- " तिथ (म) स्मादि " गांधनी धक्क कड श्रुष्ट धनवरन, " 'নাতিনী জামাই তব প্ৰথত জীবনে " 'क्तिटल्ड मधूभान माधनी कनरम, "'অই দেখ বিশ্বুমী সুধীত উভয়ে। " 'কর অন্থরোধ থিয়ে তোমায় স্থাই, "'ভানাক সন্দীত এক নাতিনী জামাই'। '' এমন সময় অলি তাজিয়া প্ৰস্থ " পশিল অপর পুলে করি গুন গুন। " बारान कहिन महे शामिया उथन, " 'নাতিনী জাদাই গীত কর লো অবণ '। " এত वनि मम गंना बति (अममत " कहित्नन भूकी कथ। श्रकूत ऋन्य। " 'সহকার সহ মাধবীর পরিণয় " 'দিলাম যবে লো প্রিয়ে আমরা উভয় " কৈত আনন্দের দিন আছিল সে দিন্ "'মাধৰী প্ৰথমে যেন কত ইচ্ছাহীন "'বেন্ডিতে নাথের অল; সংযোগ ছবার " 'कदिनिञ् मात्रा द्वारि, श्रीन श्नकाव " 'মাধৰী পড়িল লাজে হয়ে নতশিরা, "'ध्यमस्राव जंगरभरित गैंधिस स्थीता। " 'मिन मिन रहित शेरत मांधवी जाशिन, " 'জাপটি ধরেছে অন্ধ, ভুজন যেমনি " 'मांचा जाशकिता बाटक यूटन माधा कांत्र, " 'माधवी छाटकर खरन जम महकात।

" 'क्मि उ अक मिन अ विधूर्यमिन, " 'লাছকা আছিলে অতি মাধৰী বেমনি। " 'মাধবীর মত আরো কত স্থলেচিমা, " 'লাজুকা প্রথমে প্রিয়ে রছেনা বলনা। " পেতি অন্ধ পরশনে পার গজা কত, " 'বড় হলে কোথা তার লক্ষা রহে তত। "'প্रথম मिनन काल नात्री ভরে জড়, " 'কোখা রহে দেই ভয় নারী হলে বড়। "'निष मम (यह ज्ञवा मध्यश्रम ज्ञान। " 'विंमित्न योवनद्रम स्थाद मगान।' " এত বলি প্রেমময় চুম্বিলা অধর, " স্বা হইলে সই হৃদি জ্বজ্র। " ऋथार्थ कथा जाँद मानम गंगरन, " इहेरन छेनत्र मम कति मरन मरन " এখনি এ मक्ष প্রাণ তাজিলো জীবনে, " খুনাময় এ সংসার স্থার বিহনে। " অই যে লতাটি সই সমুখে তোমার, "পরিমলপূর্ণ পুষ্পপ্রস্থা, গন্ধ ভার ''कूञ्चम मगर मगीद्रा मध्यतित्न " जात्माम करत उमान. आन डेडालितन " তখনি গীতল হয় লইলে আছাণ, " आनमगात्रिनी कृत्त आनम क्षमान। " मानजी छेरात नाम स्वतना थान मरे, '' নেহারে উহারে আদি চিন্তিছি কতই। " সম্পূর্ণ হুধাংশু শোডে শরতে একদা, " কুছুম স্থরতি দানতীর প্রীতিপ্রদা

" अश्विदिष्ट्रे जीश मिथि ; जामि (ध्येममग्र, " हिंदि भनागिनि कति आनम कपन " विजिल्लाम शिक्षा आहे महत्रावद उटि, " दाँ हिव यानम् आर्ण तरव क्रिनिश्टे , "মম জীবিতেশ কথা জিনিয়। সংখারে, " रेम मोजागा कथा कि ला भावि जूनिवास। " कहित्वन नार्थ भारत, 'मिथता सुनित, " 'কিবা শোভাময় তাজিকার বিভাবরী। " 'मञ्जूर्व भर उ भनी भाक्ति गंगरन, " 'भग्न कीरन ज़श्च (गांडा नित्रीकर्त। '' 'যতবার হেরি প্রিয়ে পুর্ব চন্দ্রয়ারে, ''স্বধারাশি এ শরীরে বর্ষে ততবারে। " এরপের উপমান জগতে বিরল " 'ধঁয়ান্থিত দৌন্দর্যোর উপমার স্থল " 'অইরে অধরমণি; আছে এ ভূবনে " 'একটা সাম্প্রী **স্থু** যাহারে নয়নে " 'হেরি সমস্থ বোধ হয় লে। অস্তরে, " '(সম কি অধিক হুখ হুরসিক নুরে " '(मथूक विष्ठांति भरन); वन वतानान " 'বল দেখি কোন জ্ব্য় সে বা এ ভূবনে।' " जानि कहिलाम ना्ध दैल । कराटज, " কোন জব্য আহে হেন উপদেয় হতে % भातित्व स्थारण मह तिथ ना मझतन । " कहितन नांध शांति अधिश वहता " 'मिथित यमि लां पूमि छला आत्निवृत्ति, " 'म मिन्धातानि हत्क किति गृहह धृति

" 'कटब रमस्टा मर्थन, भाषेत्व रमसिराङ,

" 'अहे कि राज्य भाषि (क्यांना व्यक्ति हिंदू ।'

"চিবুক ধারণ করি নাথ বামেডরে,

" কহিলেন হাসি হাসি সহাস্ত অধরে।

" ইহাপেকা রমণীর সোজাগ্য গোরৰ,

" कि আছে सगंद्ध मंथि, श्रेष्ट्र विख्व

' जूनमा इस मा (कारमा देशांद निकाके,

" कहित्उहि महे जामि देश व्यक्त गरहे।

"'কিবা শেশভাষয় আজিকার বিভাষরী।'

" কছিলেন নাথ পুনঃ, ' প্রাকৃতি কুন্দরী

"'কি শোভা ধারণ প্রৈয়ে করেছে বল না,

" 'গগৰ প্ৰাঙ্গৰ কচি দেখৰ। দেখৰা।

" 'मज्लुन मित्रमन मीनिया रहत.

" 'হুধাংশু শোভিছে তায় জিনিয়া কাঞ্চন।

" 'কেমুদী স্থজ-বাস করি পরিধাম,

" 'প্রকৃতি সাজিদ কিবা জুড়ার পরাণ।

" 'अम्मात्म उक्षाक त्म वाम किंद्रार्ग,

" 'अभीम् आनम स्त्र निहिष नहति।

'' 'মালতী প্রস্থানে পড়ি কৌমুদীর রাশি,

" 'डेब्ब्रनिट्ड व डेब्ब्राम श्राडिका श्रकानि।

" 'मानजी क्ट्रंग माक्रा कदिएग हज्ञम,

" 'छल ब्लिएंग्र मनोनरम कविच धाकुम

" 'ऋकिक्ष माना जांत्र और मारहे विन,

" 'त्रस्मे करत्रदंह मित्रं चास्त्रि भूनं भनी। '

" তুলিত্ আঁচল ভারি মানতীয় কুল,

' দৌরতে প্রযোগ তত্ত জীবন আরুগ

" गौथिनां प ठिक्तिश मान्। हुरे जहन, " कड़िलम नार्थ शांति वारित्र उहता। "'ছের ছৈর ইন্মুধি ছার কি শ্বনর, " 'काका अ माजित छान हात्र मत्नाहत। '' 'कवड़ी जुवन योगा उव मा ऋमति, " 'কর লো অম সার্থক কেশপাশে পরি।' " এত বলি নাথ মম কুন্তল বেঠিয়া " मानजीत माना माद्य मिना श्वाकेश। "কছিলেৰ প্ৰভু হাসি 'দেখ চন্দ্ৰাননি ' আছা মরি মরি মালা সাজিল কেমনি। " 'हिकूद रक्षन छव यन - धरा - काँ म, " 'मानजीत मात्न जादर बनार्न अमान। "'क्रिक्स य ७७. जम इहेन मक्त ''নির্ধিয়া হলে। মম নরন শীতল " थकानिता अस्तार्ग कतिना ह्यन, " कपि (कैट्र डिटर्ड महे क्हेंटन न्यूबर्ग। কহিতে হঃখের কথা শৌকের দাগর উপদিরা উঠিন রে কম্পিত অধর। नियोग श्वम (क्या मध्यस्य क्रिन, ल्गारकत्र मागत जारे छेथनि छेति। উথनিয়া শোকসিছু बंद्रिन नश्रास, मत्नात्रमा व जकरण श्रृहान जीवरन। मरनाजमा भनि शरत साहिनीत कत, কহিল সজল সাঁধি হঃধিত অস্তর। अन्छन मरनाइआ-कथा **छनि धा**ननहे, "रेण्डा इत्र गटन गटन कर जनमरे।

-

" जब इःच महन बरम कंछ इःच नहें, " किश्वादा मिर्दे इः य पूर्व भाति करें।" " तमनीत किया जाटह धार्गनाथ वंदे ? " मत्नं इत्न ंडव कथा कर्त अत इरे। ं '' ५ इश्रंबर जनगान करत जनश्रहे, ' আসিবে লো তৰ নাৰ দিন কত বই। " मथात मरकांख कथा कहिएक मा महे, " मिरा अयमाम इतना तम द्रममरे। " जरे तथ जलाइतं इत किनमति, " अञ्च भाषाम नीव मिकिएव कथि। " जगवा कि अरहाजन मिकिवादह नीत, " मि कार्या माधिन उर्व मनिन औषित।" ' শুনিয়া স্থীর কথা শোকসম্বরণ कतियां स्मिहिनी धनी कहिन उथन। " সধার সংক্রাম্ভ কথা কৃছিতে লো সই, " किছू ना जाहिल गरन आश्रमाथ वरे। " अत्मा मरे जानवात्म कवि जम मान, " मिन मिक्स उक श्रेतः शीरव धांग।" "এতবলি इरेजरन नरेग्रा कनम, मिकिएफ, नानिना नीट क्षत्र महत्र। शानाम उक्त उत्न (बाहिनी इकती, मिकिएउटह नीत ऋष धीवा दिंगे कति। मत्नात्रमा (हम काला कहिन। महावि, माहिमीत मृत्य हाहि डेव्सूक ध्वकानि । " अरे मत्या जन गटक शामानि बद्रन, " मारीम (क्यरनं मदे नग्रनत्वनः "

त्यादिनी अक्रथा छन् जूनि निक लित, মনোরমা প্রতি চাহিলেক সাঁথি ছির। নাহিক,গোলাপী আর চম্পক বর্ণ, निवस्त उथि मानीवमात नजन। शांजि करक गरैनांत्रमा साहिनीत थांजि, ''নিরখিড়ু প্রাণসই আশ্চর্যা লে' অভি। " कत्रि यदन खीन। (इंडे क्षमानिक नीत्र "তৰ গতে নির্থিত্ব বর্ণ গোলাপীর। " সে বর্ণ আর দেখি না একি হলো জ্বাদা, " (मर्गिष्टिन मिर्म हत्क कर्व इर्त काना।" কৰি কয় মনোরমু নাহি তব ভয়, गामानिर पिथ छ्या अनुब रूपर। यत्व (मा (माहिनी धनी मिकिन जीदन, একটা গোলাপ পুষ্প উজ্জুল বরণ माहिनीत (गीत-गए अठिविध पड़ि, গোলাশীর বর্ণ ধরে ছিল আছা মরি। মোহিনীর বর্ণ টুকু এমান নির্মল, প্রতিকৃতি পদার্থের পড়ারে সকল। मत्नात्रमा-कथा अनि त्माहिनी चुन्नती, कटर कथा शामि शामि मधी कत्र धति। " " अत्मा आगमहे उन वर्ग (गामाभीत, "তাই দেও দেই বৰ্তোমার স্থীর। " গণ্ডেতে গোলাপী বৰ্গ কোথা পাব সই, " পাণ্ডু বৰ্ণ ভাবি নাথে দেখ রস্মই।" जथिं गरनातमा मधीत कथात्र, না সরে কুলনে বাক যেন মৃতাপ্রায়।

उक्त्यून निरंक नीत शत इंदेवन नरेश कनग करक वन कारिन। त्रजनी जागंडा जाता, नक्ष र रहा, ইন্ছাহীনা প্রবেশিল বাটীতে উভয়। जन जात कर निम बरनातमा नर, মোহিনী আকুদা অতি পতির তঃসহ विकार रखनामतन, धामक मीविटंड, অতীৰ উৎস্ক্ৰমনা কৌছুৰুল চৈতে গাত ধৌত করিবারে করিলা মানস, যথা প্রাণপতি তার রক্তমী দিবস রহিতেন প্রায় বসি, হেন্দ্রিবারে শোডা, তড়াগ সলিলে প্রকৃতির মনোলোডা। প্রিয়জন প্রিয়ন্থান হয় যে সকল. প্রণায়নী পকে তাহা যেন পর্গত্তন। त्याहिनी मानम जारे मीर्वका मर्गत्न, रला स्टब्स्न जि. मधुद वहरून কহিলেক প্রাণস্থি মনোর্মা প্রতি, " দেখ লে। দেখ সজনি আমার ছুর্গতি " নাথের বিরহে আজি; প্রাণ উচাটন " হইতেছে কেন এত স্থার কারণ। " नरेजा चंका - जीरमण छन इरेकरम, " (अममत अग्रमान मीर्विका मर्गत्म, " हम प्रदेखान यांदे यपि (मा क्षांत्र "মম সন্তাপিত প্ৰাণ, ৰদ না আমায় " ইছা ভিন্ন এ বোগের কি আছে উপার, " সামী ছাড়া কামিনীর কি বিষম দার।

"পতিৱৰ্তা কামিনীর পতির কারণ, " যেমূন আকুলমন হয় কি তেমন, "পতির' কভু লো সই রমণীর তরে, "ইহার কারণ্ সধি বুঝেছি অন্তরে। " পৃতি দেখা কতরপে আপনার মন, " নিযুক্ত রাখিতে কম সদা সর্বাকণ। "কড়ু অধায়ন করি কড়ু বা প্রবণ, " কভু প্রিরবন্ধু সনে করি আলাপন, "কভু নানা দেশ করি সহরে জমণ, " অপুর্ব্ব প্রকৃতিশোস্তা করি সক্ষর্শন, "ক্ছু বা কাৰাকুন্ম করিয়া গ্রন্থ "সক্ষম করিতে স্ই সময় হরণ। " প্র্যুষ সহ পীরিতি রমণীর কাজ, " রমণীর সূর্বকার্যো পীরিতি বিরাজ। "পীরিভি-পথ ব্যতীত রমণীর মন, " जन्न नर्भ कडू मिरे करत न। जम्म। " হেন বে পীরিতি-পরে পড়িলে কণ্টক, "দেহ-কারাগারে হ'য়ে হুদয় আটক " इष्केष् करत यम शिक्षत्र-विक्क, " প্ৰাণ হাঁপাইয়া উঠে বিনা পতিসন্। " তুমি লো প্রাণের সই তাইলো ভোমার, " थूनि यन मिथारेडि अनुग्रकानाता।" ্ৰত বলি ছই জনে গাত ধৌত তরে, हिनिना विकार्त त्मरे मत्नारत गरत। विमन-मृतिल-भून त्मरे महावत्, ण्नण्म करत नीत (शरत नात्र्कते।

मिर मा नियायकान जुरू डार्जि सन. थत् । धतः कतिरछाष्ट् । यंज मः पाउन । . जशकारक अतः भाषा किया मरनाहत, क्रमदम वर्तन आधि आधि भीन नह। स्पीर्व नक्ती लारे नामन निर्मन, **प्रकृत प्रत्राचित्र इरेट्स ठक्ष**न कि जनुका जन्ही करत व्य भारत. **उत्त तम्य स्थीतन क्यम स्म।** इरम इश्मी मनसूर्य (महा मखद्र), त्रकांकि त तम माधुती क्लाब जीवनं। कानिया बद्दन मीद्र इश्माखनी-(मांका, তভাগ পড়েছে যেন ছার মনোলোভা। किइ। जान इम्र यन कान कामहिनी, जामरत शाबरक धनी क्रमा माबिनी। मामिनी हक्षमा जांड स्मर्था करंग करंग इश्मालाणी मह जुना माजिएन क्यान। इश्त्रात्वानी कात्रमादन शादत त्र्यामाधिनी. मन्त इहेटन करन श्रम्ब मामिनी। 'बर्बा: यद्या अक अक्षी क्यनिनीम्ल, कतिरङ्ख्य मृडा नीदत मधीरत हथन। मत्या मत्या शांतिविष इत्त छे०त्कर्णन भव्रभार्त अ**क्ष्रिक किया या**धूती मात्रव कविरक्षक कति कति । मत्न कान कत्र, शबादांश मणि (यस शिवाती-काम **डेकविका दिशादि। अदैक क्यनिर्वी** অৰুৰা মাণিকা তাম ধরি ছহাঁদিনী

कहिटल नुजी नीति कामन भगात्र, মনুণ চ্ৰিণ শ্বা। শোডে চাৰ ভার। नाना कां ज भीन नीत्र जानत्म माजिया সম্ভরিছে ব্রি বুরি সদলে বেটিরা। नाहि कारन (भाक इःश मना ऋथ मरन, नित्रथि তাদেরি एथ क्णांत नगरन। गर्धा मर्धा वाति भेरत थरमारम जाभिता, मरनाइत भक्ष करत शुक्क चुताहेशा। গোলাকৃতি জনবেখা তাছাতে উদ্ভূত, দারি সারি ভাসি যার সৌন্দর্যা অন্তত। চারি তীরে পাড় উচ্চ অতি মনোছর, श्रामन नदीन पृद्धा आहु उस्तता उड्रशति विष्ठत्रग करत गांखीनन, নির্ধি উত্তপ্ত প্রাণ হয় সুশীতল। পাড় সহ গাডীদল প্রতিকৃতি জনে পড়িয়া অপুর্বে শোডা; নয়নযুগলে कि जानम विख्रा मि मुना य करत. त्म जानम वर्तिवाद्य मक काम नद्र ? मद्यांवत मंत्रभीत हरे शारत ल्याटक, वकून भामभ खनी; जिन मधूरनारक थक्षदर अञ्चल जात अवगत्रक्रन, সেরিভে পুলক তত্ত জুড়ার জীবন। ইন্টকে নিৰ্মিত ঘাট অতি মনোহয়, . इहे शास्त्र त्नाटकं इति बाके जन्मत। मन ग्रम ममीत्रण वहि उद्गात्त्र, কিবা স্মধুর অর সমুখিত করে।

সোঁ পৰা হয় জাৱ কিবা ভাৰনিত, रीगाइसिकां कार्ट रहे तो निक्छ। চারি ধারে উচ্চ পাড় ভাছার উপরে, माना हाक उक्त रह किया लाखा करता. তকলেনী প্রতিবিদ্ধ পড়িয়া সরসে, कि अंजि अंगाम करक कि खीं जि मानाम। निर्देश केंग्रिका वर्गा की निया वर्गा. मत्रेशीस्त्र किया (भारक बद्रमद्रश्चन ! थक्ठि-च्रमती यन मद्या चार्गवरन, চিমার পুৰুষ লক্ষ্মত ৰাজ স্মিলনে. जारे श्रीविधात धनी धना मानाइत. मनमी चार्तीन धति धक्त जसन नित्रविद्य नछ रहत दिश जाशनात, त्म त्नांका नित्रवि मुख नट्ट मन कात १ िचत्र श्रूका इतिवादा त्वणं (यह, कि जाम्बर्ग इतित्यक नवमन मरे। (इ शांकि महामग्न मिया जयमात्म, कि अनुर्वाष्ट्रभ गत्म अन्तान धानाता। नगताकास्त्र यात्र इत कर्यक्त, তার পালে হেন স্থান, যেন স্বৰ্গতদ। প্ৰন-অক্তিও নগরীর রেণ্-রাশি, উদর পুরেছে ভার খাস সহ আসি। নাসারত হছগত্তে সম্পূর্ণ পুর্লিত, বেদ**জনে ংশরিন্**দ সম্পূর্ণ, প্রক্রিত। क्लिश्वि मान धूनि करदरह देख्ड, কতু প্ৰভু বিঠালাণে বরন লোহিত।

তার পকে হেন ছল কিনা জীতিকর ! यनि (इ डोड्रांब इंग्र कवित अवन । निया सर्नदर्शन चूनि जूनि श्रेनजन, পরিহরি অর্বচিতা আর রিপুন্ধ। वारमजरत मित्रा गढ वांचा चार विन, হেরিতে कि প্রীতিকর প্রকৃতিনরপদী। मार्छ ७-मञ्चनानि र शित्र ममीवनं, निमास छेउछ अन कृतिक जीरेन; जानि इत्हें महत्रावत्त्र शांन करत्र मीत्र, শীতল করি শরীর সমীর হৃছির। मत्रभीत्र नीच शिदत मत्रीत्रे भीउन, किन करत मरकिष्टक महत्रावर्त्ते प्रमा कछ बूटि शतिमन वक्नथश्त, क्छू बर्द बद वरह उक्टनी अत्। क्छू मांबवीत धीना कतिता धारन, मरनत जारनरण इके कतरत हुवन। नाबीके अंकन्, ठाटन ककू वा नव्यहे. क्छू वा इत्व जवन मोतिना जानहे। अरे वाशीउटि जानि वास्ति इंस्सी, সহচরী' সহ তার, বিলোকন করি ध्यममेत्र खित्रक्न, / **हिंखाकून मरम**, मत्नाजमा थांछ धुनी मधून बहरन करिन जानन जीचि हैं- "करना आनजरे, "रेक्श व नजनी जीता नक्कन बरे। " अज़नीत" पूर्व शांफ कत विद्याकन, " अरे इतन ध्यममन कतिला इतग

" প্রাছ্ল অপরাত্র কাল বকুলের ভালে, " छेनशुंख निवस्टि मन क्षृहरण। " অপার আমুদ্র তাঁর লোডিত লোচন, " मिनमणि चार्छ यत कति गमन। " সভাবের শোভা হেরি গোধুলি সময়, ' जानमनीत्र जाञ्चन १८ठा तम कन्त्र। " मम महिशास महे द्रक्रनी गमग्र, ' গ্রক্ত- দুর্ণকীর্ত্তন করি প্রেমময় ' আৰম্পে তাঁহার আঁথি হতো বিকারিত. · এই সরদীর শোভা বর্ণন অভীত " क्टिटिन कृत्रश्री मम मिर्मान "হতো চরিভার্থ প্রাণশুনি তাহ কাণে।" সংখ্য সংক্রান্ত কথা কছিতে কলিতে, গাত ধৌত করি দোঁছে চলিলা ৰাটাতে। (इनकार्म (महे इंत्न शुक्त सुकार, একটা, মানিক সহ তার সহচর। रशम अक्ट्रेंट जिल्ला भिक्त मुहाउ, बिहिंगित्स (वृष्य क्य यहक्षमधि । शिक्ति पादिनी परनादमः इन्करन, रहीयायुक्ति श्रकरवत हुद्देल नगरम। নিচ্ছিয়া মেইছিনীত রূপ অভূপম. জায়ি ঝলসিয়া গেল, যেমন বিষম नहम बन्दम हान छेड्डामा नामिनी, विठिख कि बन गमि अभाव माहिमी . সে সমুজ্ব সাঁথিবর দের রে মাহিরা√ विभि भ अभूना भएन कि अवा या निर्देश

विकास शिविंग यात्र कहित कमरम, লে গ্ৰের উপমান নাছিক ভুবনে। भेयन कृषिত स्थि कान चृतिक्य, शांक्हानिका शृक्ष्टमम श्रद्धमा , इद्रमा माज़ात क्यां आलुनाता कर्मभाग, পিছন হইতে আছ না পায় প্ৰকাশ। पुरुंदमन जारकिया (यन कामविने। मधुर्थ वत्रवङ्गां क्रिमि क्रीमासिनी। নির্থিয়া পার্শ্বতে মনে জান হয়, काल कामधिनी शदा महिन्ती छेनश। कां हि भिंध चरका नी वाभित करती, খনপা**র্ঘে কন্দিরেখ**া যেন শোড়েছ মরি। । বদন শরদ বিরু[®] বিভ: প্রবেশিয়া লিয়া দী**মন্তের ছু**র যেন উজ্লিয়া^ই হ্রথানি নীরদণার্থ গোড। চমৎকার, न। अन्दम कात्र अधिक्षांत्र कहि छोत्। হুন্দর কপালখানি মহুশ্ম - শোডা, বিশু বি**শু জেদ শোডে তা**তি মনোলোডা। यन भेजमन महन अव्यक्तिय तथ्र मसर्भरम रम रमास्या अनुष् इत्र इत्र । স্বাস্তম ভুক চাক দিজীয়ার শশী, लष्डात्र स्टार्ट् कान म जनत्व भनि। •তার তলে ঝলঘলে ইুগাল লোচন, अमिन इर् ा य शहरण अदर्। **एल एन जातामत्र भवाभार्य मिन,** খেলিতৈছে লজ্জা তথি প্রেমানন্দে পশি।

ु क्रक् गंबिङ जीवि जह ही वाब, বিচুমিত চার তার বেন কাল কৰি, जाकर्रनी मुख्ति कि व्यं कहरत शहर. কেশৰে কৰিব আৰি ভাতুক স্থজন। ' (य जैंदना **ट्रबंक मृक्ति विश्वाला कतिन,** त्मरे जत्या देशातम्ब जम गठनिम, এ বিশ-সূজন-পাতা নাছিক সংশয়, পুৰুষ লোচন সৃষ্টি স্থচি জবাময়। दमनी-हृशक-मूच निकष्ठेश्व स्ता, भूकव-१७- लाउन शांत (मेरे क्**ल**। त्याहिनी हद्रभ यूग गठम च्याद्र, आंत्रक बतन किया अंकि मेटनाइत। मत्रांल गमाल यात हिल यात्र धनी, उझ लामाकिंड इह स्वित हसूमि। माहिमी युभड़ी वनि विशाउ जुलति, त्माहिनी काहमना खडू त्माहिनी स्मनी। करन रह পाठकजन बाहिनीय अभ ্বর্রিতে ফাইরা জামি করিত্ন কুরূপ। भारतिकः तथ **७८२ कोन्** विज्ञकन्न **हिज्ञिक क्रिंड क्या , यस अधीवक ?** কিছা কোন্ চিত্ৰকর পদ্ম বিকসিত, সক্ষা সাদৃশ্য ভার করিতে চিত্রিত ? চিত্রকরণদ্ব প্রকৃতিরপদ্মশানে रामारिकार र्धू बांज ऋषी मित्रधारन। তেমনি কৰি - যোহিমী সহদয় জুস, প্রকৃতি-মোহিনী ছানে লক্ষার ভাজনা।

আধ বিক্ষিত পদ্ম করি উত্তোলন, निष्क-कृत्व केंद्रो शांत्र विक अमर्गा, याप कर्रा तम तमीनार्गा इक व्यस्तान, मञ्जनश्राम कृत्य विव्रक्ति ध्वेमान। महुतां किनी साहिनी थि कि हा सहितथ मम करत इरला छात्र मोन्नर्या विक्रभा करन (इ शाठिक जन तम अपूना धन, অতীৰ বিৱল ভবে, প্ৰকৃতি মতন করি বিজনে বসিয়া ভুলি দিয়া তাব ত্রপানি গঠনিল অতি চমৎকার। व अरुवा नवनी किया निमनी मुङ्ग मिरे अरकामन अरवा भेदीं हैं गठन इंदेल गम्भन छात कति विरम्किन. চরিতার্থ হয় মরি নয়ন জীবন। নয়ন জীবন নাছি হবে চরিতার্থ? यगांव मश्मार्य मात्र (महे (म भन्धे। শিথিল ছইছে ধৈষা পাঠক তোমার, বৃত্তক্র এক ত্রবা নিরীক্ষণে ভার मांभूती तरहना ७७; यमि धार्मिकी उथाभि इस्ट इस्ट इस्ट आनंतिनी उर महिशादन (करना। तिश्रह भाष्ठिक, যদিও পূর্ণেত্ব তব নয়ুন-ছারক, रेंग धरमञ পाছে তব इस संशामत, রক্ষিতে তাই হে ঈশ স্থাংশু আদর ক্ৰাস্ত্ৰি গুণ দিয়া সৃজিদা ভাহায়, जमानिना अजिशाम मन्त्री विमात्र।

* जारे झाम-शबू-जङ्ग करन पांचवीन. जारे विकतिक नयं सीमयं अस्त ... করে বন্ধাকালে জেনো, তাই স্থাকর, কণপ্রভাকরে দেখা করেছে অন্তর। ं नाहि मात्र जाहे दि शांठक उद दलि, विन जब स्मा करक देशका यांत्र होना। जुवनत्यादिनी शाह उव महिधात, नवीनजा विवर्किका इस धरे जातन আমার ব্যাক্স চিত্ত: তাই অপাক্ষণ दिहरूव स्थारश्रम्थि जामात्र नहन अखद्रातः , कृषि हितिर्य भूनः यथन, ममानद्र जांच्यानित्व तम जम्मा धन। আয়ো দেখ ছে পাঠক ভোমার মোহিনী পাছে ঈ্যাধিতা হন হেরি এ কামিনী; পাছে ইবান্বিতা হন এরপ বর্ণনে, ত। इत्म राष्ट्र विशेष यामिनी यार्शन। তাই বলি হে পাঠক তাজি এ মোহিনী, তোবছে যতনে ধরি তোমার কামিনী। वन डाँद्र धति कद्र " काथात्र माहिनी नार्ग उर कार्ड खिस्त जानकमात्रिन।"

চতুর্থ সর্গ।

"Power at theo (Freedom) has launch'd His balts, and with his lightnings smitten theo; They could not quench the life thou has from heaven.".

Then shoutest to the nations who return Thy shoutings, while the pule approximation W. C. Bry to

কোধায় মোহন ? যদি পাঠক হজন, জিজ্ঞানা কর আমায়—কেব। জিজ্ঞান**ন** করিবে? কেবা পাঠক ? কেবা তাজি অ্ধা, দ্রো করে পরিত্ত কুথা? কাব্যহার স্বস্ত্রতি জীবনহারিণী, नव मानिशाद्य यथा लानकमातिनी। আন্তাণ যথনি লও जानम उथिन, ব্যাপিয়া দে পরিমল রহে এ অবনী। হেন কাব্যহারগন্ধ ভাজি কোন চিত, উত্তমাল প্ৰপীড়ক প্ৰস্ন-গ্ৰাহত कां वा हा बन का का का का का का का का वा का পিকস্বরে তার্জি কেবা প্রবণ অপিৰে দিরাজীত-স্বরে বল ? সম্ভেষিতে প্রাণ, माखना जाहरत এक ममा सुशानान करत यह स्थीवन, नमज नमज তিজনস্পানে তার বাসনা

रश्रत्थां जाति योनत्म। कांबाद्यांत यम माधित म कार्या (यन जिल्हाम मग। खतमा जामाद वहे—वह जामा-हाम, সহার করিয়া ভূথি কৃষ্ম ভয়াল ममाज मिन्नूत नीत्त मम अञ्चली, ভগ্ন, ভাসাত্ম সভয়ে, কত শত অরি আছে সে সিমুর নীরে: ধেষ ঝটিকার, धारम धारण (वर्ग वर्ष प्रमिवात। উত্তুম্ব তরম তাহে সতত উন্থিত, केश जर्भ, समञ्जात, नित्रीकर्भ छीछ । মন তাহে প্রয়তরী ভগ্ন কভকণ রহিতে সক্ষ বল । পলকে মগন इंदेरन त्म जनी शानि, यात्र कर्गभात, দীন আমি জানহীন। সে সিদ্ধ আকার कति विद्याकृत धति स्ति क्षि कच्छा उत्त , কত কৰ্ণার দক ভাষান সভয়ে নিজ নিজ এত্ত্রী হন ছাম্পান্দ। সে সিমু হইব পার? আমি ? কি আপদ . সমাজসিভুর পার আছে বটে মন श्र्वी-श्रुक्मात्र-कत्र इश्रेन श्रुटमाचन। পঁত্ছিতে তথি দক যদি কেছ হয়, विश्वमारस निदांशम निष्ठा जासाय। क्षिन केश कूछीत ध्वकानिया तन, ' বিশ্বান্ত করি তরী করে যে অচল। যাইব কেমনে তবে, হিনিব কেমনে (कान्षे स्थी-कर-भम-सान ? तजरन

মণ্ডিত অঁলার জেনে। নর ভবছিত, विषधत, विष त्रं श्रीशृष ' आक्दाकिउ। . কুন্থম কোমল সম নিরীকারণ জ্ঞান, शत्रभटन मञ्जाष्ट्र शावान मगाम। সম্ভাষণে কেই যেন বোধ স্থাসম आ्यानरम जुजनम गंतन विरम। ভাঁদাইত্ন অমৃত্রী সমাজ দাগরে, नेशां-नक-कटत यनि यात्र देश उद्य। পড়ে शिक्षा यनि इंशा स्थी निविधारम চরিতার্থ হবে আমি কেবা অপমানে ? কোথার মোহন ? যদি পাঠক ছজন জিজাসা কর **আমারে করছ** অব।। मारन कतिए वाम जनविद उति, প্রকৃতি-মোহন-রণ তারি ছদিপটে তথিকার মনোস্থা করিছে চিত্রিত, मथाद दरेन गठ कि कृहेम - हिउ, তথাপি নহিল তুঠ জাৰ্ম তাহার फेक्नीख यामना - निश्ना (देति वात्रवात সাগরের রূপ নিৰুপম। এক দিব जनवाद्ध साहन स्थीत कति मन लीम थक्ठि जनूर्स (अरम श्रीनेत्न माजारम, नित्रभिष्ट मिन्नूरभा छ। छ दिशा विमादत । निर्मग्न निर्माषकाम धीय अक म्यून, লড়িছে না তৰুপত্ত বজ্ঞগা অপেষ। नित्रीकर्ण उक-दांकि मत्न कान इत्र, নিশুর র্ছিছে ,তারা পেরে মহা ভর।

প্ৰন বহৈ বেমন শিকারী ছাপদ, पूर्वीषुठ कित्रविक्षा पृगं श्रीजिश्रम । প্রকৃতি - অন্দরী - মুখ করি নিগ্রীকণ, ज्यान इक आरङ् धनी छेट्यटम मगन। যেন কোন মহা যোর বিপদ আগত, धक्त मुधानि जारे विषशं अमछ। রঙ কুছেলিকা খেরি অধিল ভুবন, আক্রদিরা আহা মরি সোণার তপন। कति विमाक्त इवि (इन कान इन्न, गंगन व्याक्टन यन श्रीता दक्तमग्र धृति जडाखरत পড़ि, आंद्र। मति पति ভৰ ভাবিছ্ৰ ভাবি অংশ্ৰমালী ধরি रयन ८३ मिनन मूथ, विकटत कनक, त मुशानि मनाकाटम इरेटन छेमग्र। উত্তর পশ্চিমে ছোর কালিমা বরণ घनांवली (इन कारन निमां महम्न। कर्ग मुमुर्गित मत्न एवन कान इत्र, शन दलि कि छु डेश बनावनी नग्न। भवन कदि धाइन क्लिमा दहन, " সুযোগ প্রার্থিচে সেই পড়িবে কথন তारीत्र निकारतांभिति की क उक मन : দাঁড়ায়ে শক্তি তারা বলির ছাগল। নিপট লম্পট বড় করি নিরীকণ धक्छ मजीद क्रम, इस्मा मगन काम कृत्री हात्र मुख्यान मञ्जामक, অম্বেষণ করিতেছে কাল অভিমত

হরিবারে প্রকৃতির চাক বিমলতা, विषक्ष वमनर्थामि धन्त्र संग्रहा. विवादक ब्रहिट्ड जारे, व्यमन कामिनी পতিব্ৰতা, পতিব্ৰতা, পতি প্ৰণায়িনী, লম্পটের পরশনে রছে শক্ষাত্র, আতক্ষে বিহবলা ধনী বরণ পাওুর। त्माइन मैं। जारा उटि इता मुब-मन, প্রকৃতি মলিন আস্থ করি নিরীকণ िखां गर्गन थीतः कृत्म घनावनी আচ্ছাদিল বাযুকোণ. অচল আৰলী দর হতে শোভে যথা, বায়ু লুকায়িত তারি পার্শে ব্যাস যথা রছে গুলারিছ। शीवि भीवि भागरक्ष कविदा भवन घांत्रनाटम अकवाटक आमानि लक्षन পড়িল পাদপমাথে। ভীক তকদল করি নত-শির যেন ভয়েতে বিহ্বল धर्तिष्ट भवन भए जीवरनत उरत्, হর্দান্ত হঃখিত কোথা হয় রে অন্তরে मीनइःथ जावि मत्नः (इति श्रेत्रइःथ পাৰত-পাৰাণ-প্ৰাণ পায় মহান্ত্ৰ। मञ्जात कमटल काथा काकना जेनल, উদ্যুক্ত যখন সেই পথিক সভয় , নাশিতে দণ্ড প্রহারে স্থবিজন পুথে, शिक धितित्व शिक्त मञ्जा मत्नात्रतथ সাধিতে বিরত কোখা ? হলে নতশির, जमनि ভोक्तिर धीना हितिर नहींत।

তজ্ঞপ শাৰীর শির জারভ জাঁজিতে করিল প্রম, মড়মড়ি চারি ভিড়ে পড़िছে भागभेश स्ट्रा उधारिक, रता विश्वमृत रहता श्वितार कर। উড়ি গেল কাৰু শাৰা শোভার আকর, गमल भेरीत काक कारण भुत बन। পৰ্ণ নিপত্ৰ ছলে তৰ্দ্ধ যত, বিসর্জন করে অঞা চক্ষে অবিরত। প্রস্থা ভাজে কোন তক্বর, कान उर्दे शतिखके कम मत्नाइतः वाद्रुहर ग अवस्य वाद्रुपूर्य शिक्ति, বহুধা^র উড়ি পড়ি বার গড়াগড়ি। जारत रह विश्वभक्ता, मिथि मनो उद, কাঁদিয়া উঠে যে প্রাণ, রঞ্জিতে এ ভব তোরা যে শোভা আকর, পক সুচিকণ नित्रीकर्ण ना खुड़ांत्र काशांद्र नत्रम ? ় প্রকৃতি সতীর ভোর। তুষিবারে প্রাণ, (वर्ष योग)कन्न (यदन, छनि छोन गोन निहर्त (माहिज किवा १ मानवनिकत, সংসার স্থালায় যবে , দেহ জরজর ट्यांच स्टाइन खंद्र कतियां अवन, ब्रुष्टाम जंखल धान शहर शांचिमन। आहां मति गति अत्य अतः ति विक्षः, वृक्षीस भवनकरत रात्र श्रृक्टेसक त्रहिष्ट् भूमात भौज इश्व कवि कारत ! किन्द्र (कांग्रल थान कैं।एन एवं भूकोर्द्र

वर्ति उ छीतमत इःथ वर्ति व कमरम ? व्यांशिनीत ने हि (मृत्र अ यम वर्गाना ছুটিছে বারিদক্দ গগন প্রাক্থে জাঁধারিয়া এ সংসার জান হয় মনে कनम जुन्नाम भेज कति जारतीहर्ग, প্ৰন ধাইছে রভে নাশিতে ভুবন। नीतम निर्दाय मिनि शवन एकात, ৰুদ্ধ করে চ্ছাতিপথ শুনে সাধ্য কার। পড়িছে অশনি বাণ করি বোরনাদ, छेलुक उक्त जार्ड विषय ध्याम। ख्निष्ट माथीत मित्र कति ४९, ४९, লাগিছে গিরির গার র**তি সভ্**ি। পড়িছে পর্ণকুটার শব্দ ধুশ্^ন্ড, । काँ मिट्ड महिज निश कदि वाश्वाश्। ভালিছে পাদপ ফুল শব্দ মড় মড়ি गिर्किट्ड जनमञ्ज अस गाँ गाँउ। বহিছে তুমুল ঝড় শব্দ গেঁমুগোঁ পোঁইগাঁ, লাগিছে বাহু কোটুৰী শব্দ ভোঁ ভোঁ ভোঁ ভোঁ। উঠিছে কলোলফুল गत्रकि गजीत्र, ভাঙ্গিছে পুলিমে, করি ভাবণ বধির। মিশিয়া এ সৰ শব্দ কি শাক উন্ধিত, · সে শব্দের দিতে শব্দ সম সাধ্যাতীত। • बांगि अंगिक प्राप्ति इतन मंगूचिछ, मारन राधी अट्डिमिना हिसाबिङ निक्षेष्ट गितिश्रहा अमहिक्क मम, माँजादत भितिभक्तरत । मिथन माइन

এই ভয়ম্বর বাড়, কিন্তু শহাশৃত্ত, रगारन मानन ककू नहिनादा कुन्। काठ-मीशाधारक मीश-मिश्राह कृत्त र शांठक श्रीक्रम मन। विहरत वाहिरत कड़ मूर्खि छन्नहर, हक्षम कि इस मीभ उम जाउरत। स्थीत मह नाफेटन मील-निशा मन, সচঞ্চল করিবারে হতাশ পান जकंग मण्यूर्य (अरनां, रकनवां याच्छ · इहेटन स्माइन-मन शांठक - छ्यीत। सन्धि डीश्व पूर्ति कति वित्नाकन, करह कथा मैन गरन स्थीत स्माहन। " अरक त्रष्टाकत उर ध्रमी म नमन, . " এই यে আছिল কত गढीर मर्गन। " अहे या जिमात्र मिल मत्न इतना कान. " তোমার ছদরে জোধ নাহি পার স্থান। " गांडीरा जाशन जामि हिना वीम मूर्थ, " জটল অচল ভাব ধরিছিল। স্থা " সে মুর্জি পরিবর্তিত কেন হলেং ছেন গ " डेबाज पडन कर्द माखिएन इंद रहन ! " अगास पूर्डिविनिके नीत निक्षे नइ, " " নেহারি বিশাস কেবা করে অতঃপর γ 🦈 " जशत्र (इ श्रेट्सानिधि नाहि साथ उव, . " हिन्छिए धरे छात्य थ विशाम छन। " जतकत मृष्टि कियां (इति केंद्रिश क्षांग, " केंक्टि किरमान कुन शर्क उ नमान।

" वक्षे वक्षे छेचि वक्षे शहा । " লুফি করে সিশ্বতীরে কঁরিছে প্রহাম। "সহল সহজ হেন উর্থি ভরত্ব, " ভाषिट्ड ভीर्ग गर्बि दन्तात छेपत। " উঃ ৷ উঃ ৷ কি ভীষণ শব্দ তাহে সমূখিত " এ শব্দ সাদৃশ্য দিতে নর স্বাধাতীত। " शःनाह य जन कृतन करज्ञान-उपन " এ ভাব বুঝিতে দক্ষ হয়ু সেই জন।' निमीथनी नगांगंड, करम उत्मावांनि, বিস্তারিল নিজ রাজ্য গান্তীর্যা প্রকাশি। একে অন্ধকার নিশি তাহে ঘনাবলী আবরিল পুণীস্থিত পদার্থ সকলি; মনে মনে জ্ঞান হলৈ। যেন তমোরালি পুরিল নিজ উদরে ত্রিসংসার আসি। তাহাতে তুমুল ঝড় বহিছে সহনে, प्रतान भारतः जात्र हिकै वत्रभाग বহিছে সলিলজোত; একাকী মোছন विजियां गिति-गेक्तति भेकार्युना मन। हिश्ख क्रस्-विवर्किं जाहिन म इन, र्भाइन-मानम ज्राव किर्ट्यू इंकन হইবে, পাচ্কবর্গ! ভূত-প্রেত-জন্ম, विष्ठिक क्षित्राह्म (मृक्त - स्मय অক্ষম সম্পূৰ্ণ জেনো; জানালোক যথা সমুজ্জ্বল করি খন, বিভীষিকা তথা কি করিতে পারে বল ? মোছন স্থীর, विकास भारमधी मान अकृतित।

প্রকৃতি সতীর রূপ নিরীকণ করি, ত্ৰদিভ পৰন ভরকর ভাব ধরি করিল বছল চেফা ছরিতে সভীর गजीक ज़बन, बरत कीवतन अधित। यटन इहाणज किंकु कड़िल मर्णन, পতিব্ৰতঃ যুবতীর সভীয় ধংসন অতীৰ হুন্তৰ কাৰ্যা, তাই ক্ৰোধভৱে, প্রকৃতির চাক শোভা নিল মুট হ'রে। লও ভণ্ড করি দিল শোভা অতুপম, मन्भर्गतम मनाकार्म यञ्जन। विश्मा लम्भाटित प्रभाइति इतन श्रेश्वनि इ. मिथिमिक ब्लानमुना इत्र पृष्ठिछ। कांन कामिनीत कांट्ड इहेटन निक्कित अर्थत तम्भी कार्ष वामना वाक्रिय **প্রকাশিতে লজাখু**না। প্রকৃতি স্তীব সঙ্গ-সহবাস-লিপ্যা নিজাতে অস্থির हरेला भरन: निगीधनी गर्मागंड ছেরি, ছেনকালে দক্ষ্য যন্ত্রণা-বিগত रूरेन भागम जातः, जागाम अधीव रहेत्रा इकांख अवर्गास बजनीत পরশি নে কোমনান্ত হ'ল অচেতন अटक (वादा निर्मेशिनी जारह क्ष**ड**म। দোঁহাকার ভীমদূর্ত্তি কে করে বর্ণন ? **ठिलारवर्ग न्यम्**रीन 'इडेन इ**स**न। म्भागहीन उरुमन विश्व म्भामहीन, अकृति त्रमगी यूथ इडेल मनिना .

करम ভिরোহিত ঘন, करम ভারাদল वाहितिम अरक अरक ; गर्भमण्डम. ক্রমে হুলো অুশোভিত, অর্চ চল্লোদর रत्ना थाहीनित्क जारा, किया भाषामत्र। ত্যোরাশি তিরোছিত, কৌমুদী বিমল, সাবির্ভ এভুবনে: সাবরি সকল তক, লতা ভগ্নকায়; জ্ঞান ছলে। মনে বিশ্বপাতা থিছাছদি ছঃখসন্দর্শনে প্রকৃতির কালিম। বসন দুর করি, **उ**खनाम मडी-चरक याङ् करह धति श्रारं भवारेना; कुछल , काक्ष्मकून ওকতারা নাম (যাহাছেরি মনাকুল) यज्ञत शामिना, ननाहे नाजामधान -রত্নদিধি তারাকারে, যে জ্যোতি উজ্জ্বলে गंगन धांक्र किंदा, यूथ माजाहेल।। अना अभ धरमार जुरत डेकारेमा। य यानार जाउन अकृति न्यानी প্ৰনের প্রশ্নে ত্যজিয়া অমনি দূর করি দিয়াছিল; জ্ঞানকী যেমন विवर्गत भेडलेटन वर्डक जुक्त मर्गएछनि मटनाइः १४ फूर्म निरक्तिन। হেরি নৰ রূপ ছবি মোছন জাসিল মুপার আনন্দে, তার হলো চিন্তা দুর, নির্বার পতন শব্দ অতীব মধুর, छनि सम्बि इष्ण्रिन; श्रवृत्ति स्वस्त्री, थिश शूख माश्रानात, राम, जाश मति।

निवृष्ठ कड़न डरंड तम मेंधूई धनि क्रिएं नागिम गंडी, यमिं मा स्ती निक इः एथ मधीक्ठा, यमन अन्तनी আপনি যন্ত্রণা সহি করে স্থত-মণি লইয়া তোৰে তাহারে। মোহন-জাথিতে নিম্রা উপস্থিত হলো দেখিতে দেখিতে। **अक्षा डेशमधर**७ दाशि निक भित শরন করিল হুখে মোহন সুধীর। जाँवि गृट्ह निजारमरी यहा अर्दानन बाद ज्ञा भंक इंडी अयनि मुन्ति। স্থানিকা উদ্দো-নিশি কোথা বল হয় গ म तकनी अधामनी मानाधाका नश জোরে অধিকার করি; সুধীর মোহন যেমনি মুদিল জাঁখি অমনি অপন নেহারিল ভয়কর-মুরতি ভীষণ নির্থিল এক, তার যুদিত লোচন। जब (यन जामज्यमम मीर्गाकाइ, मलक धका ७ जान। पाछि कमाराह। भिरत्राशित नघमान मीम अधाजार, बछेत्रत्क त्मार्ख त्यन मिक्छ माधाद। গ্ৰাকৰ সম তার প্ৰতির গঠন, ननां हे विभाग छात्र कीवन-वर्णन। नांत्रिकां है। इस इत्व श्रीब्रमंत्र. নাদারত হটা তার কামার গহার। চকু ছটা গোলাকার যেমন তপন, क्रमेट इंडा मणि शृहित्व मधन।

দত্তভা খেতিমুলা সম জ্ঞান হয়, निहीक्तरम बक्त एक, कन्त्रिक कमग्र। रख इंडों पांडा पांडा इक्र कमनी, न। ज़ि जूँ ज़ि जूर्न जात्र वनत्व (कर्वन। পেট মোট। দীহাকার বায়ভরা পাল, পদ ছটা স্তম্পায় অভীব ভয়াল। ভীৰণ দশনে ৱাধি ভীৰণ দশন কডমডি শকে করি সম্ভাগি মেছন रुधिन नीत्रमनारमः " अरत (र शास्त्र, কাজি নির্ধিব তোর সাহ্য কেমন। চির অবছেল। তুই করিম অংমণের, ভালিন দশন এক চাপ্লাড় প্রছারে वाजि द्रि, निर्द्याध, छाई । माग्रमितन फ्रवाहेंन जिल्ल जरू: माथा धर किल्ल প্রেশ করিবে তোর উদর ভিতরে अमि मातिर मुखि मखर छेशहः," এত বলি ভীষণ-শারীরী ধরি মৃতি, ধাইল মোহন প্রতি করি মহা কঠি। निक्छे विशेष प्रथि (माइन सुधीत, रोधिस्क भित्रकत्र, भनक आँधित न। लड़िएं, कहि स्वादमर्भ महारिम,-" ওরে ভীমকায় ভোর ক্রোধ জনমিল কি কারণ ? নির্ধিনি কিবা অপরাধ ু মোর বল্ ? তাই তোর হইয়াছে য়াধ मम जरन वाक कबा ; क्रिज्निट्र मरन, তোৰ ভীৰ অন্ধ ভয় দেখাৰে মোহনে।

करमबन्न जीमगम पाचि बाउँ जीन, কভু না ভোহার সমে বিস্থাদ মেবৈ मखन दम्र त पृष्ठे ; किया खीमकार , দেখি তোর ছবালর কৈন রে আমায় করিবে শক্ষিত বল ? দেখু তৈলপায়ী यमि वृह्द-कांग्र इग्र धृनिगागी ফুদ্র কাচকীট কাছে, যার গুড়ি গুড়ি रयमन तत मिल्लाह यत खिति पृति लाय यात्र किकिनाद्य: विल आमि जारे, তোর ভীমঅল দেখি কড় না ভরাই।" এত বলি মোইন হাইল তার প্রতি, লয়ে খর অসি যেন সচকিত-মতি। माइटन जधार्ग मिश्र मि जीवनकाय. চারি পা পিছন হাটি সম্ভাষিত ভাগ। "প্রচুর প্রশংসা তোর, করি রে মোছন, অভুল সাহস তরে, শোন দিয়। মন लाद क्रो कथा वलि, हका खामांव, অবিহিত চিতে শোন মম মহিমার वाकारिको:-बब्दाखादाका कवि जामि, अभीम विख्यलूर्ण रक्ष्यामा । धहे (य विभान होका, वन, डेशनन निकृष मत्नातकन, जाँदि जाकर्ग कर्त्र विमालन कहि, भक्ति आंगांत्र, ध विशास चक्र इपि मम अधिकात। वस्रवामिश्य-हिफ-निश्यामानाभिति, করি আরোহণ আমি নিজ রাজা করি

निक्षणेटक निक्रिवाहम, (खरना दह भाइन, অধিকার কি প্রকারে করি তব মন ... তে কারণে মদ আসা: তোহার সাহস, कति नितीक्त। । सम अन्य वितम হইণাছে দাতিশয়, করি ভয় মনে. তৰ সম সহজ্ঞী জ্ঞো বীর জ্ঞান यनि (त कडु अरमर्ग, भम तक्ताडांद , চাজিয়া পলাতে হবে কি মন্দেহ ভার। বিজ্ঞানে গেয়েছি ভৌবে একাকী মোখন शाकि (इ निकास छोट्ड विश्व कीयम।" বলি তেন ভীনকায় বক্তমুন্টি ধরি: হলে। ত্থানর পুনঃ মার মার করি। শক্তিত ভ্ৰায় ছেলে পেমিন ত নত, গে ছ': ফটর কথা শুনি কুৰ অতিশয় इरहे, भाइन दली धाःल उर्शन, গছজি গ্রহন যেন ভেক-গারা ফলি। করিল প্রছার পরে পর অসি করে, বিকল প্রহার যথা ছায়ার উপরে। করিল আখাত মেই, কোথা ভীম অক্স. कीम जक जलमूं असम जनक। প্রহার করিল অসি যেমন মোহন, নিক্ৰা প্ৰাইল তাজি মোহনলোচন। কোথা দেই ভীমকার যুক আড়ম্বর, ঘোহনের মাথা এক শিলার উপর। शिठिक मझमग्र! (कवा जीमकात्र. জানিবারে কুতৃহল মন্ত্রণা তোমায়

मिटिए कड़ रे द्वि ; अन निश्न मन, जीवन-भंतीती अर्थ हम काम सन। जानका देदाँव नाग (इ शाहक जन, শত শত খানখের কছেই কারণ। मानत्वत यठ कके अरे इके मूल অন্ধকারে নিজ শব্দে আতকে ব্যাকুল। **जानका**त्र वनीकृष्ठ करत्र कष्ठ नरत्र, हाक्र मिरि मत्म मत्म कृष्ठ छान करत। কেছ লা শহায় ভবি বিদেশ গমন मत्न करत्र ठिक यान कृष्टिल अभन। কেছ আশিস্থার করে ছইরা পতন শমন ভবন ভাবে পোত-আরোহণ ! हेकार्ड डेम्राडि-१४४ कट कद हर, কে তাহা বৰ্ণিতে পারে বল স্থীচয়। 'वानिटका वम् जिनकी' स्थामाथा कथा, মৰ্ম জ্ঞান হয় কার শকা ২৫ছ বৰা: माइमी मामनगण अक यात्र महत्र, मक्त बाद मर्द्ध (करना यह जीक नरद। यानदारे व कर्येत भूनीपूठ (र्फु, আশহাই সুরু ভাঙে উন্নতির সেতু। जामहारे मार्नेटवर मन्त्र नमान, वानदा कीव्रत्स प्रका मत्न कति लान। **উठ छेठ बङ्गळन ४**४ पिना-अनि, दान दान जानदार लिखारम्हण क्रि। कें बल्बन कह (नज-उंचीलन, চাহি দেখ তৰ মশা পুলিরা লোচন।

হয়ে সাই সংশক্ষার সদা পদানত, কাছারে বা কৰে। আমি মনোত্রংখ যত। কত দেশে কত জাতি এখবা ভঞ্জিছে জয়কেতু যশ-ভবে সমীরে উভিছে। निक् अल म्यूड्यून - जानद्दि दग्त, উঠি জग्रहान मन। প্রতিধান করে। হেখাল মোহন যেই মেলিল লোচন নির্থিল কিয়দরে নর একজন मध्यादिनोमील करते वासिष्ट सम्प्रत्यः পরিল গিরিগছবর সে দীপ-মহথে। একে জনপুনা छान डाइ अमिनी, जीयन अंग्रिका अत्य नार्मिष्ट (वैभिने । াধে ভরমর কল ইটিয়া মাধ্যে, মোহনে জাথাত কবি কেলিল সমুরে। निमा खाळ मी श-शास्त्र करि निदीकत. जीवन-नतीती गाम जादिन त्याइन। মোছন ভিত্তিল মনে ব্ৰি ভীমকায়, माहा धति आत्नांकदत आमित् उंधात्र। क्मरकात्रधुना दश कि किनात मन তাঁর হ্লে হেন ভাব রহে কডকণ? পরক্ষণে চিতিলেক মোহন সুধীর, भारेश यूरमार्ग नया अ निर्मि गछीत, হ্রিয়া কাহার ধন আসিছে গ্রুবরে, ুলুকাতে **লুগি**ত রত্ন স**ভ**য় অন্তরে। সালো অতাসর ক্রমে, মোছন তথন কাঁধি পরিকর করে করিল

निक वर्षि, निर्जन जन्दत गठकिए সে আলোক উপস্থিত দেখিতে দেখিতে। नटर छेरा जीयकात्र, म्हा छेरा नह, নির্থিয়া ছুৰ্জনে উভরে উভয়, राला डेलामिङ यन, भार्रक अधन. জিজাসিতে পার উহা হয় কোন জন। ভূতা রামধন এই প্রভূপরায়ণ, নিজ প্রভু: অমেষিছে সে নিশি ভীষণ। ৰাত্যাসমুপিত ভূতা করি বিলোকন, নিজ প্ৰভু জনা হয়ে আকুলিত মন कतिम बढ्म (ठके। शक्तरं आमिरंड, नांदि मिन महाबड़ म आना भूदिएछ। হক্ষের রুহৎ শাখা ভাঙ্গি পড়ি করে, ভাদিল তাহার বাজ্ বাধিলা অন্তরে। कार्ड कार्ड अञागे इहेग्रा वागाय. নিজ প্রভুজনা যেন হিলা মৃতপ্রায়। गजीत तक्षमीकारम रम बहुआ शामिल, अकुनदारंग कृष्ठा जर्मन डेरिम! अ(भिक् तरेश कर्त छान्नि उक छ्रा. कामे मुख्ये लंब हिल (शाद इ:१४ मध्र) ভূতা হেরি নিজ প্রভু, প্রভু ভূতো ছেরি, **डिथमिया उर्तिम** द्व स्थार्गाद्वि सुरनीत तम (मैं।कात ; तम निम्मि ग डी ह, याशन कतिम सीएइ कमि किति छिर करणार्थकथरन माना, क्रांम निमा (भव. हामधन भा**ष्ट्रान पृत प्रामा (क्रमा)**

हि शांठेक शक्तमं कर वित्नांकन नारी अक कतिरवक कृति आकर्दशः। প্ৰন্যপ্ৰে ছিলা রজনী গভিনী, अमन क्रिम कना नग्रनश्किती। ननजारम खुदक्षित बरहे किमनज्ञ. নবরাগযুক্ত আধ ফুল কুবলর। बददार्ग ख्रुक्षित बवनृत्री हम्, यश्रम्त ममागृहम सन्दर्शमञ्जा छक्त योजना नाही भून नवहारग, बवताम विद्राक्ति व नव शाना जारम । नवडांगमत्र किन्छ । नाही (यमन, নয়নে ত নিরীকণ না করি তেমন। नाम कत छेरामजी मक्रमग्र अन, ন্ধে এছা দেই উষা নিত্য বিলোকন कदक बाकारत किन्तु, यनि अ रम धनी, নবর্গামর ছের দেখছ যথনি। (कारना देश) (मदे छेशा जाशा (य नातीत. व्यवन गणिकावीर्या गर्छ बक्रमीव। उत्मामग्र निनीशिनी जाहर श्रेडकन, মিলনে কম্পিত ধরা ত্রস্ত জীবগণ। নির্মাল গগন পরে চাঁক হুশোভন, निमार डिमिड डेवा नग्ननश्चन। খল দেখি স**হাদয় এ উষ**া কেমন চ এ হেন মনেশহারিণী রমণীরতন नवतार्ग भूर्ग खरव मिर्थह कथन? छेमग्र इरेटव छेबामञी कञ्कन,

नाहि करत कान जह वन वारशक्त। करत श्रक्तिक मेरिन एम श्रेजीकन। जाति। कवि धानीनिक् अत्ना छेशामठी, जात्नारक छेड्डान धरा खीर क्रम मिं। কিবা কমনীয় কাৃদ্ভি কছি কছিছুর, লজায় ন। বাহিনাত দেই দে চতুর ৰক্ষরাক্ষী কর হতে থাকে লুকারিত, পাছে উষাসভী হপে হয় গো नाञ्चित। করি বিলোকন জীবে উষা আগমন इहेन उथनि जाता धरमारिन भगन। माधी'পर प्राधीमन प्राम क्षमन. উযাসতী আগমন করিছে খোষণ। সাহ: কি মধুর অর অবণরঞ্জন, अवर्ग मा करत जुल बन कात मन! বাত্যারটি ভয়ে করি ঘামিনী যাপন-लिन बार्के लिए मधु दर्निष्ट असन। (रान विक्षम वीम माथात छेशात. চকু দিয়া পুক্ত গুল্ভ পরিক্ষা করে। इकिवद्रवह्ण हिमा मिक प्रकासन, নিযুক্ত বিযুক্ত তরে সে হাটির জল प्राथ भन्नि **भूक्** ७-६ त्रवित किदरण, শুকাইছে পুক্রালি আছুলিত মনে! प्रकृत निकृष दन था छक्षन दरन, ছিলভিল ছইয়া গো লোচনযুৱালে. মব্যক্ত মণারিমিত দিতেছে যন্ত্রণা: कदि कलदेव भाशी कदिएक सञ्जान

শাখার পানিরা বেন ভগ্নবাদ তরে, করিবে নিশাণ পুনঃ মে নীড় কি করে। कर्म दिनगीं अिहीमितक ममुमिन, नद - अथ - भिक्त - भीत छथनि छेठिन। शाउधन शहाकरम मनःशम गांत, চিলা আকুঞ্চিত হয়ে প্রভাকর চার मश्रकात मझीर्य पन पित्रां किते। মরসমূহের হলে। বিক্রারিড হিয়া। জানরবে জনস্থান মহল পুর্নিত, बिलश लहेश मृद्द इत्न दादिनिछ। পুংগীজন ছংখনন ভগ্ন গুছোপরি, নভায়ে দেখিছে তার গৃহথানি মরি। একং নি যার সূবে প্রভান্ন বলে, টিংপাটিত ছারে পড়ি রছে ভূমিডলে। केल्लाबार गाणि ४० (एरलभूमि छोर) জমনীর গ্লাপরি কবে হাহাকার: নোন স্থানে কোন জন ভগ্ন গৃহ তার উদ্লাক্ত কবিতে গৃহ পুনঃ সংস্কার। বন্ত সংস্থার তবে কেছ কাটে শাখী, সারি সারি রহে পড়ি নাছি পথ রাখি। कनमी नैंानिष्ट (कांशा पुक्तदङ्ग जात्र, जारमनि वनिक्री रम राग रम यामिनी शरः। লৈরে ছানি কর কাৰু কাঁদিছে জননী, তরীমাগ্রে বঞ্চিত হইয়া স্কুতম্পি। ব্যমেত্রে কপোল রাখিয়া কোন ধনী, মতীৰ চিন্তিত চিজ সম্ভাৰা তরণী

মগন গলার নীরে হইলাহে বলি,
নাহি জনা কথা মুখে ভাবিহে কেবলি,
মোহন ও রামধন আনি উপস্থিত,
হইল বাসায় লোঁহে মন চমকিত।
বাসা-গৃহ ,উৎপাটিত আহে ধরাতল,
গৃহোপরি পড়িয়াহে পাদপ সকল।
কিছুদিন সে প্রদেশ করিরা ভ্রমণ,
জন্ত দেশ ভ্রমিবারে উৎস্কুক মোহন।

পঞ্ম সর্গা

" e guse of joy, the bolm of wo, .The soul o' life, the heaven below, is rapture giving groman."

গোষ্যমূর্ত্তি নর কোথা ? যাহার নয়নে, পড়িছিল মনোরমা মোহিনী ছুজনে। হে পাঠक मञ्चमग्र जनमीत भन क्षिमल कथल अम, ना क्यांनि कमन করি তব সরিধানে সে কথা কহিব-कियान वा जान मना मिरिक्स वर्तिव। প্রকৃতি বিচিত্র শোভা গোধুলি সময়, नित्रीकंग उद्ध इत्य डेश्यूक-क्रमय গমন করিতেছিল তটে সরসীর, (महे सोयामृर्खि नद धकून महीद। সভাবের শোভা দেখা দূরে গেল তার, (माहिनी मामिनी (हित मश्मात जाँधात। माहिनी मिन्यां देखि ता स्मात नता. नरेग्रा किनिन धर्म व्यक्तांत सद्द। खिमिछ नज्ञनमणि भूनाका मध्याज्ञ, অন্তর বিশীন তার মোহিনী চিন্তায়। ्वहक्षण मरकायूना शिष्टिया भेगाय, আছিল দেজন জেনো যেন মৃতপ্রায়। शरत ज्ञान हरेन करह कथा मन मरन बाह्न

ं (काथा जामि १ कि जानम। दिया क जानिन, , "कान नवाधरम बादब समध्म विश्वतः। ' আহা কি অপুর্বক্লপ কি কান্তি, মধুর, " नेन्मर्गरिय रेंग भीन्मर्या किमग्रीनि पृत्र। "বরণ চম্পক পুষ্পা বরণ জিবির। " आइ: कि माधुर्ग मित्र मरनारमा इनिज्ञा । '' बत्रं में छेड्डिन भीद्र, स्गाह रूड्डन, " জিনিয়া বরণ শোতে শিরোক্ছদ্ল। " काम हिक्शिता हुन गंडेन दहर्ग, " जनिकारी लिएक एम (वर्ड भवामत्म। "कि চাৰ যুগদ ভুৰ কাল চিকণির। " শোভাস্পদ হরে রহে ঞ্চাতি পরশিরা। " কি স্থন্দর সাঁধি হুটী তার নীচে লোভে, " ভব অৱেশণ দিছা দে তুলনা লোভে। " চांडेनिकी कि खंखत, हाहित यथन, " सम जरक इरमा त्यन स्था विद्या। " वह तमनीत पृष्टि . (मनिजाहि जामि, " अमन्त्री (डा कार माहि इस क्षति-गामी। " क्विमा हिक्न मनि करम हम हम, " रेक्टा इत जना दंदीत तम जाता गुगन। " जांचि इंडी चिंडिनिस मिन ति हिल्लान, " त्म उद्रोक्श नित्र निष्ठ मारम गंवरमान। " ज्ञाक ज्ञाबाक्षांनि ज्ञानि विविका, "জরুগ শোভিছে সহ ইপার নাসিক।। " कर्ण मक्तर्गत्म माम (यम , काम घत्र,

" जबद-विकिश (माटक अप्नेत सम्म,

ি'' পশিতেছৈ যেন তায় স্থচাক বিহল 🥫 · " जरूग निख्ठ भारा नामा जोत जन। " নাদিকাথাডাগ চঞ্ছ নাদারন্ত্র জাঁথি, " তাই নাসা নির্ধিয়া মনে গণি পাথী। ' একান্ত ৰামনা মনে হয়ে বায়ুচর, " সুখে ভূঞ্জি গিয়া তার বিশ্বিকা অধর। " किशा इरत मभीत्र भिनि मभीतरण, " मार्थक कति जीवन म मूर्घ्यान। " কিন্তা অৰ্থকার কাছে করিয়া গমন, " इरेट्रा वानत्म अत वन-वाखदर्ग। " অরে রে রতন হার! কি কপাল তোর: " আছিল রে হদরে শুয়ে হরে সুখে ভোর। " ওরে রে কাঞ্চি চিকণ কি প্রম্যেদ তোর. " मिथि द्वर्थ ভোর समि बुदन डेर्ठ मात्र। " अदर दर मृश्रंत श्वी क्यू क्यू यदन, " বোৰণা করিছ ত্ব প্রকৃত্ন অন্তরে ? '' কণ্ঠহার, কাঞ্চি, আর মুপুর ভূষণ, " সমধিক হুখী তোৱা বল্ কোন জন?" কণ্ঠহার দর্শ করি কহিছে তথ্ন, " अ अम जिल्हामा कृत नम कि कात्र। 🎙 श्चनत्त्रत तांका श्दत औष्ट्रिश्चनि'शित, कामिनी कमनकनि कमनीत कवि।" काकि क्रम " अउ नम्र केंद्रा केंद्रा केंद्र रूत (मर्थ गय (**मर्गे**डा किंवा हमेशकात।" ৰূপুর মিঠাল বাজি কহিছে তথ্য "কে শোনেরে তৌর মুচ গব্বিত বছৰ্

र्श्तिरम इंशे करक स्थी कान करत, नहीं कर्श्यात काकि अवनिक नाता। त्य कामिनी अम्भार्क नाष्ट्रि (मक् च्रान, বিষকুত্ত প্রমুখ ক্রি, পাছা জাম।" धरत रत नृश्त रकांत्र कथा दासि मिरत, তোরি সহচর কয় থাকি পদে খিরে। িকি কহিতে কিবা কহি হইত্ব পাগল. करवः (क्र. मिथिव श्रेनः मन जोरत वन। **এट्टिन तम्बीतक जश्टमाटम कीरान.** क्रीवम बिनदा गिन विद्यार्ग मदन। वैंकि यमि अक मिन मरक्षाणि हेहारत. **कृ**क्षित स्रमीत स्थ अमात मः मारत। " নিজা নাহি হলো তার চিন্তিয়া কামিনী, इंडे कर्डे मरबाशित जाता निभिधिनी। निजा मिडिबात उत्त मुमिरम नत्रन, মোহিনীর প্রতিকৃতি করে নিরীকণ। थना (त अनम ভোরে नेज धनावाम, তোর ভরে এ ভূবনে যত পরমান। यउ तम अनिकेशाउ दश अ प्राम, व्यक्तिःश्य जाति जात्र गर्नि मान मान। তোর क्षताम याद्य क्षताह क्षतान, जाबाब अध्याम किरत क्ष्रू जारह जात कंड कुलकाविमीत कव नर्समान, क्छ वृद्धकृत गर्म तिर (ध्वनकाम। कुछ श्रक्रवाद कत्र वाष्ट्रभ नवात्र कड़ इक छन करते नावि शात बान ।

পাপ পিশাচের যে রে এত প্রাক্তম, पूरे তात मून स्थू नाहि जात खम। कि मानी हि छानी (म इडेक ना (य छन, তোর করে কভু কার নাহিক মোচন। किया अ सम्मत नत । काशा वा निवाम ? জানিবার তরে স্থী অবশ্র প্রয়াস হইয়াছে তব মনে? তব কুভূহল তৃপ্ত করা মম বাঞ্চা জানছ কেবল। वाम अद भ्वाश्व नामछी जीवन, গণনীয় বাক্তি ইনি অর্থ জ্গণন। চিন্তাপুর পলিআম নিরীকণ তরে, রহিছেন বাস করি সে পল্লীভিউরে : এমন সময় কাল হইল মোহিনী সুখ-সরোবর তার শুকালে। ভামিনী। পরদিন প্রভাষেতে করি গাজোখান, জীবন আপন সঞ্চী করিল আহ্বান। বসন্ত নামেতে তার প্রিয় নহচর, আহ্বানিবা মাত্র এলো প্রভুর গোচর। কহিল জীবন তায় "শুন হে বসন্ত, " গত সন্ধাকাল হ'তে মম প্রাণ অন্ত। " কছিতে পার ক্লি সধা কোন্স কো কামিনী, " निविधिष्ट् मात्रावाद जिनि मोमामिनी। " जांशत जनमाधूती कर्ति नित्रीकन, ः " वाँठिए वानना नाहे विहरन विनन। " छेरात मश्यागीयति कते महेरहेन " রাধিব তবেজা এই তাপিত জীবনঞ্জ

" नजूरा निकात मध कतिय मीरमः " नांचिक मत्मर जात्र सम (र वस्त।" रम्ख थाजून कथा छनि भिर्दिने, कीवत्न प्रमुवहत्नं कहिए नागिन। " ঠেকিলাম খোর দায় বারু মহাশয়, " नातिञ् भूतिए नाङ्गा तुनि मरशामत। " वहन वज्र-वशु सक सश्योत. " করিয়া দিরাছি" তব করছ স্মরণ। " य कामिनी कथा अदर कहिए जामात्र, "তার সঙ্গ সংঘটন অতি বড় দায়। "পতিৰতা সতী সেই পতিপ্ৰায়ণা " अकाल कानातिनी त्मरे खुटनाहना। "পতিজান পতিধান পতি সে জীবনঃ " প্रक्ति जिन्न भेर नह ना करत मर्गन। "পতি গতি, পতি মুক্তি, পতিই ভূপতি " मन्त्रादकांत्र मन्त्र करत्र मिरे म बूवजी। " পতिकथा नाहि यथा उथा नाहि इश, " প্তিকথা শুনি धनी श्रेक्त समग्र। * · " शंकिकथा · इक्ष यथा अवत्। अभित्र, " পৃতিভিন্ন পরকথা, खना। विश्वता " প্তি পতি থুনঃ পুনঃ করিয়া জবণ, জীবন বদভে কছে সজুৰ বচন। " পত্তি পতি করি যে ছে হইলে পাগল, " শতিব্ৰতা সভী কেৰা আছে ভূমওল ?ু " নারীকাতি পাতিত্রতা গুণে বিভূষিত, " अवस्य अभिदा शांति (करमा यरणाविक।

" गिरु वर्नि गंगि जोट्ड क्यन (यःक्रम, " নাত্রীর অন্তর সে বেঁ জালে না বিশ্চয়। " সত্ম[®] ৰদি করে ভান রমণীমগুল, " मूर्य होत्रा-स्था नना अखरत गतन। " य यूवजी निव পতি छनिवास वड़, " তাহার হৃদয় জেনো শঠতায় দড়। " নারীর অন্তর যদি হতো দেখাবার, " হৃদর-দর্পণে তার শত বঁরুষার " দেখাতাম প্রতিকৃতি জীনছু নিশ্চর, " मोडा थर्गमा कि (इ. बङ्कि केष्ट्र इश्। "ভূষিধণ্ড দেখি নবতৃণ্-আক্ছাদিত, "गां जीनन थात्र यथा मन अकूलि उ " जुक्किवादत तम ऋचाना: तमनीम छन, "পুৰুষ নির্ধি ছয় তেমনি চঞ্চল। " সে যুৰতী পতিব্ৰতা কিমা পরমভা, " জিজাসিনে ওছে স্থা শুন্হে বার্তা। " त्म तमशी काशात कामिनी त्मारत नन, " অসতী কি সতী সে বে স্বন্দাই সক্ষুদ্ " वादित क्रेटव शटन, जानक सिक्तन, " पर्दत जमारा कार्य किया महत्त्व।" নিপুণ গান্তক দিয়া তাল বাদ্যকুৰ यात्र यथा उपनि त सभी-महात • धनी-बाका शिह्नगामी किया (बारना कर्म) अञ्चिति योजनी काष्ट्र करह शिष्ट् केना। **उन्नि नम्स अफ्-नारका मिन्ना नान**् कहित अप्र, कब्रेटन कडाचित्रा जीता

(याविनीस्त्रांचने क्रोबा । कहिइ बाबूदमा बादा किहू मिंहा नम् ं व विवरत मृह स्यात आहरत वाजात। ুঁ " ভবে যে কহিছ তার পত্তিবতা নাুরী त्रिया वृक्षियात संग वृक्षि रहेटव आमाति। " अरे ,धारम मम नम्रू जारह अकलन, " (म कामिबी-अगंकश जोहांत्र महन " জ্রবণ করিয়া কহি পতিব্রতা তার, " আমি কৰ পতিত্ৰতা এমন : আমায় " निर्द्वाध ना छाव मत्न वांदू महाभन्न, " मांक छन्यूमा कि त्म विक्र केंक्रू रहा। " माइन नारमा अक बूवक खूबन, "তাহার রমণী এই ইন্থনিভানন। "হলধর বাড়ুর্বোর হয় প্রভাবধু " अवग कुछ अवरण बांत बाकामधु। "উত্তম সৃষ্ঠতিশার হয় এই জ্বন, " ধাৰিক সুৰিক্ষ অতি প্ৰিয়দরশন। '' একটা সম্ভান সবে মোছন তাহার, " स्नीन विद्यान यति नर्सक थाना । " क्रमरजब अजि (वय कवित्र) थेकान, ् " विस्तृत्रं खेषण जस्त्र गिन्नारङ ध्यनाम।" त्मारन वित्तरण जाहि कित्रा अवन, जीवन-जीवन रतना धारमारन वसन। वमरत किस्स भारत वाका स्वधूत, मुश्यिकि वर्ष जात सम्भाषा अपूर्व " तार्व तम्बी अरे इत स्तार्मा

" प्रत्यावक सामी वरहे त्यादार मनवा।

" (मार्टन में निर सम आहरू शतिहत्र, " বৃদ্ধিজীৰী বটে সেই হয়। "কিন্তু হার পরিহরে এইন রম্ণী, " প্রাণ ধরি প্রবাদেতে আছে দে কেমনি। " (नंथे। পড़ा निधि दुवि स्टाइट वाडून, " ত্যক্তিক্ৰেছিলে পারে সে ধন অতুল। " किया दुबि मम ऋर्जा छारगा ताहे जन, " ত্যজিক্ষা বিয়াছে হেন রমণী-রতন। "তাহার অবর্ত্তমানে পুর্ণ মনোরখ " করিব নিশ্চয় আমি দেখ ছেন পথ। " ना इंदें जात जरू। माइन-कामिनी,-" जेटर्वत जमाधा कार्या कि जांटह समिनी।" कवि कन्न जार्थ इन्न मकिन् लोगान, নামৰ্থ্য না হয় অৰ্থ ধৰ্ম-অৰতার যথার্থ-সতীর বিতে সতীত্ত্বণ, শতীর সতীত্ব হরেইকে ক্ষেত্র এমন ? ্ষ্টভক ,উপর্ছিত ভুক্তজি মণি জীবন থাকিতে তার কে আহি ধরণী र्विटि नक्तर वन ? क्याना देर रहम्मि, হরিতে হরহ অতি সাবিজী রমণী। कीवन-बहन अनि वमेखहमात, সভাবি কহিন তার ৰাক্য ভ্ৰাধার। · "পতিবতা ষভী যদি ^{*}হয় এই নারী, "তবেতো তাছালে নট করিবারে নারি। " मञीत मञीष यान सता यात्र इतन,

" मजीव मजीव यनि इता यात्र वटनः

" कगमीन-महिंबाटन इटव े ज नहीं थे, " यमनत्थ समुद्र मिछोडेका गांव-" প্রহার ক্রিট্র ক্ষি নিরয় মাঝারে, " সতীরে করিতে জন্ধা না কছ আমারে।" शामा-बार्ड बाकाज़र्व मित्रा छेड़ारेसा, कीवन वंगरस करक उरव मकाविशा। "তোমায় সুবুদ্ধিমান বলি ছিল জ্ঞান, "শিশুসম কথা শুনি এবে তবছান। " कि किश्न उब द्वार निवन-मर्खारा ' সতীর সতীত্ত্বারী জীবনবিয়োগে। '' ज्वान इत्र श्रंतार्गिट करत्र इ अवग. " दुविख्छे कतिवादि कि जाए अमन ? '' পুরাণপ্রসন্ধ-কালে প্রতায় যে করে, " तुबिছ। त्व जिथ मम हिंदू (मरे धरत। " जल्दाब-कीवीरमत कुनावात उत्त, " পুরাণলেশক ফাঁদ এদেশ ভিতরে " পাতিয়াছে জেনে মনে, কুজবুদ্ধি পাখী " পড়ে গিয়া হেন ফাঁদে আছা মনে রাখি। " बरेटन अट्रन्ड बरम काथा आया तत १ " দেহৰংসে আত্মান্থিতি শিশুবুদ্ধি কয়। "ৰড় ৰড় চিম্বাদীন সুবিষ্কু পণ্ডিত, " ঈশ্ববিদ্ধি বিষয়ে স্পন্দিশ্বচিত। " यादात आहरत नृष्ट नेवरत विवान, " যাহার বিশাস আহে অর্গস্থলে বাস : " তাহারা সভত বিশ্ব ঈশ্ব-চিন্তার,

" ঐহিক হুখের তরে যুত্ব নাছি পায়।

'' বড় কাৰ্য্য অনুষ্ঠান হেন লোক কাছে. া আশা করা সম আর মূর্যত। কি আছে ? " " স্বনীবঙল ছিত যদি সর্ব নর: '' ইশ্বধেয়ানে লিগু করিত অন্তর " কোখা পাইতাম ভবে সব জনস্থান, "মজার সংশার হতে। অরণা সমান। " অধিক বসন্ত আর কি কব তোমারে 🚉 " अगनीम शहकाम कथा म भारत " শিশুসম কথা জ্ঞান হয় জেনো মনে, " देश व थाकित्न कर्के कडू ध डूबरन 'নছিত সূজন শুন, জনক কখন ' পুত্রেরে পীড়িতে এড কেশির্ল স্থাপন " कतिए भारत (इ. मधा १ एवं मगांगक्र, " (म कि (इ कथन मक जननी-अनश-'' স্থিত পুত্রবারে নিতে ? ঘেই দয়াময়, " তার হেন কা্যা কভু সম্ভব না হয়। "भग्नामग्न नाहि भारत अन्न जुलियाद्व, " मश्रामश क्रन कि ए शक् करत कारत ? " অভএৰ কহি শুন বচন স্বার, " त्रेयटत विथान करत जन्म वृद्धि यात्र। " जीवत्य याम्न जीत्य अरह वृक्षिशीन, " मकात जरमारत मका नूठे म किमन। " (य कार्या नाधितत स्थ सन्दा छन्त्र, " (म कार्य) कदर मथा निर्देश-समग्र। " य कार्या माधित एथ तम कत्रदम भीभे? " এমন যে কয় তার সহিত আলাপ "

जीवत्वत कथा अनि वमसक्षीत, অপ্রতিভ হলে কছে বচন কথাব। " আৰি কৈন তনি বারু তব অনামত, "कानीरमं मरशास्त्र कत्र मञ्छ। " পুরাণপ্রসন্ধ হলে উঠে ভাব-রস, " সে প্ৰসঙ্গে আজি কেন এমত বিরস। " কত ভক্তি অহুরাগ প্রকাশ পুরুষ, " সে কার্ষো বিফ্লাগ আজি শোভা নাহি পায। জীবন তথন কছে মৃত্ন মূল হাসি, নফা দর-রেখা তার প্রকাশিকে আসি। "শুন্তে ৰগন্ত কহি সুসার বচন. ' বোক। जूनावाद काँम केश्वेद्ध शूक्रम। " नेबंदत यनि मा श्रीक या पूर्धकन, " মোর অপ্যশ প্রি পুরিবে ভূতল। " तकित्त मश्मादि कद्व पूर्वमल महा, "তাই হে বৃদ্ধ রহি সভয়ে সভরে। ''করিবে ভাহারা ভয় ঈশ্বরে নিভাস্ত, " করিবে অভজি ষোরে ভাবি বৃদ্ধিভাগু। " जूबिएक जारमज मन भूकि (इ जेबरब, " नेर्नरत छ। दिन। क्ष्रु अ मम 'अहरत। " नेबटत ककर छत्र. मकर भानव " मजानूर्डि पोड़ा अम मिस् कति मन " मानगरामना ऋष मा जन्न मेगरत, " नेषरबद - जर्ब कुर्छ नहिन जल्दत। " भूमिछ कबिक्री जाँबि यटन विम् शारिन, " ভাবি दशु समंगीत दहांक नहाटन।

'कदरगड़ केंद्रि यत थानम वेचता, " বাসারে **প্রণা**ম করি জানিছ অন্তরে,। ' न भाजां जिल्ला भूकार एवं के बंद निर्मान, '' ধর্ম অর্থ, কাম, মোক্ষ, লক্তি নারী স্থান। " या किছू ज्थमाम्धी जाह् अकूनत्न, " (मणि (म तम्भी-तक् क्ष्म स्वर्ण। " বসন্ত হে ভূমি অতি বিশ্বাসী আমার, ''বন্ধুভাব অনে। জ্ঞান নাছি মদ আর। " গঢ় কথা তাই হে তোমায় বলি আমি, '' इश्र न। अन्द कथा (यन जनागांभी। "এরমণী সঙ্গ যাতে ছয় স্মিলন, " উপায় ভাব বসন্ত তাহার এখন।" अंदर्भ अभव कथा बमय निन्धित, জীবনে কছে তথন বদন দশ্চি। " ওগো বারু মহোদয় আপনি পণ্ডিত. " তর্ক করা তব দৰে না হয় উচিত। " कारलक्ष्म वहम लाख कडि अधात्रम, " मार्थक कृत्त्र हु बाबू जाशन जीवन। " যা কছে পণ্ডিড জনে মুখেঁর তা নীতি, " মূর্বে অন্তরূপ করে পথিত সুরীতি। " जाभनात कथ बाबू ताबि बिट्टाभित, । " उन माम उर्न कति किन्। दुबि धति! "না থাকিলে মম পুর্বে পরকালভর, ें (जीमायिनी जभनाती जटन जक्तनत " मिञाम मिनन कति कठ स्य कमारन '' কহিব এখন তাহা নাহি আংগে মনে।

" या হবার হইরাছে চার। নাহি তার, " इत्र मिर्ज्य धर्त . इरेन आगार.। " य जाजा कतिरव नांचू कतिव मंन्यत्र, " পরকাল ভারে মন মানস জাজ্র "कथन महिरच जात्र कहिल मिन्छत्र, " মানস করিব সিলি নির্ভয় জনয়।" এত वनि প্রভুষ্টন लहेश विमाश, বসিল বসন্ত জন্য মিলন উপায়। অপরাহ্ন সমাগত ছেরিয়া বসন্ত উঠিল ত্বরিত মন যুক্তি করি অন্ত। नाशिजिमी नाम अविशिष्ठ हरन खुदा, একটী বাদক সজে ভাবি ধরাসরা। वानक बमार करह किছू मृत गिहा, " অই নাশিতিনী বাটা দেখুন চাহিয়া।" এত ৰলি ৰসন্তৱে প্ৰাস্থান করিল, নাপিতিনী ভবনে বসন্ত উত্তরিল। "নাপিতিনী মাসি" বলি করিল আহংন, यूनिन गुरंबर बार नागेबाह्यान। বাহিরিল নারী এক বয়দ আব্দাজ তিরিশের ন্যুন নতে অনে নান। সাজ। যৌবন-প্রস্থান তার হয়ে বিক্ষিত. নবরাগ ধনে সে গো যদিও ৰঞ্চিত তথাপিও মাধুর্যার কিছু আছে ওঁড়া, भूतमा इर्ग (त यथ। इरे(ल रूड़ा बारक अधिकात करि किছू श्रुटमांखन, হেরিয়া বাহারে ভাব কতই নতন



উঠে वर्न मनै किटिंग ; वश्र किटिंग कि नव इडारवानत इस देश . व तमली। भाकामाका वर्ग हेक छेड्डान शामन, म मिन्या कारह कांशा भाषित छेज्जन ? वनगणन जांद्र करत छन छन. পুর্ব দৌন্দর্যোর এবে পরিচয় স্থল। অপাঙ্গের ভাব তার হায় কি স্থলর, ৰণীভূত করে যাহা যুৰক অন্তর। ् अकर्कात मत्नाष्ट्र कृषे भारत्वाभव, তুলি শির গ্রিমায় র'তে। নিরন্তর। সভাব বন্ধ কুলান এবে গেছে তার, मिनिगा स्थारत अल इसाई वादात। তাই ভারা নতশিরে হ'য়ে মিয়মাণ, निक अम वारम एकि वाधिशाह मान। श्रहन तमनी यक नमछ-मनुद्रश, দাঁড়াল ভলিমা করি হাদি হাদি মুখে। দাঁড়াল শত্নীর তার হেন ভঙ্গি করি, मर्गाटकत मेन यान लहेटक हित्र; क्लिकिवध्रत इति वमछ क्रमात्र, সম্বাধি কহিল ভার বচন সুধার। " ওগো নাপিতিনী মাসী ক্ষম তব সনে, " আছে গুপ্ত কথা কোন কহিব গোপনে। "" অতএব চল বসি তব দরজায়, " গুপ্ত কথা কহী নয় বসিয়া রাস্তায়।" শুনিয়া বসস্তবাক্য নাপিতিনী কয়, " जनाथिनी बारम आंकि है। रमत छमत्र।



" जनाविनी नामिजिनी महि " छव कथा, " প্রিতের সঙ্গে কঁবা রাখালের যঞ্চ। " যার মুখ দেখি আজি উঠিয়াছি প্রাতে. " নিতা তার মুখ আমি দেখিব প্রভাতে। " कि कथा जारह भी बाद उप स्मात मान, " চৌকি আনি দিই বৈস, কছন গোপনে " এ পথে কদাচ লোক যাতায়াত করে, " কহুন কি কথা আছে নিঃশন্ধ অন্তরে।" এত বলি নাপিতিনী বাটী-অভান্তরে, চলিল চৌকি আনিতে দহাক্স সংরে। ক্ষেরিকবধুর কেন, ছে পাঁচক জন, वनार्छ बनर्छ बाद्ध ना मतिल मन, जवश्र तुरमाह जारि मामह (म नाहे, (तरम म समक जान हित्स नर्भ-शाई। भगवासं नाभिजिनी अदब्धिया घरत् कोब मान किं कथा (यन प्रकृष्णत বাহির করিল চৌকি বাঁধিল শিকল গৃহদারে, মুখে তার হাসি খল খল। সচকিতে নাপিতিনী আনি চৌকি দিল, বসিয়া বসন্ত তাছে প্লয়ে সন্তাবিল। " ওগো মাসি খন খন জিনাসি ভোগায়, " (পরকর্ণে গুল্ক কথা নাছি কেন যায়) " মোহন ভৰনে তৰ আছে ৰাতায়াত ? " চিন কি মোছন-মারী কই গো পাজাৎ। ' কেমন স্বজাৰ ভার বিৰয়িয়া " उर्गा गामि वन वन चनानि कानइ। "

কহে সে কেন্দিকবধ্ মুচকিয়া হাসি, **इ**ष्ट्र म्थू वारकः वभरख मखासि। " ওগো বার মহোদয় মেহিন-ভবনে, '' সদা করি যাতারাত জানি পুরজনে। " গোহন-রমণী সহ আছে পরিচয়, "কি গুল তাহার কব ওগো মহাশয়। " যেগুণে দক্ষের গৃছে প্রতিনিন্দাতরে, " তাজিল সভী গো দেহ निर्ভेश अस्टर्सः " যে ৪৫৭ জানকী নিজ পাতিভক্তি তরে; ं পতिमक दनगाम गाना क्यांखरः : ' যে গ্রেণ লক্ষীর এত ভাবে সমাদর, े (यह आत्न मज्ञश्रजी भूटक मर्क नद , ' সে সর্ব্ধের গুণ তাহে রহে উত্তলিয়া, ' দে গুণ বর্নিব আমি কেমন করিয়া। " (य श्वरण दमनी कार्जि मानरदद्र शीहा, " (मरे धः । विভृषिता अरे(गा स्थीता , " (य १९०१ तमनी इश नत-कर्श्वात, .. " সেই গুণে সমুজ্জ্ব অন্তর ইছার। " বাগানে পুৰুষ জাতি যন্ত নারী-গুণ, ं वित कि यमि जात्र करत मक छन, "তবুও ভাহাত ওণ নাছয় বর্ন, " আদি নাশিতিনী তাহা বৰ্দিব কেমন। " কুলবালা গ্ৰীণী নারী কথা মুখে তব, " मंत्रीय निरुद्ध अनि आंत्र कियां कर।" नाणिजिनी-कथा छनि वमस् वनम् राना ज्ञाम-त्रविद्धाक सूब्र (यममे)

330

क दबना बम्हन वर्षक बहुने। ध्यन मुक्त, শিশু-জাস্য হয় যথা পেলে তার তুক। চালাকি ঢাকন দিয়া বদনে তাহার, কহে কথা জবশেষে ৰসম্ভকুমার। " কহিছ তুমি যা তাহা পারে সত্য হ'তে, " পড়েছি বিণাকে বিড় কছিব কিমতে। " আমাদের এক বাবু হেরি সে কামিনী, " পাগলের প্রায় ভাবি দিবস যামিনী। " यनि ना जुड़ांत्र मत्न इस मचिनन, " নিশ্চয় ব্রিটান বারু ,আপন জীবন। · " অতওঁৰ ওগো মাসি ইছার উপায়, " করিতে হউবে তব কহিছি ভোমায়।" अबि नाशिजिनी-वर्षे मिन कार्य शंठ, বসস্তে সম্ভাষি কছে তাছার পশ্চাৎ। " ওগো বাবু মহাশয় আর বোলো নাই, " আমি সে কেমন মেয়ে জানেন গোর্মাই। " বয়স হলে। যে এত বলু কু দেলি কেছ, ু" আমার চরিত্তে কাৰু আছেগো সন্দেহ। " অনাধিনী নাপিতিনী থাকি একাকিনী, " छमत भूति त्या थाणि मिनम यामिनी। " थानतीत (थामृङ्कं मम कर्ष नज्ञ, " অপুশনি বলিয়া তাই রকা মহাশয়।" কৰি কর ভাৰ ভাল খোল দেখি দোর, হাতে মাল বলে চোর "নহি আমি চোর (" वंगल दुविद्या मर्ग होका- मुहाजना, मिन नाशिजिनी-कृत्व मर्कामायहरा।

(इति दोशार्क मूर निशिति नी मन. राला, अवीज्ञ ननी ज्ञात (यमनं। না হইলে কেন জব নাপিতিনী-মন, গলাতে মানব মন কি আছে এমন ! সুধীমন দ্রব করে পূর্ণ হুধাকর, ञ्चभीयन ज्ञव करत भ्रष्ट मशुर्वा , किन दोशावत-पूथ विवेत एवस. কি দ্রব্য হাছে ভুবনে মিটাল এমন ? যে পামরে কোন জব্য জব নাহি করে, मुक्ता क्षू क्षू क्राइ अंदिश मन इद्दा। किरम मठा मिथा। करत ? मिथा। मडामम ? किट्रम धर्म ज्यस्त्रम ? ज्यस्य धरम ? এ প্রমাউত্তর দিতে চরহাত নয়, দোবছর-রজত চন্দ্রমা প্রীতিময়। कर्णहै। म-वमन कतिशा नित्रीक्रण, নাপিতিমী শির নত নাসরে বচন। চাতুরীবসনে ঢাকি তাছাব বৃদন, বনতে মুচকি ছাসি কছিছে তথন। "कि वनिव अर्गा नांदू उव मिश्रारम, " अक कन धनी कछ शाहरहन थारन। " প্রাণ দিয়া উপ্রকার করিব¦রে হয়, "মোর অপ্যশে বদ তবে কিব। ভর। "যাহাতে ভাঁহ্লার হয় পূর্ণ মনোরথ, "করিব উপায় হেম করিত শপথ।" ঁবসম্ভ তখন কৰে "শুন ওগো যাসি, 🧎 " হলো তৃপ্ত প্রাণ শুনি বচন হিত্তাশী।

" মোছন-ভবনে তব এখনি গমন *ं कतिटा इकेटन ७८११ खनक उत्तम। "চলিতু এখন আমি আপম বাসায়-" সন্ধাকালে আমি আমি ডাকিবো তোমাঃ "यमि कृषि कार्या निष भार कतिवादत, " इरे मंख ठोका वांतू निरंबमं त्यामारत । " এতেক কহি বসন্ত করিল গমন, इता छेडाडेन जां नाशिकिनी-मन। अकिंदिक अर्थामां जमामित्य छत्र. আকুল করিল অতি ভাছার ছদয়। कर्ছ कथा नालिडिनी निक भन-गतन, " विषय विभारक आधि होकिन अकर्।। " পতিত্ততা সতী অতি মোহন-রমণী. " কহিব এসৰ কথা না জ্বানি কেন্দ্র। " জথবা আশন্তা কিবা দিয়া প্রক্ষোডন, "ছরিতে তাছার মন করিব যতন " यकि कार्शनिधि इग्र मछिव द्रष्टन, "ना इडेरन कार्यामिकि छन्न किया भन ? " ठोका मन करना नांड जीवांत्र अथन, " बिर्व कि थे हैं। को इ'रम विकल यउन।" गांड शांह छावि बालि। वी शिशा घटत. পরিবিদ ধৌতবাস ভাতীব সভুরে। দাঁডভরা কালমিলি গাৰ্ভরা পাল, जनक हुन्छि करत (रुद्धि कार्ड थान। চলিল দাৰিনী শীজ (নাপিতিনী নাম) মুদ্দ মুখ্ ভাত আত্তে তার অবিরাম।

(रामहे। है। निर्देश जाध मेडिया मर्गाम, দৰ্শবৈদ্ কটাক্ষবাৰ হানিয়া স্থৰে: ধুষ্টতাল, পরাকান্তা করিয়া একাশ. / চলিল দামিনী , তরা মোহন-জাবান। (इ १/१०क मझन्त्र अवह वहन. খোঁমটার স্থবিশাস না কর কথন। (शांभके बिनम याद्र कर मर्वाधन, যোমনা তো নহে সে যে চাতুরী ঢাকন। चनश्चिम अजाखरत दमनी-नग्नन. मत्म कति (जारमें) चैट श्रव-गम्म। খোমটা তো নাছে সে যে ইসারাজাবাস, ভটত হাল ঢাকিতে ঘের যোৱা বাস ! উপভিত নাপিতিনী মোহন-ভবন, " क्वार्यः भा वस्त्र स्मात्र " शहर मश्चार्यः। (माहिनी क्रुक्त ही (इथा विमन्ना विकास. নিযুক্তা আছিল। রামায়ণ অধায়নে। दामायान महे जन्म शिक्षा कामिनी यशोग जार्माक वान क्षत्रक-निमनी (विकिञा द्राक्रमीशर्ग मानमवनमा वाजी मारक प्रशी एक ब्राचन वामना। जानकी-इ:थ-काक्रिभी कति व्यथात्रन, মোহিনী-অন্তর বোর রিগানে মগন। नवनीछ मम मब बाद्यांत् (कामल, তার হদে পরছংখ যেন রে অন্ন। क्यनिनी शक्क इत्र कर्छक त्यमन, পরছঃধ কোমলার অন্তরে তেমন।

পড়িতে পড়িতে চকু অঞ্নীয়ে ভাসে, मीजांब्रद्ध मह निक विशाप धकारण। " छर्गा मा कानकि नजी दमगीमधल " রমণীর শিরোমণি তুমি ধরাতলে। " उव द्वःथ मत्न निक इश्रंश्य कृतना, " করিলে পলায় হংথ ইন্দ্রনিভাননা। " खामीत विरम्भन्यां क्रमग्र-म वादि, " পুনঃ শক্তপুরে বাস পারাবার পারে: ° মধ্যে মধ্যে চেডিদের কথার মন্ত্রণা: " मर्था मर्था मन्तरिश्चत काम-छेकीशन।; "কতই যে ধৈৰ্যাগুণ আছিল ভোষান, "তার কিছু জতুত্তর হয়না আমার " मक्तारमंत्र जक जन्म क्रव देश्या (मह, " মম ক্লেশ হবে দুর আছে কি সন্দেহ। '' अमन ममद्र माणिनीत वाकाखतं, প্তছিল মে। হিনীর প্রবণ কুছর। হুণ্ডোপিত পাক্তিসম উঠিল মোহিনী, मिथिन मधुवंशीत माँकारत मामिनी। मामिनीरत पृष्ट् दारका कति मुखायन, কহিল মোহিমী ধাী প্রকৃত্রিত মন। " थरमा नाशि जिनी वर्षे गरमा कि इकन, " वह मिन (मध्य मारे वन कि काइन।" मायिनी उपन कहर डेरब्रक धाकामि, " नाति रंगा क्षिति क्षण यात्र जानवानि। " ये जन्मि कर्डामानू गाइहन अवारम, " आंगितम अ वारमं मम हत्क कार्या आंत्म।

" এ दिन स्थिति उद अकृत कमन, " यि विम - अष्ट्रंन - मधु करत छेन मल। " এ इः कि कि कारत. डाटर मारे ज्लि. " হতাশ তপন মুধু শুষ্ছে কেবলি। " कत (कांध कि कंत्रिव यमि विल जामि, া অতি অর্নিক জন হন তব যামী। " ছিট। কোটা রম বোধ থাকিলে তাঁছার, " এমন নারী তাজিতে কৈছা হয় তাঁর ?" প্তিনিक। निज कर्न क्रिया (माहिनी उनन कट्ट मन्। भिड मन! " अर्गान नाणि जिनि निका ना कह नार्थित, ' সকলি জানিবে মম অদ্ফের ফেব। " मम (थममर उर्गा नहात गांगत, " নাহি কর নিন্দা তাঁর না জানি অন্তর। গাহিতে সকল কট পারি এ ভুবনে, " নাথের নিন্দা শুনিতে না পারি অবণে। " দামিনীর মুখে আর ফা্রে নাহি ৰাক্ (माहिनी डाकिश निन नाशिजिनी काक। वह करके पूर्ध जात कथा: वाहितिन, स्माहिनीद्व अहे ऋरु भट्ड मञ्जाबिन। " यामी सात्र ने जमि जाहिन यथन, " তাঁর নিদা শুনি কর্ণে স্থানিত আবণ। " वर्गातक हूला गर्ज इरेशार कान, " এবে নিন্দা শুনি তার হা পোড়া কপান " জন্মে কি ক্লোধ অন্তরে 🏲 ক্লেশ দিনকত, ্ " কোথা রতে সেই ক্লেশ পেলে, মনোমত

" রাসিক পুরুষে বল, স্থা বিগুণিত " इंग्रे जना मालू (क्षेम इर्ल मश्यक्ति। " অণর পুরুষ সহ প্রেম যে নারীর " নাছি, ওগো, জেনো তার বিফল শরীর। " সেঞ্চন প্রেমের ধার কছু নাহি ধারে. " প্রেয় ঠক অমুদা ধন নাছি জ্ঞান তারে ৷ " আরো দেখ তৰ ছংখ নাছি যে ভাবিল, " তার সনে (প্রমাসাপ কিবল হইল।" मामिनीइ कथा अनि साहिमी स्मही, কাঁপিতে লাগিলা কোন্ধে শর শর ধরি। কহিতে যাইয়া কথা কথা নাহি ক্রে, ভর্জন করিয়া করে কৌরিকবধূরে। " ওলো ছুটা ভ্রমাত ভোরলো এমন, " কছু নাহি জাৰিতাৰ জাৰিত্ব এখন। " মিষ্ট কথা কৰি তুষ্ট করিতে অবর, "মুখে মধু ছলাছল অন্তর ভিতর। " দূর হ লো বাদী হ'তে ভাল যদি চাও, 'খলুরে কছিব যদি ক্ণেক দাঁড়াও।" প্ৰলাৰাত পথ নাহি পাদ নাপিতিনী, দূরে গেল বাক্জাল ভক্তাতে মোহিনী। উপস্থিত একবারে আদি বিজ যরে, দেখিল বসভে বসি রাভার উপরে। मामिमी बमारा पार्च क्यार क्रांस क्रांन थान, कट्य कथा काँकि काँकि छोत्र मिश्राम। " ওগো বাবু ভৰ ভৱে কভ হুঃৰ মই, " मि इश्ल कहिएक मूर्य कथा मात्र करे।

' পরের ইফ্ট গাধিতে স্থমিট প্রধার, " হলো ভাল দেখ বাৰু পৃষ্ঠেতে আমার। " কি কছিৰ নারী জাতি দেখাবার নীয়, ''নজুৰা বসন খুলি বারু মহাশয় " मिश्राजाम शृंकेमिट्न श्रहादित हिक्क, ে হইলাছে ভয় হাড় মাংস ছিল ভিল। ' আমি জানি সতীলক্ষী মে হন-রমণী, ' তার সমা পতিত্রতা কে আছে অবনী গ " तुक्तिमञी (म शुवजी कथ) त्रक शिरह, " প্রলোভনে ভুলে দে কি বলোগো আমারে।" विन वमर्गरंड जानदि वमन, आहिल नाशिजिमी कहिए कमन्। विनिष्ठाति ७ समिति होगाँव कानाह, ভুলাতে বসম্ভে কর কত্ত উপায়। ाहि लाव छोका किएत स्म मन्ना (ना नाहे. কেন কর জঞ্চপাত বলি আমি তাই। मामिनीह करा अनि वमलकुमाह, পড়িল নৈরাশ-ক্রদে কথা নাহি আর। शीति शीदि छेপश्चित जाशन वामात्र, কছিল নিজ প্রভুরে কথা সমুদার। জীবন এ সব, কথা করিয়া এবণ, वियारिक मान्य जात इहेन मग्न। পাগলের প্রায় চাহি বসত্তের পানে, किर्टि नागिन कथा स्नान बहारन्। " अदह मधा औत सम्या शाहेब क्रमात, " করহ উপার হেন বাঁচি না জীবনে।

" त्म स्वाही थान जाड़ि नरेहर सामाह, " धार्गहाड़ा बरेबाट्ड मम (नहागात। " भूनं। दिस इरेशा द्वा त्र कुछ अमिन, " জीत्त्र-कि जीवनधूना मद्र कडू भीन।" वमल उथन करह "वांतू महामंत्र, " সে ভার জ্যার রহ নিশ্চিত হদর। " मिनारेश जातं नक भी अ आमि निव। " কোন্ সতী সে যুবতী নয়নে দেখিব।" त्र शांठक. वमरखद्र क्मग्र-गगरन, পাপ রপ চিন্তা-রান্ত ভয়াল একণে সমুদিত আসিবারে সতীত্ব-তপন; **छेजनि** य पाहिनीत मानग-गगन চির মরি রহিয়াছে; মুখচন্দ্র তার, সতীত্ব তপন কাছে আস্পদ লক্ষার। तमणी-वनन मद हारमद कुनना इत्र (इ) यमानि श्रुधि उत्र कि वनना সভীত্তরতন সহ উপমা রবির, अमानित डेक्यांडित स्टमाय शरित १ े পাতিব্ৰভা निममिश य क्रिन गंगाम, কেষা চাহে তার পানে লম্পট লোচনে ? राष्ट्रिक मोस्सर्ग पूर्व बन्ही आनम, অভিত্রিক অ্বমায় সভীর রভন मण्यूर् पृतिं के रेकरमां; यथा निमक्त, भंद्र-त्रथ-डीक्न-कृत्द्र (मृत्थं (कान् नद्र? यथार्थ उपनि के हाटक मजीव शारम ? मर्भश्रीकृष करत सन्ता नगात्न।

, 4

नगत्र-क्रमश्राकारमे (मिकि'-शार्थ बार्ट, দিনম্পি সঙ্গোচিয়া শত রশ্মি-বাছ कॅमिट कॅमिट मिला वड्रांक्टर बोध, ধরিয়া রজিমা বর্ণ পেঁয়ে মনস্তাপ। দিবস বিয়স মুখে করিল শ্রন্থান, বায়ুচর পলাইল নিজ নিজ স্থান। গগন তারকারণ মেলিল লোচন, নির্থিতে বসন্তের পাপার্ড মন। मभीत्र किहू कर्ग खड़ा डांटर तरह, বসস্ত মন্ন জ্ঞাত হয়ে পরে বছে। ছঃখ ভার মমাচার কছে তৰুগণে, - ঝর ঝর শব্দে তক নিযুক্ত জন্দনে। (मनिन जांदांता जाहे महत्वाहान, খদ্যোত নয়নরপ করিরা ধারণ। তিমিয় গম্ভীর ভাব করিয়া ধারণ, সাহায্য করিতে এলো বসন্ত মনন। বসন্ত-বাসনা যে ছে কিবা ভয়রর, ত্রবণ করিলে স্থারি কাঁপিবে অন্তর। না জানি কেমনে আমি করিব বর্ণন, শরীর শিহরে উঠে কম্পিত জীবন। कतिवादत जाकारेना कश्यानाञ्चती, প্রার্থনা করি পাঠফ তব কর ধরি कनकान ; शूत्र द्वांश्रा /मत्रा ध्वकानित्रा, এ অবধি দেখা শুনা বল আখাসিয়া, হয় না হে শেষ যেন; ধৈর্য তোমার निः (निवि कतिशाष्ट्र मिथमी जामात।

यामिनी अमरातियी ब्लाट्ड निजा मित्रा, रिश्वाक्षात भूत द्वि सन रेश्वा मित्रा।

र्वर्शमर्गः।

"The cloud-capped towers, the gorgeous palaces
The colemn tomples, the great globe itself,
Wea, all which it inherit shall dissolve"

প্রার্টকাল, গ্রান্মণ্ডল क्षिमी (धति धरे उपक्र করিল জাধারময়: হেমন্ত উদয় মেন বর্গছলে, কুহেলিকাময় 3 TM गगन आक्रम इपि कामिक्रमी क्राम्भ, মোদের জনদকুল কুয়াসা স্বরূপে (मत्वत अजीशमान, अर्गमद्यावद्य, दिक्ति कमिन के छ्यार छ आकादर, इत्ना द्वि एक जारे प्रथा नाहि या म নক্ত কমল কলি অভ্ৰহিত তায় ৷ कामिश्रमी नेशाबिजा निमनी भिष्ठारिया রোধিল রবিয় পথ দাঁডাইয়া বুঝি তাই দিতে দোঁহে বিরহ-মাতনা ঈর্বানিত। কামিনীর এমনি কামনা। तकमी अधीम अमिन आधात, বর্ষার বরিষণ বড়ই कात शरक ? मक्डिमणा व यहे जन, রমণী-রউন পুরঃ মনের মতনঃ यिन बूटि काटमा जात लाहामा लागात्र, क्ट्रस्त ममं द्रथ कोशांत्र ध्तांत्र!



वाम् बाम् हर्षि इत्र धारण क्राप्ति, তৰণ যৌৰনা নাত্ৰী পোডে কাছে তায় अफ़ अफ़ ডाक्क (यह छात्न अफ़ कार्न, अंत बात बारत जन कूलनंत कारन। তড় তড় তড়ে তোয় তকর পাতায়. কড়মড় কড়ে বাজ দশতী রসায়। সুসার দাম্পতা-স্থ অসার সংসারে. **डेथ्टन वत्रवाकाटन त्थाय-भाताबाटत** ? नकरीमल मण्यजीत मिर्छ वर्षाकान, महिट्रात वर्षाकांन कि वन खशान। পর্ণের কৃটীরখানি তাহে ছিজ শত, টুপ টুপ পড়ে নীর ত্রছে অবিরত। বসন ভিতিয়া যায় বরিষণ ছেলে, নিজা নাছি হয় যরি আর্জ ভূষিতলে। ভিক্ষার্থে বাহির হ'য়' বড়ই হুকর, बस् वास् इचि इत कक वात वत। कर्माय शृतिंड श्रेष कांत्र माधा छल. 'বাহিরিলে ভিকে অল বর্ষার জনে। वह करके अक मुख्य यनि जिल्ला कर्षे, উনন ভিজিয়া মরি জিজাকার, যুটে, কুংকারিতে ফুংকারিতে bu ক নীর করে, अर्क निक अब जाक खूरिना छेन्दर। मलाब जरमात धरे स्थ-वःथ-मज्ञ, अक हत्य (बहुन इन्नि ज्ञांक ज्रास्त वज्र । এক পার্শ্বে অিশ্বকর স্থান্তি চন্দ্ৰ, जन शार्थ विका गर्भ बात त जीवन।

अर्क शार्थ नैकन-कोगंत छक मन, जना भार्य विमुख्त कामात्र कीनन्। আগত বরষাকাল ধরাপুর্ণ জলে, (य शार्थ कितां अ जांचि नीत छेनमटन ! श्रवधूनी भूर्गकात्र त्यां धतं वतं, रेगतिक वत्र भीत भारम मानिकत। क्यांत विद्राह कार्तः इकेट मिक्स , বায় বহে বেগৰান তরী ছুটে দীন। जबनी विरमय अक इस्ते भाम जरत, माँ जि हात्रिकन वित मासि हाल धरत। ভিতরে হুইটা নর, তার এক জন, वारमज्दर निया गछ खडेनार्म मन। नश्न जाह्रवी जीत जाइ मध्नगन, উত্তরে কোম্পাসস্থচী থাকে রে যেমন। क्रमत्कत्र मन किश्वा थांकरत्र (यमन, यत्य मात्र। अञ किलि बिल्स्म गमन। কি দেখিছে তরীন্ধিত সচিত্তিত নর क्रिमिर्स ? नाहि यन नहीं (इ जल्द । প্রকৃতি-মুদ্দরী শোডা আত্মিনীতটে : কার চাক শোক্তা হেন কছ অকপটে? काथां शामश्रद्धनी नमीउद्धे लाद्ध. य माधुती नृतीकृत करत मनस्कारक। कमच कूसूम (कांच। ब्राह्म विक्रिनिड. যাহার সৌন্দর্য ছেরি মন প্রকৃলিত। স্টাক দৌরত তার কাড়িয়া প্রম, পৃথীসতী আঁত করে আদরে অর্পণ।

हकू वर्ति क्रिश जानि (तरे वानद्यक, थूक्प शरक स्टा करा छिष्क क्**स्**रमन উপরে বসিতে আছে হয় যদবান, সে আৰাগে অনিমিৰে আছে মতিমান। কেতকী কুমুম কোধা আছে বিকসিত, স্থ-মুরভি চারিদিক করি আমেদিত। क्रिज्की कूष्ट्रमांच वात्रविकात्र, **ज**जीन (म डेशरबांगी डेशमा निवात। কেত্রী কুমুম শার, বারাজনা বর, পृष्टी आমোদিতকাरी টামে অদি: नद। পড़िল बुँशांत कारन इंड कांठा यह, জীবন ভূঞ্জিতে গিয়া অজীবন কর। কামিনীকুত্ব কোৰা শেয়তে তৰ্ময় याश्य जाजारन किमानि मृत इत। कामिनीकुच्चम उक, विधवा उक्नी, जननारा सम लिटिश अरे राम, छनि। কামিনীপাদণ নাছি হতে কুন্থমিত, इहे हाति मिन मर्था त्रीक्षी निक्छ। **उपनि वक्षत्रमंगी योवन गमः**क्र. इरे निन श्रुट्थ कार्षि शक्तित्र समरब **शहत शिंत्रकृतिक विश्वके**्रकन, योवन जड्र ७३ वर्जिंड (भाष्ट्रन) কোন তক্ৰৱে বসি বিছল্মগঞ্জ मधुन्दरः नीमकत्त्र श्रम्भिक मेन। कान उक्बन-भटन जाह्न वीत जन, भवना कि वनिरंडां कवि कवि कन केन।

कि विनिष्ट हैं यनि दर्भोठेक मञ्चलक्ष जिल्लामा कह जामार्टन अस ममूनहा। "ওঙ্কে" তক্বর তুবি নাছও ছঃখিত, " যদি ছে দপ্ণ তব এবে, কলুষিত। " লতিকা-দল্লিতা-থীব। করিয়া গ্রহণ, "পড়িয়াছ নত হয়ে দেখিতে আদন " जाकरी-जीरम तथ कनून पर्भाग. " কেমনে দেবিবে স্পট জোমার শোভনে! " षाञ्चक् वमञ्ज, श्र्नः कूच्य-ভূষণে " ऋभोडिए ह'ताः पूर्य विभन जीवान " (जिमात मर्लन होक) (मर्था द् धरमारम, '' বাড়'ইয়া অহুরাগ বাড়ায়ে আনোদে।'' ध्यमक्षक यथा कहि मधुत वहन, সর্গ শভাবাপর মান্বে বঞ্জ कति समाग्राटम निक कार्धामिकि करत, তেম্যি জাছবীজন সেই ভক্ৰৱে (गतन अखर यात्र) कहि मिठा कथा, সমূল বিশুল তবে কামনা সর্বধা। महत्र मबनी काथा नीतम-निर्वादय, 'শাৰি-কুর পুৰু _'ধুরি ব্রিতরে সভোবে। ज नब्द जबूरेच , त्यांचा त्मज मखद्रव, मिरिया जिल्ला हर्न मुख्के जीवन। মুতৰ জীবৰ পেয়ে কোৰা ভেকগৰ, केटकः बदद वर्षं कदक अस्पादि नग्न। जागीत्रवी जीत कांवा चर् नामिम्ब, **चिउन थी**डिकंत क्लांग कमन्न।

তহুপরি পাড় "উচ্ছ পুর্ব দুর্বাদলে, উচ্চ ভক্পঞ্ল পরে পূর্মিত খ্রামণে। উচ্চতর তক্ষণ পোডে তারি পারে, তাল নারিকেল শির শোডে সর্কোণরে। क्रभ-छेक्र कार्शमन पदीव चुन्नह, শোভিত ধাকয়ে যথা নগরাভাত্তর; वक्ठा अवर्ग जना सुमछा अर्पाम् জনপ্রেণী শোডে যথা স্থােডিত বেশে। প্রকৃতি কুন্দরী যেন তেমনি আসন. गृष्ठिन प्रकोनान किया उक्गण। তছপরি নানা জন্ত বসি ছর্মন, छाइबीत कनकन मिठान बहन अवन क्रिट्ड मृद्य अकाथ इहेग्रा, श्रवधुनी-श्रवकृष्ठा अत्म मन मिशा। " ওছে বিহল্প, কীট্ৰ, পড়ল নিচয়, ' " ভ্ৰমিয়াছি বহুদেশ হতে হিমালয়। ., " (मिथियाहि वह जह-चडांव, जाहांत्र, " मार्नदेवत में किस नहर ती कि काता। " निश्ह, बाज, मर्न आणि हिश्ख करेंगा. " ভরত্বর বটে এবা এই সে ভূবন। "মানৰ মতন কিছ ট্র কেছ নয়, " কোৰা লাগে সিংছ বাজে ? পার পরাজর। " बाज मर्ग जानि जरु बड़ा बर्छ बन, " मानत्वत क्छं थन नींद जूमधन। . . " अतुकि काश्तत अता मिथवादत मारत. " जब शहर किया कथा भागर जाउादर

" विभारम (कॅमिर्ड क्रेंड मड्ड यंडन) " मर्ग्यक दुक्तिमान इटल त्नहे कृत्। " मगिंधक वार्थ छे भाका या या करते, " ঈর্বা উছলিয়া উঠি ধরে না অন্তরে। " ঈর্ণা পরবশ ছয়ে তাহার ধংসন, ' अका थ गांनरम करत मना अरवस्ता। " অপরের কাছে তার সলা নিন্দা করে, * বিপদ হইলে কুথ ধরে নং অভাৱে ৷ " जान, क्यां हति, मिशांकशां, धारकनां, " শঠতা, লাম্পট্য দোষ, বীভংস বামনা, " ডাকাইতি চৌর্যারতি, আর কপটতা, " তাঁড়াৰি, ভণানি আর নফীমি, ধ্রতা; ' ইহা ভিন্ন আর আর যত হুস্রুতি, " আহে অধিকার করি মাৰব প্রকৃতি। ' रदक विश्वामः कद वाञ्च, जुजक्य, " না কর বিশাস নরে বিভিত ধরম। ' সত্যাপ্ৰয় বলি কারে উপলব্ধ হয় 🕆 " মিখ্যা ভিন্ন নাহি জানে তাহার হৃদর। " সরল **স্বভাষাপর জান** কর কারে? " তার মত বক্ষেন নাঁহিক সংসারে। " नजावान् बलि किंह मिथ्। जिल्ह ? " দয়া যে কেমন জব্য না,জানে সে নর। " किर मानवीन विन मिथांत्र कामायं? '' দণ্ডবং করি দানশীনতার পায়। " অপর কামিনী কেই মাউ জ্ঞান করে ? "লম্পট তাহার সম কোঁখা পূণী'পরে।



" ৰান্তৰ বলিক্লা কেছ দেখার ভোষার প্ "শত, শত দত্ৰৎ বছুতায় পায় ৷ " হালি হালি মুখধানি দেখিছ কাহাঁর ? " পুন্দ নিষে আহে ভার তীক্ষ খুর ধার। " मरहकर्भ अवन कर्-स्वराद (व ही छ, " অৰণা ভাৰিৰে তাকে তাৰ বিপনীত। '' धर अहे कथा छान जब काँच मारका. "कीवटम पामम कीटन नागिटन (इ काटकः। " দেখিছ কোপায় কেহ ৰাইভেছে নর, ' সম্ভাকরের তার থেকে। স্থে অন্তর। ं अमनि मानव (कारना, इहेवा मानव. " मानदान आगिहिश्मि जडीव छेश्मव। " गाउँड वज्रशं कांकि भाम वर्ग महत्र. " मानव विनद्या जोत्र कान माहि करत । " नाम वर्ग सम् भूमः शोत-वर्ग महत्त. "স্পৰ্ণিৰে অক্টাচ হয় ভাৰৱে অন্তৱে। "শারীরিক হছর্মন হ'লে কোন স্লাভি, " তার ভাগো কট ভোগ প্রপু দিব। রাতি। " কাড়ি কয় রাজ্ঞা তার। দাসর শৃথকে 'বাঁধিয়া তাহার পদ পংড়না ভূতলে। " अन्न जनदार नारे महीत इसन, " অপরে শীভিত্ত কোৰা আছে ছেন ছল গ " निर्माकारम जाकांकेलि क्रिक्टिंक क्रिक्ट " পড़ि दश यात्र बहुता आंदूह कि नटकह। "निवाम जाकाजी किन्न तारे बाजि करन, " बीवव ध्यकाम जांत्र एक गुनी'नेटव ।

अंके के में

" निर्मात डांकाउ यमि 'नारम अक नकः 📜 "দিব্দ-ডাকাত নাশে প্রকৃর অন্তর ' महत्त्व महत्व लाक 'धक मध'शारक, काब माश बारिम कारह अधि अख बार्ज न ্ একৈর সন্পত্তি হরে রাতির ডাকাত, শতের সম্পতি হরে দিন-দত্ম-ছাত। " अधिक आम्हर्या अद अहर सहगण, "দিবস-ভাকাতী অতি গৌরৰ কারণ। ' मिबाब जाकां कीर्डि स्वार्य कविशय, ' পाठक छक्तन स्थी भारत स्म वर्गन। · अडअर **कल्डा**नं मान्दर विश्वान কভুনা করহ শুন থাকিতে নিম্বাস।" काहरी कीरन कति कल कल दव। मञ्जाबित्ह अहे ज्ञाला की व कहा मन। উভ তীরে শ্রেণীবন্ধ হয়ে তক্ষাণ, একম্মে সে বক্ততা করিছে আবণ। কিবা রমণীয় বেশ করিয়া ধারণা म लोडा नित्रिथ मुझ नत्र कांत्र मन १ অনিমিৰে তাই সেই তরীক্তি নর, দেখি শুৰি ভাগি জাৰি উদাস অন্তর। অন্তর-বীণার-ভারে বেন হর ভাছার, अक्रिक्जिक्ती कत कतिम अश्वत। जर्मान वाकि छेठिम ता जडन-बीना, দেধনি ভনিতে পেলে রাজত সাঁহি নাৰ र जन - जलत - रीना चत्र क्रम्बूत, মরম বুবে স্থী স্চ্তুর।

े प्रक्रम - जखन - बीगा - बन स्मधन, একগতে হে প্রাঠক অতি সঞ্চর। প্রকৃতির প্রীতিকর শোক্তা বিলোকন कति उन्नीचि नत थामारम मगन। তাহার পঞ্চতির স্বীয় স্থীয় সুংখ্ हिन निमगन स्टब छेल्बर छेल्बर हा धक्रित अव-कार्बी म्हिन्द पारमारक পঞ্চেক্তিয় অবীভূত দেখি সেই লোকে তारे भट्छ मिशा कब महिख्छ यन : अवग ना श्रां कक् ना करव मर्मन। मामिका मा जान थाप्र जुक मां भीरम, ভিহ্ন। আই। দম এক সকলি অবশ। চিত্র পুত্রলির সম তাই সেই নর, भिरुका स्वा करत विम शत्थ मित्र। कर। (क शांठिक मक्तमत्र (कका अवे नतः) জ।নিতে উৎস্থক অতি তোমার সম্ভর। এজন তব জানিত হে পাঠক জন, চলিচ্ছ তরণী চড়ি সুধীর মোছন। शक्तिम अर्मभ मिबिबादत बाक्षा जात, क्रिय-वाम्भ-घाटम गंजि देवसूथ बाहात। (महे (म कारह उती पति जाताहन, विट्राम अमन जाब विवाह माहन। বনদলে নজ্তদ আছিল আছ্য়, मिममा। हिंसा छारे विसम विशम। यथा ना निरकोड़ी नकी छुनि धक स्रोन, সরসীর জন্ম জংগে হয় ভাসমান।

তেমনি তপুন ভুবি জনদ-দাগরে, **इक्तात्त्र जामगाम पिन्छिम आहरत।** दिहिङ्क अड्डान इरेट प्रकिन, धनावली यात जाति जत्म इत्य कीन निः मिरिक श्रीत अशहारक भनारेन, ত্মনি রে দিনমণি ভাসিয়া উঠি। সমস্ত দিবস ছিলা আধারে আক্তঃ, भित्र तमभ किला विश्य विषश्। ব্যাব বদন ছেরি দিব্য স্থাপিত, হ দিয়া উঠিল যেন হয়ে শান্দিত। সে দিবা সহাত্যমুগ কিন্তু হে পাঠক क्रवाही १४। (क्राना अनेश-भावक শিংমিজীণ উন্ধৃতে: যেমন ছানিল. পদতাৰ ছবাতে তমঃ অমনি গ্ৰাসিল। यनि अভिकार दाशी मि नियम-दासि, किया मिक्के एक्स स्थि वनमा धकालि १ গস্তুমিত রবি-কর তক-শিরে শোড়ে, कविद्र मानम-शाथी (य मोन्स्या लाएड মনোলাদে বলে গিয়া কুত্গিরি'পরে **न्रीकृष्ट कतियुद्ध आदिम अस्ट**द ; ফেরিবারে গ্রন্থটি_ন শৈক্ষা প্রতিকর, জুড়াতে দগ্ধ লোচন, সম্ভপ্ত অন্তর; मংकीसम कतिवादत श्रेक्ति सूर्या, ধরিবারে ক্তে করে হথের চন্দ্রমা। কিছু মায় স্থ-শনী ধরে কেবুা আরে ? त्म बाक्षा विकल यथा बता हट्यादत।

 खाउचडी खाउ क्रांच हिन मिन ग्रामिन, काँगे इत्ना कारखें (कांत वन-शेप) क्षात नमत्र निक्-नाह धानद्र। করিয়া আছিল নদী করি আলিজন। मिट्ट कति क्रमानां सुर्थ नगांभम, इड्राक्त निक्क कत कहिना क्थन। नारथत वित्रदश्मणी डाइ डावि कीन, मिसुत श्रेकां व केंग्रिक हिम्मिश मिक्ता मद्भा मधाग्र श्रम जिमित आहेल. निकात माडिय गाडि नाविक निम्म। একে সে প্রদোষ কাল, তরণী উপর পুনঃ তাহে, পুনঃ সেই মোছন-অন্তর। वृति (मथ महामग्न (म अञ्चत-छ।्व, সে ভাৰ বৃদ্ধিতে মম বুদ্ধির অভাব। श्वितन शेख (इक् भामभ मासाहि, কিছু পুর্বের রবিকর আদি জাৰি ছারে उज्जन हीद्रक थंड हरका जान मत्न, उक्कौंबि नित किया अद्योध नहरन। এখন সে জ্যোতিঃ আর দেখা নাছি যায়, তিমির রোধিল মরি লে চ্যাক লোড়ার। लोश इतमां उहाइ माने त्यन उक्रांग. निजा लिखांत उत्त बूमिन नहन। কোন কোন ভৰুবন্ন পূৰ্ণ আৰুঞ্জন कश्या जनम छाव कतिन धाइन। निविङ् भामभा भेज मोमार्वा जानहा. गुज-शर्न नीमा इतना (यम शर्मम् ।



उं जिल्ह रेटिश रकून मत्मद्र डेलार्स. निभीविनी जाँथि (यन गाँन मित्र विकारण। मत्म मृत्म कान इत्र त्यन निमीवनी, চক্ষু মেলি নিজ রাজা করে নারাবিনী। वांनिन तारिकान मील उत्री'लाइ, তারি প্রতিবিদ্ধ পড়ি বারির ভিতরে गानतम । व्यव्याध (यम क्षा क्ष्मिमिनी, जाहिन विनशं यह इत्य जनाविनी। শিবাৰ্যণ বাঁথি দল কৰে ক্ৰেমণ प्रजामक नमीजांके बद्रविज सन। मैं। एडर शंडन - संबं निमीत छेशाहर, इक्रमी**र**ङ किया यह ममूलिङ करहा শুনি সেই মধুষ্ক স্থীব শোহন, দেখি শভাবের শোভা, সহুষ্ট ক্রীবন। विहासमाधिनी निका धीटब काटल लट्छ, **उत्री'পরে বদিলেক প্রকৃ**র হৃদয়ে। िखां क्या भारत विकास स्थापन स्थापन मटकीयध, निकास, कि आहर अमन मन-म्रोनि-इत इर्डेविध ७ कूनरन! निजारमनी मिक्क निजा प्रिम साहरन। यामिनी याशन नेकाँते जदगी - छेशरत, পর দিন তরী বাহি হার্য অস্তরে চলিল‡ नाविकश्व भाष्ट्रन - जारमर्ग, विना उन्नी छेड़ि शोड़ि नाना मिटना व्याजनजी शता (भव धरे शता काम) कर्ग शत्त नकी (माङ) श्रूनः मृश्वयान।

बेहेत्रदश मंनीवाक (वर्धन कतित्र) **हिने नारिक्येग उन्नेती वाहिन्न** আদি উপস্থিত তরী-সিদ্ধাপাত মানে, শত শত সিদ্ধুপোত মধায় বিয়াজে। षादा गाँव किवा भाषा छनदृष्क यात्र, गगन गदिन जारह हांशि काडे मात। नागिम जामिक्र जिती दिन शह चार्छ. श्रुति मिल त्या इटनक न्यानम क्वाटि। শত শত ভরীলেণী আরোহী পুর্নত, সক্ষেণ হয় পার থবি বিয়োছিত मर्गत खर्मा मन; मन चर्डिकांद्र সময় বিশেষ হয় শোভা চমংকার। নানা জাতি নর তার বেশ নানা রপ मिशिया बाह्द छात हेटल छातकूथ। কর্মসান কলিকাত। সহতে গ্রামন कतिरह मकरम पत्रा ममवास मन। गाजीत भवत अस, अन कमत्त्र, मिद्रक कि मर्थायाट कि मन छेखर। **डीम (हाम नय करन हदेए छेचिछ,** बिनिश्च अ गर नम् कि नम निक्र मध्यिक स्टब लाटग केंद्र - क्रट्ड, मानरंग न्यगंदत श्रीमी कुनात्र जखदत। তরী হতে অবতীৰ হইছা মোহন. গাড়ী চড়ি কলিকাতা সহত দৰ্শন कतिएक हिना बना मानंत्रे छेबारत, कडरे या क्या वस जीविदाद आहम।

जिठन क्षिक वाम (भार्व माति माति; চুথে ধবলিত অন্ধ কি শেকি তাহায়ি। খেতহংস-বৰ্ণ জিনি শুন্তগৰ্থ-শোডা, इति প্রতিনির পঞ্জি প্রভা মনোলোডা। স্তম্ভ - শিরে কাক্ষকরি কর্ট প্রকার, যাহার হ্রমা দেখি লাগে চমৎকার। এ ছেন ভবদ কত কে করে গণনা, জীবন তোষিতে কড কৌশল ছাপন।। शंगादीवि शतिशृषे माना आडि नाद, नश्रम-शांदक-मना (शोएड भरत भरता দেখিতে দেখিতে শোভা ভগীর মোহন আদি উপস্থিত ঘথা রাজার ভবন। आका पति किया बाखाअितिमिनचाती, অরমা উদ্ধানে মার লোভা পরিপাটী। বালপ্রতিনিটি-বাদী পার্য ছারি তার, দেখি ভূরীকত কলে মান্দ্র প্রাধার। धक एक देश्यां कांकि, मक ध्यां उत्म, मत नाम गार्चक कतिरल विमानित्स। मानव (जामता वहे, नह - बिद्धांपनि. जनम अहम स्वि श्रावित अवसी করিলে ছে বুজিবলে ; কোঞা নাস তব ! काश भागि राहरत कृषिइ विखय। পঞ্বিংশ শত অফ হটদ হে গত. কি দশা আছিল তব ? ৰনা নর মৃত अबना नगटत छव । आहिन वम्छि, করিতে চিজিত অদ দেখাতে দুর্জি



जताजिक्रामात अटक त्वांत जीवत, नामांक बारमा कि काम सम्बन नमन कदिएक स्थान नकम्म ज्ञान, त्रामारनेत कुक्रवरक चाक्रिएक नगरन । তব ৰাসমীপ - দশা কি ছিল তখন ? পর্ণের কুটীরময় কর ছে স্থরণ। जूबनमहिसी धर्व मध्य नगती, কি ছিল তাহার দশা দেখ দেখি অরি। অন্তত পরিবর্তন কিছু শত শকে, मानरम महिरम अरक किम धक् धरक। जडुड পরিবর্তন কারণাথেবণ, कत्रक् बमाणि (कक्, कत्रक् धारण। प्रकास भारीत अम, निःशंक - कमम्, উন্নতি সাধন ইচ্ছা, আর ধর্মুভয়, একতা, সুতীক্ষ প্রজা, সভাপথে মন, জাতির সমূদ্ধি হৃদ্ধি করিতে কারণ। व माना न विवर्धिक क्या विवे साकि, তার ভাগো দার ছত্ব অরাতির লাখি। जब बाठि कांड़ि मर्व ब्रोका अंक हरड़, बुनिटिं ब्रेटर हिंदू मुर्गेष कामट्ड। **७(इ वज्रुज्य" (मधि देश्यांज - চরিত,** आत्मांक्य जब कृटल ना इस किक्किश् रेश्त्रारक्षत इत्रवृत्ति कश्रृति-कम, ভাহাদের স্থানুতি ভব° পক্ষে বদ। जानक्कू छेशीनन कर रमजन, পরীক্ষা করিয়া দেব তব আচরণ।

षानच कार्टफ़रल निजा गारव कर कान, অজ্ঞা কুপেতে ভূবে বন্ত্রণা ভরাব महित्त, देर कंड मिन ? नवा गरकान, তোমরা বঙ্গের আশা, ভরসা, ভূষণ ৷ কিন্তু বন্ধসতী দেখি তৰ বাৰহার, মনোছ্ৰে ভ্ৰিয়মাণ বদন তাহার। विश्वविष्ठान्द्रा यत्व कद्र ज्यात्रम, তৰ বুদ্ধি কাছে বল কাছার গণন ? কোনু জাতি পরাজ্ঞানে রন্ধিতে ভোমায় ? পূণী'পরে ছেম জাতি না দেখি কোখায়। हाजावका उव त्यन (में मामिनी त्यन), मिश्रिक सन्तरम हक्तु, भक्त जीवि रमनः। ত্তি পরে আলক্ত আঁখারে খেরে মন, আৰ ফ্ল গোলাপেতে কীটের দংশন। ওতে নবা বছজন হেন পাচরণ, তব পক্ষে অতি দুষ্য করহ প্রৰণ। य मिट्न बरेन सक जात जेशकात, नां क्रिन यहे जन विक् जना जात। कांक कि कीयत्न हात्र यनि किशा करन, मिट्न कि हिन्दू मान्य ना बरव। (इन देक्टा यात्र नारे, थिक् रम कनरम, भाक्षे इत्र नित्रविष्टम (महे नदा्धरम। ওছে নবা বঙ্গজন হয়ে এক-চিড, माध डेशकांका मत्व मिटा किंकिए। (मर्भंत विशेष स्वांत शहर वक्कन, একবার তব চক্ষে ন। কর দশ্ন।

वंत्र-विमा।-छेमादिवत्छ के द्विष अधान जानिवारह अक्टो रह कानलक कान। थम समुविदिनिके स्थितिक नर्द्र, अंग्रिक्ट जानक्य सानिना जानरत कार्मिक जीक्षशात क्षादा करता. अष्ट्रश्च 'रक्तमदान्द कहि क्षत्र विवादि । काजानिनी रक्तरही इक्ना मर्भात. कामि बाषी जिजानेन स्थी नककान ! क्रम्म छत्। कि कडू इताका व क्रम, निक्र डिटल्ड काष्ट्र विकल कम्बन! (मध बिका भार्च महत श्राह्म सम्मान) शक्तिए व काम जन मिन्द्र भठम। माहाया या वा कि करह करह विभागारिक, रेमिथिना कि इर्फ छव मोश्राबा ध्वमारम १ इत्य मार्व अक्तिन अह वस्त्रक्त. वक्रविमा - छेमार्नित मक्रम मामन कद्रष अकाशिक्टिंड, बाम द्राव छत्त, लंगिक मर्या गणा कथ रक्षामना क मरन। **डेब्झ मिनांड कर कामउरगर**न. इरेट्ड क्छ क्लेम्ब्र क्रिंब क्रम्म। व्यक्तिमात्र किङ्क विमि बोबि, रुस अह, कि कछि इंदेर उन मनदर्द होत भारेट**व रेवा**त **कान, बूट्यांना जरव**, कृतिक पाकित रमि जाकन क्रिका। मैं। इंदिय (यादन (दश निवा गंद्ध क्य, वाक्ष्मिकिनिकिनामि कार्य क्वीसम्।

তঞ্জিলার শোক্তা দেশি স্থীর মোহন कदरु कथा मन-मदन महिन्छि मत्र। "कि कुत्रमा इस मति कि ठाक गठेन, " চ ्च्या वालाहे यात कति मदणन। " (य भार्ष किताहे जाँदि मिश्र जवाहाक, " নয়**ন কা**ড়িয়া **ল**য় চাক শোভা কাক। " ভবন-অঙ্গন-ভূমি ঘের! লৌহ রেলে, " फहेरक धश्री कित दक हक । परन " সন্মুখে স্কুরম্যোদ্যান চাক তক শোভ " নতা পুষ্প রেলে ধেরি দৃশ্য মনোশ্যেতা। "নানা জাতি ভরপতে পড়িলে নহন " নগরাভান্তরে যেন পলীর সূজন। " উखत, नक्तिम, भूटर्स, आगान कुकत, " সারি সারি শোভা পায় জড়ায় অন্তর। ' দক্ষিণে হর্জর গড় জরাতির জুকু " नक्र नामियादा महरूरी क्टा ' ডিম শত বর্ষ পুর্বে কি ছিল এছন। " कि मरकह हिन हेरा भूति उ क्यम। "कि मरमह हिल हेश'वाडि निवयित, " কালসৰ্প বাগ্ৰেক্ট্ট ভয়ন্তর অভি। "विष्यित एवं प्रांत दिश्वक्रणान, "'(मेरे फुटन विठितिएक: मह जगणना " मिरे कृष्म नुष्म निष्म निष्मित्रि, " পूर्व कोलाइटल मना जाभन संबंधित " কালজোভ গতি অতি বিচিত্ৰ দৰ্শন, " চিন্তিলে ছাদর মাঝে কন্দিত জীবন।

" कांबा कान-त्वांड-उटि उटि जनपनी

" (कांथा वा नशंत्र छश्च एरेट्ड (कविन हैं

" काबा वनक्त की है कि कर्मक्त,

"काथा कनकृत्म भून इहेर्ड कम्म।

" क्लांबा ध्द्राधद मध स्टेट्स मार्गद्र,

"কোধা বা সাগর শোভে ছউচ্চ ভূবরে।

" काथां जीमिश्रान हाजा ? काथां वा दर्शमान ?

" अक्कारन यात्र मर्ट्स भृषी कन्ममान।

" (क्रिश त्रामक्राका ? क्रिका क्रक्ताका वन १

"कामाबाटि विषयानं इरेन मकन।

''কোখা রাবে এই যে মগর কলিকাডা

" কিছু **শত শক পরে? জানেন বিধা**তা।

" এই যে नगद्रभूष लक लक नात्र.

" (कांथा तर्व अहा वन वर्व भेड शहर)

" এই শত শত নর হুমোহন বেশ,

" कडर घडान महि किहारेट कम।

"चर्ष धकनारे तैथि वानारेशा कून,

" अश्राह गांच ब्रान गांन गांद्य मनाकून।

" जिनात्कां हे पार्वाशित अक्की (बार्गारम

" मश्मभव करकाशितः महिन्दर्भ छ वास्य

" শ্বলিত হইয়া উড়ে শৌক্তা পরিপাটি,

" कान विम्बिरम् बूठे वकरनारमरु आहि।

'' চরণাবরণ খলি জ্তার উপরে,

" বিক্চ ধৃত্রা পুলা শোভা আছে ধরে।

" করে তিক রোপো বাঁধা ধূর্নিত সমনে,

" 5 निशा यारेष्ट्र खावि महाव फुनरन।

"কুৰি ববৈ তোমনা হে দিনকত পরে? ক্রিব না ভূলিয়া কণে সেচিন্তা অন্তরে:" श्रम हर्ष साहन शीत अरमत छेपत, জোধ তব অভুচিত এরা খোলা নর। থাছিক সৌন্দর্যা তরে শশবাস্ত যারা, ৰড় যন্দ লোক ছবি কছু নছে তারা। দিল-খোলা লোক তারা হথ বুঠিবারে, भतिशारक खना अके मकांत मश्मारत। माता इरे अञ्चलात मानव नियम, मिडेमिटि जान सादा ছেলে थएड यम। পুস্তক মধন দিখি ধর্ম অবভার, कार्याकाटन मार्थाना नत्त्रत्र वावशह। ' आमि धाष्ट्रकात मम नाम किनेबात, आमात्र त्वथनी कारह निर्द (कान् नतः।' ' আমি কবি মম কাছে কোগান স্থান গ रहना अभिजाकत याद धवर्छन। অমিত্রাকর যোজনা বাক্লা ভাষায়, হাত্যাম্পদ হুধু মাত্র শুনি হাসি পায়। कर्मिट कथा शना अवन कर्तात শুনি শ্রুতি স্বন্ধিয়ায় কোষে হুদি ভোর। ना रहेरव क्लार्थ किन? कविष नकि मा बरेशा यम किना मट्ह बटना मेखि! भग तक्नात कारक माभरतत (नथा ? क्रांनिमान कौंवा कारह बवा कावा (मधा।' 'विहरमत्र गेण्यं छन। छनि इति शोग्र, যেষনি লেখার হটা লক্ষ ভুল তার।

न्नार्था परिवा क्रिकेट। छनि परिव क्रिके जिज्ञीन काराज भून अनि मृत्य व्यान हर् '(मामक्रीकाम मण्यहमक विश्वाकृष्येन, निविवाह कि शह शांद वन , प्रशेकन। বাঙ্গালা ভাষায় প্রায় প্রায় ভাল নাই, निधिताहि इ खंबानि जानि वाहे जाहे।' मम धौमु थेहिनेड उत्त स्थीखन, कतिरा नक म क्या अ मम की वन। গুপ্ত ভাবে ছোট লাটে পতা লিখি কত, मश्कु छेठारेया वाक्रीना व्यस्त ध्वर्खिं विमानिया करा ममूहिछ, (भनमाद्य धूनांगक्ष क्ष्डे विश्वि।) गश्कुड ना डेहार्या स्कन (इ शहिक? नहरत देक हरन मम वाकामा श्रहः १ निक अंधू बहनात्र धर्मरमा निश्जा, क्ष ভাষে मन्यामत्क विषे शांघोडेहा। **নুত্ৰ দেখক দে**গি **ই**ৰ্যায় কাত্য. হোকুনা সে বন্ধু কেন বন্ধৃত। অন্তর। महत्र क्रडल-शार्म शांकिन। जानकः राह्मर *(मधक दमि क्रा*र्फ उपनह, হেন বন্ধু সনে কল্পু রাবিশা আলাপ, এর পেটে এত বৃদ্ধি একি মমন্তাপ। ভাবিলাম যারে এত সরল মানব, লৈ আৰার **এন্থ লিখে জেবে হয়** শব: . अमन रर जानि धायुनात किम्बत, गांद भिक्ति अञ छन, धार्यत्र आकत

<u>जाहरू औन दर्श बरफ निक जारमानिक,</u> তারীত পুত্তক দরি এত সমাদৃত। বলিছারি ও সংসার করি যোড় কর, অন্তরে নরক ছের। আননে আতর। निजा निजा अरेक्ट्रिश स्थीत साहन, मत्नाहारम कतिरमक मध्त जमन। নগরাভাতরে বাহা ছিল দর্শনীয়, निद्रिथ कतिम जुक्ष मर्गन-इंस्मिग्र। বড় বড় লোক বাঁরা আছিলা নগরে, माकार जारमब मह कदि इशिखद বন্ধ সমাজের দশা শুনিলা কৌডুকে। वाजिन राज्य मम माश्रामत बुरक। मारमक साइन शीत दक्षित नगरत, व्यानातम् अभिवादा छेरञ्कं व्यवदा। य मिन विमन यांका कदिएक शीत তার পূর্ব নিশি নিজা মোহন জাঁথিয় जाहिना वह जलदर, नाहि तथा निन, চিন্তাসতী সহ বিশা হুধু জাগরিল। চিন্তাসতী সহ কলা হইল যে তার, **उन स्थीजन गरेव**्रकांड जारात्र। " ওমা বৰ্ণটি তৰ সভাপুত্ৰ রীতি ' " विश्वित मानम शास छैठ रहात छोडि। ' সভ্যতার জোত বহি দেশ পূর্ণ পাণে, " छेशीड़िन विबंडक स्मिथ बार्व कार्श । " (य शास्त्र क्वांकित करत महके नम् " (य भारभ अंचित्र धति होएमं नीज वन ;

" (य शार्भः मानव एव भर्षक नेमाल, " (य. नात्न डेव्ह्न यात्र येड जनकार्!।. " (मःभाभ शतका आतं धरे ता नगरतः " গর গর এনগর পাপত্রোত ভরে। "সজ্ঞতার জ্বোডসহ হুরাজোড বহে, " श्रमारमबी अ नगरत बाम कति तरह। " হুৱাদেৰি ৷ কিবা তৰ কমনীয় কান্তি, " दक्तिमा बहर्ग औथि मिथि हिट्ड खांखि। " সুদাদী দেখিতে কিন্তু ভিতরে ফাঁপর, " ভুরা নারিকেল যথা চিক্ল উপর। " चत्र चत्र भेष कक्ष गंगन चुन्त्र, " তিভন্ন ভদিষা আদ ভয় কঠবর। "কল্পু ৰা শয়ৰ তব শর্ণী উপরে, "কছু বা শয়ন তব খানার ভিতরে। " বেন বাসি খৰ সম মাছি ভন্ ভন্ " क्तिहरू बन्दन किया मर्गन - तक्या। " छेमदा यङ्ख वड़ शाकितमरे एक, " बदक मुक्का बका जांब हुनि क'र्छमन। " यमबाहत नदेवादत पूमि भी वाहिनी, " वाजानका बारत मुद्धः पूषि वा। क्-मी। " मर्बन्धां कत्रियाद दृष्टि (ग। माविनी, " बाब्र बानाएं पूमि शर्रे संदर्शिंगी। " (वष्त्र- त्य क्यारमनी नर्स्यान प्रत " সহুৰে করিয়া বাস বিদিতেছে পুন। " मीपू-मधी श्रक-त्रञ्जा मझ्यास, " कतिन नगत्रवांनी कति जीवमाछ।

" সভাতার সহচর ব্যক্তিচার " কেলি করি যরে খরে লভিছে সম্ভোষ। " ব্যক্তিবৰে নাহি দোষ, যাতে জলে সুখ, " मि कत्राम भाभ किया । सि कर्षा विश्वर्ष ! " ऋकायन कीयतिश्र कतिल मखाग, "क्ष्रु कि स्रेटि भारत धर्चेत्र विद्योगे। " সভ্যতার থাম্বে হেন আছে ভব্য নীতি, " दुक्किवी अद्भर छ। आहरे थेडीछ। "নমস্কার সভ্যত্তি প্রস্থে শত শত। 'হেন হুৰুজির পদে শত দণ্ডবণ্ডা " (य श्रीष्ठ कहि (६न मधूत रहन, " হরে কেনি কামিনীর সতীত্ত ভূষণ; " তाहात (मिथित मूथ ज्रान व्कार्थ धार्ग, " हे ऋभ इत्र व्यक्ति सदि कदि सम्ब श्राम्। " जवना महना नाही कान दुधि नारे, " মিঠা বাক্য শুনি ছুলে কাছারে ছুধাই। "বজে বাজিচার দোষ এমনি প্রবল, " चरत चरत कार्या निषि महल रहन। "নাগরিক মানবের কুথাইতে। নাই, " সভাতার খ্ৰেপেরি লুঠে কি মঞ্চাই। " এর পরে রাজঘানী বিচার প্রার্থনা, " বান্ধালি উচ্ছন্ন দিতে পুরিছে কামনা। " পিতা পুত্রে বাদ করে জাতায় জাতায়, " অভিবোগ জন্য পৰে রাজধারে ধার। ্ "হইয়া গভস্কৰ বিচার আন্তম " गात रत उन्डन डिग्नार्गिकता।

"विष्ठां वार्थमा गणि कान, क्रांष्ट्रि, " पानवीन, शकाकान, निवान पूर्ति " निमात छेल्डा मिन कहि प्रथं कार्ति, " অষ্ট্রতাপে দৰে যদি বাদাদি ভাতায়ে "মরক কুওেতে দেখি সতত পতিত, कि जार्र्ह वर्ग ता मन देशन विदिछ। " র্থামোদে লক্ষ লক্ষ্মার বার হয়, " युकार्या कड़िंगे मिर्ड कृष्ठित समग्र। " श्रुकार्र्या माहाया करा तह पूरत बीक् " ज्रुकदाम थड़महस्र प्रवित्रा जवाक्! া ধর রে সভাতা তোর চরণে প্রণাম, " जुलिइ कउंदे भी भ नाहि यात्र नाम। " जरूरतत मणा जात ना बात्र किखन, " পরীর পিছরে উঠে কম্পিত জীবন। "ना द्रारत कर्मन जात अमन महरत, "ন্মতার সভাতার যাবো দেশান্তরে।" त्मध (र शांठक ऋषि माहन नजन, वाजानि विवय गांश छशामि मर्जन ना कहिन, जोड फोर ना भारेन दान, সরল অভর বার মাহি ব্বে ভান। **उदर ७७ स्थीलन (मोर्**टन सान शिल शिव्रवांग वटहे स्वयादा वजान र(बंदिक्क गठे इक्ब बनिछ। কৰি কাছে পরিজাণে কি কর বিহিত। मर्गन चत्रभ त्य व्ह कविस्नन मन, ৰাতে প্ৰতিবিদ্ব পড়ে নান্স গঠন

जभारतः, उद धन सूकारन कमाना मत्नाविक उव शिक् मानम मर्गत्न कवित्र हरिष्ट् भगा, लूकाबाद नर्त्र, कवि दूर्य उव जीव या छाद्रव कमन। नाहि वरन कविक्रान अशद्यत मान, ति का का ति ख्वि धत्र अवर्ग। ওহে ভও স্থীক্ষন তোমরা ভয়াল, कुला अशहत कहि नहन मिठाल। সংকাৰ্য্য অনুষ্ঠানে দেখি কোন জনে, প্রকাশ আহলাদ হুমি ভোমার আননে। অন্তরে চিত্তহ কুরু তাঁহার ধংসন, কাৰ্য্য পণ্ড হবে কিসে তাহারি যতন। প্রকৃতি প্রদত্ত যদি কবিছ শক্তি ্দেশহ কাভার তুমি, হুঃশে ময় অছি। हिए मत्म श्राडिकाल डाँशात डेल्ब्स, সদা ভাব কিসে হবে তাঁর বন্ধু ভেদ। সুধীজন কাছে গিয়া তাঁর নিন্দা কর, বাসনা হইলে সিদ্ধি প্রফুল সম্ভর। उश्चिम भक्डि उव धमनि धवन, दूर्य ভाব ত रन क्यान महन। पि रेट हिर्मिश्या श्रम् कमन তার মধুস্থানে কিন্ত আছে হলাহল। পণ্ডিত বলিয়া সৰে জানে হে ডোমায়, করি শত দণ্ডবৎ পাতিত্যের পার। निष्यत्र कम्छ। नाहे किছू निविवास, নহ কি হে হয় হলে অন্তে গ্রন্থার।

কৰিৱে উৎসাহ দেছ "হচ্চে তেন্দ্ৰ" ৰোলে
নাহিক নিস্তার তব কৰি নাহি যোগে।
ধন্তরে ভণ্ডামি তোর চরণে প্রণাম,
না করিতে পার তুমি নাহি হেন কাম।
গরে রে ভণ্ডামি ধৃষ্ঠ চেছার। তোমার

হৃদুখ্য, অন্তর কিন্তু বিষেত্র আধার।

[\$0\$]

সপ্তম সর্গ।



"Beauty is Na. hre's coin must not be hourded, But m at be current; and the good thereof Consists in mutad wat partaken bliss, Unservery in the copyment of itself." Cosus

How beautiful, if we row had not made Sorrow rouse beautiful than Beauty's soil Krais.

টিশির টিশির নীর পড়ে ঘন হ'তে, ছর শিরে ছইজন চলি যায় পুথে। वर्षाः। भन्नीयाम कर्माम भूविंड, গমনে শ্ৰীর ক্রেশ হয় যথেচিত। **४३.८५ कर्कमञ्जा मिल गोल नाम,** भैडिकित स्मार्ड अन्त गु**रस्ट्र वा**ग। ्राह्माभी यर्थाहिङ कति समामत्र, ৰসিতে আসৰ দিল প্ৰফুর াখাপকথম পরে করি তিন ক্রম, গৃহস্থাথী পাতি কর করিল গ্রাহণ তুই শত রেণা মুদ্রা সহাক্ত অধরে, श्रद्ध ना इसं (केवा द्वीकां शिटन करत ? युका छिल दौंधि योग्नि मह शूरकन গৃহসামী কোথাকারে করিল গ্রাম। इरेंगे मानद मंदश स्त्रीमा मुर्जि नद धारविमान मर्गिक्षारम विभिन्न जिल्हा। जर्भत मानव श्रीम वाष्ट्री इटड हिंग. একটী মনুষা গৃহে इहिल কেবল।

পরমা রূপদী নারী ত্রটী তারে পরে. প্রবেশ করিল দোঁছে বাটী-অভ্যন্তরে। তারি মধ্যে এক নারী বদি দর্লায়, সম্ভাবি কহিল অন্তে এরপ ভাষায়। " उत्ना उत्ना थानगरे ध जात कमन. "না করি দর্শন যে লো কোন পুরজন। " কোথা গেল ত্র মাতা ভাই ভগ্নিগুলি, "বাটীর বাহির কভু ননু যিনি ভুলি।" अनिशा शामिशा कटर जानत कामिनी, " গিয়াছেন নিমন্ত্রণে বালীর গৃছিণী। " বাচীর বাহির আজি নাহি হ'য়া যায়, "নিমন্ত্রণ রাখা সই আজি শোভা পার ? "निमलार्ग याचेवारत कतिल बांतर्ग, " (कानगढ़ ना कतिना नित्यस अवग। " अरुमा महे जाम (थिन विम इहे जन, "তাস যে তোমার কাছে ছইল স্মরণ। "किहुकंग बरमा महे हुछ जानि जान।" এত বলি গেল চলি অপরের বাস। राजित राहित जानि रांधिम कवांछे, मध स्थी-जन शदत किव। इत नाहै। शार्ठक महनुत्र वाण-अख्यस्त्र, প্রবেশিল কোন জন ছত্ত্র শিরোপরে। কেৰা এ রমণী আর কেই বা এ নর, জানিতে উৎস্ক অতি স্বোমার অন্তর। পরিচিত ছুই জদ নিকটে তোমার, ভন প্রধী-জন দবে রভাত ইহার।

रमली (यादिनी आंत शुक्रव केरिन, ग्रामार्थाः शिखांनग् अहे ता ज्वन। वाणि बात साइन-खनन-मन्निधारन, भाइत्यव अजित्यमी भिन अजिशासा (य कर्भी) नी हिन शिना आनिवादत छान. মনোরম। নাম তার, হয় কি বিশ্বাস ? মেপ্রনীরে মনোরমা আনিয়া কৌশলে शिः इयुर्थ पृशी (कनि (भना उलि इर्न : (याञ्चिनी-प्रतिशी धरियारत अहे केंग्म। অর্থই পাডিলা এই যত প্রমাদ। বস্তুকুমার জীবনের সহচর (को भारत गाधिन अहे कारी छहत्रह। मत्नादम् वर्षा निश्च है। का छड़ भार, क्रिन ज्याहारत स्थि अकार्या मध्य । গন্য অর্থালোভ ভোব চরণে প্রণাম, না কথিতে পার ভূমি নাহি ছেন কাম। তোর লোভে কত নারী পৰিহাই লাক, জলাঞ্জলি দিয়া বাংশ করিছে : কাজ। নারীর সক্ষেথ গ্র স্তীল-রত্ন-পরিভ্রম্ভ হয় ভোর প্রাপ্তে প্রনোভন। গত্ত অৰ্থ তোৱে লোভে হত খণীজন, माधु वावकारत थानानिएकं नमर्कन। তোর উপরোধে কত বান্ধব স্বজন, আত্মীয়তা ব্রুতার করিছে বর্জন! তোরি লোভে রে পাপির্চ নারী মনেরেছা মথী ব্ৰহার তাজি হইল অধমা।

कौरत्तक मधी "मटनातमा!" (शक्तित, म कि न। इस्म मुठी जासिया। धनीब कुल, भीन, नड्का, उत्र, द्वःथ कहि कारत्र, ধনা রে পিশাচ অর্থ সাবাস ভোমারে। ह्यांग्र औरन पिर स्याग जागउ. বাহিত্রিল গৃহহাতে প্রফুল্লই কাড। ব্যাধ যথা নভশ্চরে হেরি নিপতিত, জানায় মাঝারে হয় মন বিক্সিত। পরে গুটি গুটি গিয়া ধরে বিছক্ষ, विष्टश (वड्रांड (यन मधीर्शक यम। বাহিরিল গুছ হ'তে সেরপে জীবন, গাশকায় উড়ি গেল মোহিনীর মন। মোহিনীর মনোভাব পাঠক কলন চিন্ত মনে একবার, পার উত্তাবন করিতে সে ভাব মদি-কি কছিছি আমি গ म जात कि श्रक्रक इत्त जिल्लामी? সংলক্ষ্য সাধী পরিব্রতা নারী চিন্ত গোল্ডাম্রা মনে আনুর ভোমারি खु मक्तम वृक्तिए । भाहिनीद मन, (पाहिनीत म्हां जाद म्हां कि उभम। হে পাঠক সভদয় নয়নে ইকণ করেছ ততু কি কোন রমণী-রতন नक्कामीना लुखोरना विश्वा विश्वान द्राष्ट्र वाद अक्किनी किया, मधीमान जनवाम विस्माहिका श्रीनिक योवतन, ना एतिया विद्यामिनी बद-आशमद्य।

হেন্কালে সেহি ছলে পুৰুষ অপর अ मि छेशिकाङ यनि इत्र स्थीवत, नकाभीना (म कुमाती कि करत उथन? किशिश नुकार धनी अभूना योदम, ঠাহরিতে নাহি পারি বাস আকর্ষণ করিয়া কোমল করে করে আবরণ লজামাধা মুধধানি কিয়া তত্থানি, ঢাকিতে কোমল বক্ষ মনে অভ্যানি निर्द्रारमम भूछ बरक ना शीव वगन, आविद्रित डेकंगांक वाहित्व योवन। **हिटल गरम वदायमा পृथी इरल हि**द, প্রবেশে তাহার মধ্যে পলক আধির না লড়িতে, লক্ষাশীলা ঢাকয়ে সরমে; ভবেত ধনীর রহে সরম ভরমে। বদি হে পাঠক কুধি রমণী এমন তব চাক করি থাক কথন দর্শন, তবে মোহিমীর ভাব পারিবে বুমিতে, নহিলে সক্ষম নও সে ভাব চিন্তিতে। অপর পুরুষে দেখি হঠাৎ সশুখে, আৰিল আশহ। আদি মোহিনীর সুধে। লজা ঢাফি লজাশীলা পলাইতে চায় जमनि जीवन जामि मशूटश में ज़ाहा। জীবন সন্মুখে থাকি কহিছে তখন, মোহিনীরে মধুবাকো করি সম্ভাষণ। " जांकि कि स्टार्वत मिन मम इस्ताननि! ' मश्मारतत मात्र वश्च मश्रुरथ जानि

" जीवन शरिज इतना श्रीचल नहन, " मः भारतः मात्र बक्ष कति मदर्भन। "তোমার যৌবনরূপ চাফ সরোবর ''অগাণ অতলম্পনী করে থর ধর। " পথিক ত্যিত আমি উৎক্ষিত প্রাণ, 'দেক আজ্ঞা বিধুমুখি করি নীর পান। " (र्घावन महमी उर इस्म डेलमल, তাহ(তে প্রকল্ল মরি ও মুধ-কমল, ' याक्षात मोन्नर्था-गास करत जारमानिट, " ভবিত পথিক ভটে আসি উপস্থিত। '' আজা দেহ ইন্মুখি কৰণা প্ৰকাশি, " जिक्कि (ती निनामा साइ, क (भाड़ा निनामी।" জীবনে দর্শন করি মে বিজ্ঞন স্থান, আশকার উড়িছিল মোহিনীর প্রাণ। ভয়ঙ্কর কথা তার শুনি এবে ধনী, পাণ্ড বর্ণ কলে। মুখ সভীর তথন। भाशिनीत मूथशानि इत्ला यन क्रिक. প্রকৃত্র কমলে বৃদ্ধি পেলে আকৃষ্মিক। কিয়া যথা আধক্র গোলাপ প্রস্থান लाशितन शक्क धूम नातन (नाइ-७८०) **धकवात हिटल धनो शांकि भोनी इटत**, म हिन्दा जन्न श्रमः छ।विद्या क्रमः পাছে इसे गांव म्मर्ग धका भिन्न वन, ধনীর গৌরব ভঞ্চ তবেভ সকল। ভাবি মনে বরাননা করে মনে ছির. क्व कथा उद मान या देलहा विधित।

কহিতে ধাইনা কথা কথা নাহি ক্ৰে लाशिल विषम धाँधा माइन-वश्दाः कर कथा वड़ करहे. त्याहन समन्ती, ल कारडी मांशी मंडी नब्का शतिहरि। " ওহে ভাগ্যবন্ত মর তব কলেবর, ি নিরীকাণে জান হয় দয়ার সাগার। 'হেন দেহ মধ্য হতে কাক্য বিষ্ময়, " अवर्ग हमाँक छे है अ सम अनश् এ দীনার সতীতের পরীক্ষার তরে " বুঝি এ নিষ্ঠুর ভাব পরেছ অন্তরে। ''নতুব। সম্ভব নয় এ বাক্য তোমার, " বারিধরে বিষধারা বিশ্বাস কীহার গ ''कति गङ्ग विभि स्मर्थ त्रमणी क्रमरस ं शूरेल अकी धन या राज जूबाता " नाजी कक्टे-स्थानमात्य अहे म जूरतन, " যে জন্মে নারীরে হুধী নারী বলি গণে। "সে ধনের অভিধান সতীত্রতন, " দে ধনের কাছে কোথা কাঞ্চন-ভূষণ, "রতনে খচিত গৃহ ভূৰণে ভূষিত, " চতুর্ভিতে চাকচকা চিত্ত চমকিত, ' রজনীসময় যবে শোভে দীপালোকে, " নছে প্রতিকর তাহা কোন্ নরচোকে। " নির্বাণ করছ দীপ শোভা অন্তর্দ্ধান, " কোথা রত্তরাজ্ঞা-শোভা ? স্থ্য প্রস্থান। "তজ্ঞপ রমণী-ছদি পূর্ণ গুণরাজি, '' সতীত্ব-দীপ্তি বঞ্জিতে, আঁধার বিরাজি।

"ভূষণে ভূষিত গৃহ ভাষ্ট দীপালোক, "যথা অন্ধকারময় তমঃ ছেরে চোক। " নারীর অন্তর জেনে৷ তেমনি জাঁধার " দতীত আলোক নাই হৃদয়ে যাহার। "থাক্না সহতা গুণ এ গুণে বৰ্জিত, " কে করে গণনা তার ? সব অন্তর্হিত। " শুন হে প্ৰযোত্তম এছেন রতনে, "হইলে কামনা তব পাইবে কেমনে। " कतिया औधात किन, এ अमृना धन " প্রদানিতে দক্ষ হয় বল কোন্জন। " विधिमख (इन धन छ: एक एवंदे नाजी, " কুলকলঞ্চনী জেনো অভিধান তারি। "সে ছটা করিতে কম মকল কর্ম, "বিচার নাহিক তার ধর্ম অধরম। "এ ছফ্ট কামনা তব কর পরিছার, " সামাত্র অথের তরে ছেন অবিচার "না করছ কভু তুমি কহি সৰিনয়, , " धर्य-धन महाधरन कति विनिमस, "ভগ্ন কপৰ্দক সহ ন। ত্যজ্ঞ কখন, " ভগ্ন কাচে আশ। তাজি হীরক রতন।" माहिनीत राका छन् जीवन उथन, करह कथा हानि हानि विकानित मन। " শুন লো স্বন্দরি, নারী ভুলাবার তরে, " পুৰুষে মিখ্যা রচন। পুত্তকাভ্যন্তরে '' করিয়াছে শত শত, বাকা প্রলোডন " প্রােশ করেছে কত কে করে গণন।

' কিন্তু দেখ শশিমুখি ভাবিরা অন্তরে, '' পাতিব্রতাগুণ গণ্য কি জন্ম ভূ-পরে।

" खकादा माधिए नव कड़रे की नन

" इिच्चार्ड अस्मरश क करड मकन ?

" िहतमांगी नाती-कारन ताथिवात जात.

" নানা ভীতি প্রদর্শন করিয়াছে নরে।

· (य कर्त्रा डेशिट्डा सूथ (म कद्राय शार्भ ?

"কহিতে আসায়ে হাসি, একি মনস্তাপ।

" श्रक्रा अश्रद नांदी उटक कर गंठ,

" সেম্ময় নাহি পাপ সে যে আছবত।

' শাস্ত্র ভরে ব্যস্ত জাটা গাটি পরে,

" জ্বাতি কি অজ্বাতি নাই সে যে আত্মতারে।

'' আরিও দেখ চন্দ্রামনি করিয়া য চন,

" विधि गंठनिल छत्व त्रमगी-इडन।

"তার স্কুমার অসে মাধুর্যা মাধিয়া.

"তার স্কোমল করে মধু রদ দিয়া।

" भीन्मर्थाद्वानि-मश्यूक श्रक्त यानत्न,

" मिनाहेशा मधूत्र । ज्ञिन। विज्ञात

" প্রকৃতি সুন্দরী, রূপ দেখাবার তরে,

''আবিরি অবগুঠনে ক্লাসা - স্থাকরে,

" গৃহমধ্যে लूक्शिङ नष्ट 'धार्किवादि,

'' সে সৌন্দর্যো কিবা ফ্ল কছ লে। আযারে ?

"প্ৰফুল প্ৰস্থ সহ সেনিৰ্ধ্য তুলনা,

" কিছুক্ষণ শোভা দিয়া শুন লো ললনা।

" विश्वक इहेग्र। जुछै हम्र सूर्णां छन,

" কে করে আদির তার এই সে ভুবন।

"যদিন আহে যৌবন লুঠ মজা ভবে, " इ निनाटल स्पीवतनद हिंदू नाहि द्रत्य। " योजन बूद्धां मनुष मा कतिरल वाहा, " दाथिता (भिक्ते मर्या किन् मर्माम्य । " অর্থ আর যৌবনের না করিলে ব্যয়ী " পাকা না থাকা তার একি দোকে কয়। ' অভএৰ চন্দ্ৰাননি কৰ্মণা প্ৰকাশি, " জুড়াও সভগু চিত সনিকটে আসি।" এ হেন দাৰুণ বাকা শুনিয়া মোহিনী नाशिन कनग्र (यन बार्ड जन्निनी। মুখে কোপ প্রকাশিয়। আশহা অনুরে, मधाबिन अहेक्स्प (महे प्रके नरह। · কহিতেছ রে লম্পট সতীত্ব-রতনে ' ७ व घटधा भेषा नश् अहे त्म कुनदन। " তোমার কামিনী কেছ যদি এইরূপে " চেফ্টা করে ডুবাইতে ভ্রতভার কূপে। " তোমার অম্বরে ভবে উঠে কিবা ভাব পূ "ভাৰ কি বাসহ তবে অসতী ষভাব " তোমার কামিনী क्राप्त ? डेर्फेना उथन "তৰ আনন আকাশে মলিনতা খন ! " मख्ख-निश्राम-क्षे नाहि वस होत्न " সুং-তৰু শান্তি-লতা অন্তর-উদ্ভানে ? " नांभिरादा म लम्भा वे वांभना-विद्वार-" नाहि দেয় দেখা? গরজি তাহে কিন্তুত ' যোর ক্রোধ-ব্রি ক্রণে ফ্রেণ নাছি ছালে? " विश्वाम भैत्रल-त्रिकि रेश्या-वैभ जल

" প্রতিক্ষণে নাহি করে? করিবারে কর " रिर्भा-वीम । कड जीवे अमरा जैमर ''ইছা ভিন্ন কে করে গণনা দাধ্য কার? ''তোমার রমণী ভ্রম্ভা হইলে ভোমার " কিছা বুনি ও অন্তরে নাহি হয় জোধ! ''তোর হৃদে সুখরাশি উচে হয় বোধ। "করেছিল্মনে তুই পাইয়া স্থোগ '' বাসনা করিবি পূর্ব ? তোর স্থধ-ভোগ ''সভ্গু করিবি তুই এই স্বকানে।' ^{প্} দুরীকৃত কর্ তোর হেন **ম**ৰ্ আমে। " প্রাণের অধিক ভাবি সভীয়-রতন, " বাধিৰ কি এই প্ৰাণ বিয়ে গৈ গৈ ধন ৮ ''ত্যক্ষিব তথনি প্রাণ যবে তোর কর " পরণিবে এই অঙ্গ শৌন্রে পামর। * কাজ কি জীবনে ছার সতীয়-বিছনে ? "রমণী-ছদয় খুঞ বিনা দেরতনে।" **মোহিনীর কথা শুনি জীবন-জন্তরে** (क) ४-तां म्यूमिन कॅंाशि थत थरत। ताक यथा धानियात यात्र स्थाकत, সেরপে প্রসারি চলে ভার যুগা কর। एक गङ्गम करत्र मर्गन সুধানিধি, রাভ যবে প্রসারে আনন। ममर्गन कतिशाह हसारा मन्। माहिमी इहेन किंक ता क्रथ विवशा। अमातिक अकं कात भरत, भरत मनी, ट्रिन काल इत्ना चारत नेक स्वत सनि।

मीर्यकांत मत अक छालिया कवाहे, धारविन वांगी गरंश माति मानमारे। ममल भंदीत जार्थ कार्र कर कॅिनि अभन ७ छ मस कड़मड़। রোষ ক্যায়িত চকে চাছিল দে নর, माहिनीत स्थतामि, जीवरनत जत, করিল যে উৎপাদিত; দিবা-চকু যথা দিবাচরে দেয় সুথ কাত্রিচরে বাথা। वहन खर्ममा भारत कतिन म जन **जीवरमत** भेराम हाहि: सुभा विविधन যেই মোছিনীর গকে: গরল সিঞ্চন (মছুর-ভারতী-সতী-শ্রুতি-বিনোদন) मिरे की वन जलात जाएक कि मामक? কঠোর বচন তার জালি দিল দেহ। 'भाषिनीत जार्था कांत्र हानन म नद्र, ञ्रूर्थ अरविभिन धनी व्यापन व्यमह। হে পাঠক সভ্দয় কেবা এই নৱ, জানিতে উৎস্থক অতি তোমার অন্তর। কেমনে এগুপ্ত কথা শ্রবণ গোচর হইল তাহার তুমি জামিতে তৎপর। শুন তবে স্থীজন রভান্ত ইছার, ত্রবৰে তোমার হবে আনন্দ অপার। দামিনীর বাদী তব ছয় কি শারণ ? मामिमीत कुल्र नि काम । वमस मधन शंन नाशिजिनी - वारम, नाणिजियी हिना यश हाण छेणहारम

थरे श्रूकरका माता; मिहे स्म कातन, तमास मामिनी-बाद्यं का मिन आन्नर। मामिनीत महिधारन हकाल मकन শ্রবণ করিয়া তার চিত্ত সচঞ্চল আছিল অতীৰ জেনো, হইতে তথন भरत मरन मिल्हान हिला এই জन। মাধৰ ইহার নাম মন্তপারী ছোর প্রেমালাপে সদা রত রক্ষরসে ভোর! भारत्य अक्षाठी, मदन । अस्त বিভাধনে আস্থাহীন স্থু সুখচর हेल्फिश स्ट्रांश मान, श्लामा मन-मात्र, মোহনে বাদিতে ভাল তুলা নাছি যার। মোহনের পিতা শুনি এসব রুতান্ত উঠিল ক্রোধায়ি ছদে যেন রে কৃতান্ত। मत्नात्रभा-वार्ष करक कतिमा जर्कन, " দেখিব রে তোরে বেটা ভুই দে কেমন। " রাজ-খারে অভিযোগ কলাই করিব, "ছদিনাত্তে আমি তোর গৌরৰ ভাঙ্গিৰ। " যার বলে হইয়াছে তোর এত বল, " (मिथिव कंड मि जोड़ आहि धन वन। " डिहे। माने थक हानि ट्यांत निव करत्र, '' একর্ম-কর্জারে লবে। স্থদ জীঘরে। '' मं इः थी जामा अनि कथा अ मक्स **उ**द्य अत्र जड़मड़, हिंख महक्ति। ভয়েতে इ'ড়ে বিহবল সেই দীন নর, কহিল এ সৰু কথা জীবন - গোচর।



जीवन आधाम वह धनामिल जात्त, खीकंत जीकजा जाको जार्राम काशास्त्र? হে পাঠিক সহদর হর কি শ্রণ ज मिन इकिंन दीन! वादि वदियन इब हिनित हिनित संमख निवम, নিরবিয়া প্রকৃতির মুরতি বিরস, कात ना गानंतम इत्र जानक छेमत ? নভক্তলে মনাবদী পূণী তমোময়। निविक् नीवनमत्न जाम्बब शर्भन, টিপির টিপির নীর তাহে বরিষণ। मत्था मत्था बतनाशित स्थल मोनामिनी, भर्या भर्या गेइजिट्ड चन काम्त्रिनी। मधाक ममग्र मन्ना (यन आविङ् छ, निदीक्त करम डेर्फ डारना अहु । পিপীদিকা পেয়ে পক্ষ ডানা প্রসারিয়া, चूंब भरश मरल परल विकास वृद्धिस्। ্বায়দ বায়দী বদি তৰুর উপরে, উড়িছে বিসিচার ব্যস্ত উদরের তরে। शक्यां थ भिशीनिका धरत करन करन পরকাণে বসি ডালে নিযুক্ত ভক্তে। স্থার বিহণ পক্ষ শোডা চিকণিয়া, वित्रवर्ग कर्क जर्म इः स्तित्रवित्र।। **छेटेळः यदत एक गरन करत्र कन तन,** महत महती नाटा शावेश छेरमव। देखेक निर्विछ हाटम वाति शब मित्रा वर्गात अतिहा जल वर्ग अपूज़िशा।

मिवम - वर्म "किर ठे हित्र नार्त्र, महा। नगागंड शर्त इरला अकरारत। अरक जारामश निमि जार घनमन, আক্ষম সম্পূর্ণ করিয়াছে নভস্তল। मश्रुथक दश्व औरि मिथिवर्दा नाहर, নরকুল অন্ধ যেন ছইল আঁপেরে। कर्ग कर्ग क्रमधाडा प्रश्रीहरू क्रभ, তমঃ তায় ধরিবারে একান্ত লোলুপ। প্রসারিয়া কর ছুটে ধরিবারে তায়, यन शार्ष भीमामिनी जमनि लुकाश। ওড় গুড় ডাকে ঘন ক্ষতিমিষ্ট অতি, গগনে ছইছে যেন দেবের আরতি। यूठांक थरमारिकून विज्ञाहेरह छेड़ि। পৃথী'পরে পড়িতেছে যেন বাজি পুড়ি। কিখা জ্ঞান হয় তারা হইতে গগন খসি পড়িয়াছে তার। এই সে ভুবন। नित्रिश्ट मान्टरत शाश्विक मन, রজনী সময় যাত যোগ আগমন। वामनात विভावती वज्हे मकात, যাহাতে দাম্পতা এখ উথলে অপার। वाहितिम गर्ख इट्ड निमाहतगन, নিজ নিজ খীষ্ঠ তরে ভ্রমিছে কানন। হিংঅজন্ত সিংহ, বাাল্ল, ভল্লক ভয়াল, ধরিয়া ভীষণ মুর্ভি জমে যেন কাল। পৃণীন্থিত সৃষ্ট জন্ত মধ্যে কোন্ জাতি, ধরে ভয়ন্তর মূর্ত্তি যবে আসি রাতি?

্র্ন্ত নাছিন কোজন কার। ইন্ম নর্গ। এ প্রেশ্ব উত্তর দিবে বল কোন্জন ? छेखत अत- त्य नित् डाहाति गणन त्म क्क खश्म मात्म, यल रह रकमान অভিধান তার পাবে এই সে ভুবনে। शूहे शूहे व्यक्तकात हिन् हिन् नीत, नम्भारहेत कि ऋरगांग भार्रक ऋशीत। जतन-धनशा नाती यकावात जत्त, পরিকর বাঁধাচারু চারু যক্তি করে। मस्रक डेकीबर्गाङ। हामरत्र निर्दिङ, সীধুর হুগদ্ধি কিবা লাম্পটা বিহিত। य-डेक थाहीद्रश्रदेश्वरक डेलक्वन, व्यापित व्येडिया गत्न निकाल मिनन। পরে काम পড়ি লাভ পাছকা প্রহার, এর সম মজা কিবা ভাৰে আছে আর ? कामिनीकून - क'छेक कून - कनकिनी कामिनी काथात्र गाँउक रता उचानिनी, **जिल्ड जीरावड मधा कामजरत धनी,** नहन-इादिनी क्रि नक्का (म क्यान । कान शास मिन्न हरेहर नारित तिक कांत्रियांत जात्र मानम अधित। वह अमन्भा , वर्ष वह निवरमन, जाक्रमार अकराइत मा शाहरम छित्र। অৰ্থ অধিকার স্থু অপরাধ তার, এর সম অপরাধ কিবা আছে আর? কোৰায় রাতির দক্ষ্য বাহির সদলে जनकत मूर्जि धति क्यांति मन्दन,



পড़िছে धनीत गृहर शृंक सूठे जहत, কাটিছে বিদিছে তার নিষ্ঠুর অন্তরে। কিবা অপরাধ তার। জাননা পাঠক ? ज्ञ निष्म अधिकांत्र, मा यादि मलक ! धनीत मछक ऋषू याटव वह नग्र দক্তি পাবে অর্থ রাশি মজার আলয়। धका धका सद्रांश धका मिर्हे गंड, काश स्थ हान आह रन शृशी मडा मश्राम मामव मम अन्त (कवा आदि? আত্মহাৰ তারে নালে কে বল পিতারে ? निभीधिनी इथहत निस्त पूरन गरधा गरधा खग्नवाणी नेक निश्जन। मर्ट्स मर्ट्स मिया डीड करत कमहर, भन्नम-भहिन-**ज**्न (खा्कत छे९मव। मरक्षा मरक्षा विवाहन जारक छेरेकः खरह, নানা রূপ ডাক ডাকে মানা কাকোদরে। রজনী তিমিরারতা সময় এ কর, উদ্বেশ করির। তুলে শিশুর অন্তর। শিশুর ভাক্লিলে খুম এর মাঝে মাঝে, আপনি আশহা আসি সে হৃদে বিরাজে। जमनि जानि धरत अनुनीत गना, বক্ষে তুলে অমি তার জননী সরলা। সুকোমল শুন ধরি মুখে দেয় মাডা, তুড়িতে শিশুর ভীতি সে ক্রব্য বিধাতা मृजिना त्रमणी वत्क, मार्ट्स इंगी काज, শিশুর আশকা তুড়ে, খাজের জাহার।

् निगीरिनी इथरत निस्क पूर्म, जतन वान्यग्रा निकात मर्गन। মোহন-আবাদ ৰাচী হে পাঠক জন, তোমার মানস চক্ষে কর দরশন। मण्डन मञ्जा करत खुनि यम्नान, আর দশজন করে বালে তরবাল। क्ल भिन्नियम वर्ष मृश्व खश्चत्र, क्रिए मानम्फू दौधा शितकता . माद्र लच्छ जूमि कल्ला शमबात्ला याह्र, हर्कात, भंभ कांत्र विर्ध कर्वात। माननाठे, काठे काठे, ठाठे मिथ जब, धन थन, नक्सक, शरका धरका इत। ভন ভন সে নিম্বন, প্রবণে যঞ্চির जब काँ त्रि, यांद्र मात्रि, मानम जब्दित। बेह्तरभ कुड़ि अन मद्या फतकद, ষেরিল মোহন-বাটী কণেক ভিতর। करत्रक कूड़ानि शांत्र छानिन कराहे, **अर्विम वांगे यद्या यात्रि यानमांगे।** প্রভূ-পরারণ ভূতা হুটী সে বাটার, রক্ষিতে প্রভুর ধন দিল ছটা শির। পরে দহাগণ গিরা পড়িল দে হরে, যথার মোহন-পিতা ছিলা নিজাভরে। আকর্ষণ করি কেশ বাছিরে আনিল, অপ্রাধাতে ছিন্ন ভিন্ন শরীর করিল। অক্সামাতে শিরশ্ছেদ করি অতঃপর, अरविन भादिनीत गृह - जाकासता

চাহিল দহারী তার কাঁদ আভরণ, क्ष्मती भागन कति आर्थन जुद्दन निर्क्तिति क्रुनेग्रहा म्हारान - कर्त्र, পরিধিয়ে চীরবাস ফেলিল অন্তরে सम्मत रमन जात कांनि धत धत, জীজন-স্থলভ শঙ্কা শুকালে। অধর। गर्जिय इत्रंग कृति (ग्रंग प्रश्लागन, তৈজ্ঞসাদি না রহিল অর্থ আভরণ। यामिनी थांडा उकत्म, डेर्किन कन्मन মোহন - পিতারে শব করি দরশ্ন। माइन-जननी कांत्र विद्यार्ग প्रित्र, সে কেন্দ্ৰ শুনি চিত কার হয় ভির? भाहिनीत गण्डमा जन्मधाद जारम, क्रमग विमीनं अभि म द्वार शकारमा। ह् शार्ठक छ्धीवत. कर्इड मुर्नन মোহিনী প্রক্র আশ্ত হলে। কিছুকণ। कत मन्दर्भ अदय (म पूर्वप्रक्रम, বিষাদ বসেছে তথি চপদা চঞ্চন। (यन छलना छक्क १ काश को मामिनी लारग रम स्मिक्या कारह। धरत ना सिनिनी উপযান मে রূপের জেনে। সুধীবর, द्यमत्री त्रमगीनिधि जान्न छेशत, বিষাদ বসিলে পরে পাতি সিংহাসন, ठिक यन श्र्याकरत कमक मर्मन। ঠিক যেন অলিবয় শ্বেত পদ্মোপরে र्ठिक (यम जादा ल्गाएड जांचि-इम्मीब्द्र।

ठिक खन कूँड करन कानिया पर्नम, ঠিক যেন শিশু চক্ষে কজ্জন শোভন। कृतनत्माहिनी ज्ञभ अत्क मान्तीकः वियान विभित्न उथि कांत्र मन कितं? षालुनाम (वनीवक शर्फ्ट धनीत, जानत्न डेर्फर्ड गिया मकन कथित। চম্পক - কুন্থম - বর্ণ একে আননের, बक्तिमा मश्यार्ग यम वर्ग गोनाएपत। की उस मुध्य धन की उ अंथि देश. श्वामा अव्यवस्था मन मन वहा मिन्धा-मागद यन इट्स विकादित, কচি ভরে ভালিতেছে মান্সে প্রতীত। বাকদ এমন কাল বাজি অভান্তরে, সেও অগ্নিতাপ পেনে কিবা শোডা ঘরে। लिह्फना बित्रसिष्ट कडरे कूरीमछ. ति जात्री धाजामा तीनार्धा विकेत। कि जाक्षा (इ शांठक उत्त (इ दनना, তাপে क्रथमती करन क्रथमी मनना। मिन वमन शीत मञ्जामक शीत, পদ্মিনী রহিছে যেন শৈবলে আবরি। মানস মোহিনী রূপ প্রকৃতি সতীয়, कृष्टिनिका छाकि यम गरन दश हित। जनती तम्भी जारमा विमान वियान, शुक्तक आँवि शक्त रहरे ध्रमाम। আমার ৰচন এই সতা কি অলীক, शांक्रक मझन्त्र मान जान ठिक।

शिक अञ्चलका वैमनी याश्राक হৃদরী বলিয়া গণা পরীক্ষা তাহার **धकवात** कत्र जुमि, कामा जनमें বিষাদ রমণী আত্তে শোড়ামে কেমনি, जानिए भातित्व उत्व व्ह भाष्ठक जन, অভুতৰ সে ভাবের সম্ভব কথন ? সর্বাধ হরণ করি গেছে দম্যুগণ, थाना जना किছू नाहि हिना म उतन। श्रुक्तन काष्ठाहेल किंद्रा जनगटन, इः शानुन कठेताधि एकार्टना जानरम। मत्था मत्था छेठिन तम कन्मत्नत्र त्रान, ব্যাপ্ত করি দিল দেশ ডাকাতির ঢোল। লোকে লোকারণ্য হলো অন্ধর বাহির, প্রতিবেশীগণ হলে। শিশার অন্থির। नाना लातक नामा कथा करह शरध घारहे. নাহি অন্ত কথা আর দেই পল্লী হাটে। এ ডাকাতী-কর্ম্বা কেবা হে পাঠক জন ? कॅगिरिय उर इमग्र कतिरम अवर्।। পার তুমি করিবারে এর অভ্যন্তব ? 'নারিকেল মধ্যে বিষ কোখায় সম্ভব। कीवरनत कार्या धरे स्त स्थीकन, স্বকার্য সাধিতে এই কৌশল সৃ**জ**ন। निक रमित्राम धति मद्यात आकात, गर्सनाम कतिरमकै यांचन (बहात। জীবন যদি না এই করিত কৌশল. কেমনে কামনা সিদ্ধি হতো তার বল।

े बाजवात्व अख्टियां १ रेटें श्रविमन, े शिष्ड कक्षान-कारन यथा जारन मीन তবেত জীবন, তবে তাহার ১নন इरेज भूग कियान येन स्थी जन। षरञ्जत जीवन इश्म निक् स्थ उत्त ? এমন স্থাতি কাৰ্য্য কোথা পৃথী'পত্তে। অত্যের লইরা শির প্রমোদ ভুঞ্জি, এছেন মজার কার্য্য কোথায় পাইব। पर्कात, महेता भिन्न भारता अर्वज्ञामि, কহিতে এ স্থ-কথা মুখে আদে হাসি। খেকের লইয়া শির তাহার রমণী. पृक्षिव भेदमानत्स (म स्थ कमिन्। কাড়িয়া অন্থের জমি হবে নিঞ্ক বাটী, কোথা পাবো ভবে হেন স্থ পরিপাটী ? परकार इरेटन दूरण निक स्थ उरत ध (इन मजान कथा काथा भृषी'भरत। अद्भाव करिया निका इरव निक यन, क्रित जब नकरन छ्यू योत्र नन। किंद्रा भरमांभद्रि भम द्रव आगि विम. করিবে চরণ সেবা দশটী রপ্দী। रहेर जामि ठाकूत जत्म इत्र (छम्। जर्क म'रव जीमि मिल जगीरदाकि उन।। वनश लोगता वन वन नत्रान, আর্মার এ বাকাগুলি হৈনিষ্ট কেন। रम रम नद्रभग ज क्यी अर्ग আৰ্ডি কি নাহি জুড়ার ? সুধা ৰবিষ্ণে

ভাসে নাকি उँ अक व वाका वर्गन ? (रामः कि एतनना अर्क व वाका खबरंग ? তবে 🔾 পাচকুজন স্থীর জীবন, কেন না করিবে এই করম এমন। जीवत्व ना कह उत्व कडू मन लाक, করে থাকে ছেন কাজ যাহে জ্ঞানালোক। পরিপাক বিভারন যার ऋদে হয়, ধরি থাকে হেন বাঞ্চা তাহার হৃদয়। বুরিমান এ জগতে হয় যেই জন, এ হেন স্থকার্যা হয় তাহারি মনন। कुनारुशित वृक्ति यात वृक्तिरेव क्रियरन, কত সুবোদর হৃদে সংক্রব ধংসনে। कीवन मञ्चात कार्या कदिल (गःभारम, প্রকাশ্যে করিল ক্রোক ভূমি ধরে ধনে। খেহেনের পুরজন পার অরকষ্ট, माहिनीत्रभगांधुरा करम इरना जरे। যে মুখমগুল রূপে মেছিত নয়ন, म पूर्वानि नित्रीकर्ण कंपरमद्व कीवन। मिन मिन उच्च की। वाहित्त भक्षत्र, প্রাণ কুকরিয়া উঠে বিশুক্ষ অধর मुम्मर्गन कति, जात, वर्ग, नितीक्रात्, জ্ঞান হয় পাংশুৰণ আবুরি আননে। পরশিলে যে শরীর হতো লোফোদয়, म प्रकृ कितिल हिन्न अस्त शिश्चमता। শনে মনে জ্ঞান ছেন যেন রক্তরাশি, -निर्शिष्ट् ज्ञाकरंभ हक्कु'भरत जाति।

শরীর শোণিতজ্ঞ হলে। সে কারণ, পাইশুবর্ণ আৰম্ভির তাই সে আনখ। প্রিধান ছিল যার সুধৌত বসন, মলিন হজীণ বাস পরি সে এখন। শোডিত বাহার করে কাঞ্চন বলয়. পিতল বলয় তথি আহা মরি রয়। ষে বক্ষে শোভিত চাৰু মৰ্ণ কণ্ঠহার. পঞ্জর-আবলী তথি কণ্টক শোভার। বেণী পাৰ্শ্বে স্বৰ্ণ-কুল শোডিত যাহার, ধুলিরাশি রাশি রাশি উপরে তাহার। চিকণ পর্যাক্ষাপরি যাহার শয়ন, ভূমিশ্যা আহা গরি তাহার এগন: চর্ব্ব্য, চুষ্য, লেছ, পের যাহার আশন; মোটা অৱ এক মৃষ্টি তাহার ভক্ষণ। এ কষ্টের ছেতু কে রে ? সৌন্দর্যা-রতন। त्रभी - गोम्मर्यात्राणि करकेत कांद्रण। धना (इ जीवन मिडे धनावाम भंड, না করিবে কেন তুমি কার্যা অভিযত। य माहिनी-त्र' लाएड कर हम काल, क्टा मध धकरांत, शांत कृषि माज । চেয়ে দেখ একবার মোহিনীর পানে. আনন্দ বিভৱে কিন্তা যন্ত্ৰণা প্ৰদানে। इस कि ना मझ। उर हाई अकरात. इस कि ना नमा छव ? कि सम जामात। मन्ना म कमन जन जान कि जीवन ? দয়ার যোজন অভে তোমার ভ্রমণ।

দরার মুখমউল পূর্ব অধ্যকর, महाबः लाहनशूर्ग यूर्ग हेम्बीवत् । मत्त्राकक डाँहा क्लि बाह बग्न डाउँ, পদ হয় হুটা জ্বস্তুত্তের আকার। নবনীতন্তম্ভ সম অবর্ব তার কৌষুদী সদৃশ রূপ আস্পদ শোভার। (इन ऋक्षांत जारवा यादांत गठन। লৌহময় হৃদি কিছে তাহার আসন? विम गुरू अक मिन माहिनी सुन्मती, अञ्चल **बर्ट** महमत अनारत करही। শরীর নিতান্ত শীর্ণ দেহে নাহি বল, ছায়া **শাত্র আহে সুধু ধনীর 'কেবল।** হেন কালে অৰ্চ হলা নারী এক জন আমি উপস্থিত হলে। মোহিনী সদন। কেশ গুলি অৰ্দ্ধ পাৰু বিউনি তাহার, . दु ि मागी उरू वाङ्ग माजिए वाहात। **ठम्मत्मत्र कों** हो। स्थार होक जातन, ইফলৈৰ পূজা চিহ্ন হরি হরি গালে। করে শোভে জপমালা স্পন্দন অধর, লড়ে মুখ লক্ষ বার পলেক ভিতর। यूर्वाकारन ठ्क्रमिन हिला हुनै जीत, कां हेरत थरनमं अरन नियार में शिक्त। নাসিকার অঞ্জাগ খুতি বি্থাভাগ, ধরিতে যাইয়া চাক বাড়াইছৈ রাগ। অর্দ্ধেক দন্তের পাতি পড়িয়াছে খিসি, গণ্ডদেশ ভাবি ভাবি পড়িয়াছে বিস।

The state of the s

্বোধ হয় যেন মহন প্রেন্ধন্তরত, थातम करत्रह गिंडा तारे गर्भ जंक। (वाध इश '(यन महन मिन्ध्या-उत्रक्त. হেন আতা চডা'পরে করিতেছে রঙ্গ। बक्तिमा अध्व अर्थ जात्रुम जक्ता, हूँ हिनारे जारह किंहू शम ध्वरक्रशाता তাই হে পাঠক স্থা চলন স্থলর. দেশি থাক পাবে ভাব তোমার সম্ভর। श्रुर्थां वर्मन थानि जल्म श्रिशान, পদোপরি বাস-শেষ বাম করে টান। वज्रम 'मगज्ञ हिना वहः अठाहित, তিরোহিত তাহা নাহি সঙ্গী পেয়ে আর। मिहे मि काइन अत्व धर्म-भार मन, পূজাকালে পূর্বপতি শতেক অপন। এ হেন রমণী এক আসি উপস্থিত, মোহিনী সুন্দরী কাছে বদন হদিত। भारिनीत शास हाहि मिके मखायान. पृथित धनीम मन छन्द्रक अकर्म। " একি লো নাতিনি হেরি আহা মরি মন্ধি, " मागांद श्रुक्ति थानि तोह यह धित। "कूत्र भंडमन मर याद्या वम्न, " विश्वक निवासी मम म प्र भूथ अथन। " नव किमनक नम क्लान छिक्। " जिला-इन रम क्यारन करत्र कर्नना " তাই সপ্ত শিরাকারে চিন্তা-হল-রেখা, " (बंड भंडमन-मरन की ग्रेटकारी (मधा।

" याशांत कड़ीकंशांतक द्वशांत कत्रण, " সে ্ষিতে হয় এবে বিষ বরিষণা! " যে সেশিগ কান্তি ছিলা কৰিত কাঞ্চন, " লৌহমর জবে যেন ভাহার গঠন। " गोलाल गालाल बार गोलाल नहीं है. 'পৃৰুষের কিবা কথা টলিত লাহীর भानग-भक्तज, अभ कति निहीकन, " সে শরীরে আহ। মরি কি আছে এখন। "ভোমার ছঃখের কথা শুনি লো নাতিনি " তব হঃখ দূর তরে আমি আকাজিকনী। " কেন এত কফ সহ মন বাকা ধর, " ভাসিতে সুধ-সাগরে তোমার অস্তর। " মনোহর অট্টালিকা উপরে বস্তি " হইবে নাতিনি তব, সুংপ্রদ অতি। " मार्ग मार्गी मन जन 'स्मिविटन छत्रन, " भातीत खतिया नित्र काक्षन-जूषन। "পরিধান পট্টবাস অভীব স্থানর, " আতর-গোলাপ-গন্ধে অম্ব ভরভর। " চর্বা, চুষ্যা, লেখা, পের ভোজনের ঘটা, " मन मिटन बाहितिर भूके क्रथ-इछ। ; " এক জান ৰড় লোক তব আতি মন, " যাহার সৌন্ধ্য-রাশি কুর্ন নিরীক্ষণ " आमि तूज़ी मांगी आ कि खिल हेक्दा कहि, " তোমার তো কথা নাই যুবতী স্বন্ধরী ১%-इकांत्र वाका खबन कतिया माहिनी, ভৰ্জন করিয়া কছে ঘনধনি कि नि-

" কি কহিৰ তুমি হুৱা ভক্তিয় ভালন, " দিতাম নহিলে শিক্ষা তোমায় এখন। "ব্ৰাহ্মণের কন্যা ভূমি এই বুদ্ধলা "কহিতে এ কথা হলো কেমনে ভরসা। " কি তুমি দেখাও বুড়ি অর্থ প্রলোভন, " কি ভূমি স্থাধের কথা করিসে বর্ণন। " यमि जर्थ दानि পारे अ मश्माद खता, " অधिकांत मम यनि इश वस्त्रात्रा, " পূণীন্থিত যাবতীয় যদি নরগণ ' " मम जाजाकां की इ'एम (जारव मम मन ; " তথাপিও এ জীবন না হয় চঞ্চল, " স্থােক সদৃশ রবে সতত অটল। " দারে দারে এক মুঠি যদি ভিকা করি, **ও তথা**পি কি পাতিব্ৰতাধনে পরিহরি ? " হজীণ বসন যদি পরি অক্ষোপরি, " তথাপি কি পাতিব্রতা-ধনে পরিহরি ? " यमि এ क्रीयन किह नश थरका हति, " তথাপি কি পাতিত্ৰত্য-ধনে পরিহরি? " थिक् म नाडीत श्रीत थिक् निरे भंड. " তাজে যে সতীৰণনে হয়ে বুদ্ধিহত। 👑 " अक्ति हिन्दा यां इहेट मधूर्य, " जिका स्पेति देई वे जान व कर्य विशूध " इंड पूर्वि अ व्यवित, केड्डि अन कारन, " बूड़ा कारन दारश भन किছू धर्म शासा।" नाहि शाम मिरे हका शब शमाबान, লজাভারে জড়সড় কথা নাহি আর।

युवजी तमगी अक अंग्र अक निम,
जीति महावि करह हांत्र ममूथीन।
" जन लग माहिनिनिनि, अक १९४ कथा
" मिता जूमि हेहा छनि, विन वांका यथा—
" अकजन धनी लांक लोमा नहेवादि,
" श्रीकाहेरित शालिक मह मगी काहादित।
" नहेत्रा लोमादित यारित अकामिया वन,
" कित्राहि महे पूर्व 'छेल्छांग मकन।"
समती म कथा छनि छात्र अफुमफ़ नहेन अकी नामी महम पढ़ वफ़।
शनाहेन शिवानरत १९४ छाति धनी,
छात्र विकास हर्त्र माहन-द्रमगी।

..1.

अक्रिम मर्ग।

"For when to the view
Forth from its rayen frings the full chance fice
New with such force the swiftest arrow flow.
"Tis is the stake late coil'd who pours his length,"
And hark at once his venom and his strength."

Downess.

" অন্ধি কাব্যদেবি, তোমা করি আরাধমা विश्व इहेल मीन हाहिशा (मध ना সৌদ্রার অমূলা রতু, দভিতে যে ধন চির আকাজিকত আমি: অদুষ্ট কেমন मम वृत्रिकार्त मादि, कदिए मसुन क्या, डेिं इनाइन जानाय कीवन। उव जादा का वारमिन, मिह कर्छ कड, कीवानत स्थ मम क्रेन विशंछ। তোমা সেবি কোখা দৈবি. হবে অংখাদয়, खागारमार्य इः थ-श्न रिधिर् कमश्र। शुक्रांन्भक वनि यादा शृक्ति किन क्रान, (म (कन इन्द्र-क्नि विव निया निता निता कुट्म अ शरदार मन्म कार्तिमा अन्त्य, কুৎসা-তীরে বক্ষু ভেদে সে কেন নির্ভয়ে? কেন তব তেজাকুর রোণিলা অস্তরে, ভাইতো গো এড জ্বাসণ সহি পৃথী'পরে। नाया कथा कहिबादा किन भी मिथारन, धर्वाडीक कति (कन क्लिन) जक्षारम ।

তোমার সেবাই দেবি; অনর্থের মূল, তোয়া সেবি আর নাহি স'বো নিকাপুল।' अं वित् काथ और निकारि मिथमी, শর্মন শ্যা। উপরি করিত্ অমনি। বিরাম-দায়িত্বী নিক্রা আসি উপস্থিত, অপুর্বে রমণী করে দেখি চমকিত। েথিয়ু রমণী এক রূপ চমৎকার, চক্ষের বালাই যায় দেখি কচি যার। কবরী বন্ধন ঘেরি শোভিছে গোলাপ, जन्मर्गत्न त्य माधुदी यात्र मनलाश। চাৰু কিসলয় যুক্ত পল্লৰ চিক্ণ, मत्था मत्था जात्र यांत स्राक् धासून। नाना कूनमञ्ज मिंथि भाजिए मीमास, মানি হইয়াছে শেষ যাহা অচতি-অতে। শ্ৰুতি নিমে ছলিতেছে পঘকলি ছল, লড়িছে ঝকিছে দেই দেশিখা অতুল। নাসা নিমে শোভিতেছে পুষ্পানয় মত, ক্রির নোলক যাছে ছলিছে সতত। मझिका (कांद्रक विनिधिंठ मूकावनी, উজলিয়া রহিয়াছে উচ্চ উরস্লী। कूलयम हूत करत, भूगील बलग याशक मिन्द्रा औषि मन का फ़िनका। किवा क्रे शां ए मन नेनरमर्ग लाए , भूनिक मानम हेडन त्य त्रीमक्ष ल्यारकः। निनीया-वर्त्तराम अजीव सम्मन, चरकार्रंजन कन करके गारह मरनाइन।



मित्रीक्षा केति वंकि खगरेन वमगी, गानहमः जश्रतः हिस्रं धः जात्र कमनि। দেখিড় দেহ উপরি যেন রে তাহার, वहिट्ड नमनमी आंद्रेशादावाद्र। ভূধর স্বউচ্চতর শোভে স্পরি সারি, निर्वात वर्वात वीति काछि गरैनाहाती.... তৰুৰর নান। জাতি কিবা ভাতি তার. जाँथि मनोक्षीनि मृत होति कि यात। তারি'পরে মধুস্বরে পক্ষী করে গান যেমনি সৌন্দর্য্য তার তেমনি রে তান। লতাগুলা নানা জাতি ফলে স্থাপেডিত. সরোবর মানাহর পবনে কম্পিত। शृङ्ग मनशानिम उक्त डेर्गात,." हरेएउए अगहिल किना मधुस्रात ! কুসুম-সুরভি কাড়ি মুহু সমীরণ বহিতেছে মৃত্ব হরিয়া জীবন। নকত্র নিকর শোভে স্থাংশু সহিত, সুবিশ্ব কোমুদী মন করিছে মোহিত। भयाजिन कर्भकृत इहेंना मम (यन. কখন নয়ন রূপ ছেরেনি এ ছেন। শরীর নিতাস্ত থকা তাহার, উপরে, এত শোভাময় ত্ৰা শোভিবে কি করে। বধা যেন স্থীবর মসুণ মুকুরে, অনায়ানে ধরি থাকে প্রকৃতি বধুরে क्त, जांत्रजनयुक, किश जम थर७ जनकरिन यथा भरत थान्छ गार्छर ।

335

म तमनी त्रंभ रकतना अमृति छेड्यून ত্রিসংসার প্রক্রিতি পড়িয়া সে ছল। - পার দেখ হে পঠিক এ চিন্তা অপন, नहित्न भन्नी मात्य अ मृश्व मर्गन। যা হোক পঠিক জন হেন এক নারী जानि डेश्रक्षे इरमा मधूर्थ अभाति। मीत्रां शृतिं इतना मम भैगाक्न, পুৰকে পুৰ্বিত প্ৰাণ দেহ স্থীতৰ। অনিমের চক্ষে তার দেখি রূপছটা अखत खबरन भात जानत्मत्र बहे।। जानि नारी धीति भीति जामादि महावि কহিতে শাণিল কথা মূহ মূহ হাসি;— '' উঠ উঠ উঠ ৰাছ। হঃখ পরিহর. "নীচ বাকো **ভাতিপাত** কভু নাহি কর। " कि ना कृष्टि थारक नीत्र श्रुख्य मानदन, " गिरम थातक छनी-म्रानि नीति धरे जरव। " कूक त्र श्र्याश्य (इति जात्क डेटेळ: यत्त्र, " म ज्या कि स्थानिध मत्याद्रःथ करत ? "কোথায় কুৰুৱ আর কোথা নিশাকর, " কোথা তুমি কোখা নীচ বিস্তর অন্তর। " তোমা প্রতি দেব ঈর্ঘা করে যেই জন, "এক রূপ জেনো তব প্রশংসা কীর্ত্তন। "নীচৰাক্য আকর্ণন করি ৰাছাধন; "ना চिलिश्र कतिरवक खुराध वर्धन है " (व श्रथ धरिक्रा आह या ७ त्मरे श्राथ, " किছू भेरत जारमिहित्व जुमियरभात्रत्थ।

"তথ্য ভাগিৰে তুমি আলম্-সাপ্তরে, ^{*}" म ऋषे जूकमा कारह कि क्रम कृ'गर्दत"? "কহিতেছ কৰ্মাৰে; এ কুণা ভংগে, " यट्यां ठिउ मनः क्छे इटना में मू, मटन । " চাকুরি কুকুরি বাঞ্চা করে বেটি জম, " তো काशीन मिरे नज अहे मि कूर्न ! " অৰ্থ উপাৰ্কন পথ আছে কত শত, " তাহা তাজি চাকুরিতে তব মন রত ? " কহিতেছ 'কাবাদেৰি তব আরাধনা, " 'क्थन भानतम भग आंत्र कतिव नः। ' " मब मांग कादारमरी अंदा दोहांधन, * না করিবে বল মোরে কেন আরাধন? * পাইতেছ কঠা বলি গ এ কঠা তোমার "द्राव नां कश्म अन वहन आधाद। "আমার অর্কনা মেই করে আরম্ভন, " কিছুদিন তার ক্ট ছয় বাছাধন। "তাহার কারণ যত ক্র্রারিত নর "পুঞ্জিতে দের নাঁ হয়ে ঈর্ণায় কাতর। * যার প্রতি আছে বাছা আমার নয়ন * ভাষার উৎসাহতঙ্গ করে কোন জন ? " अक्ठिक इटल कर मंग कालाधना, " इरेटन निम्हन ऊर्ने अफल कामना। * उर करी इर्ष मृत्र जानमा रहन " লভিবে তব জীবন নাহি যার তুল। " উঠ উঠ উঠ বাছা ধরছ লেখনী," এত বলি অগ্ৰসর হত্তৈ দে রবণী

गम गतन विभागि ज्ञाम होत, वति, " এই श्री वर्ष छव श्रीक्षात ।" र्गातकः गीज्म श्लेमा शीवन जागात। मिह भूक्शमत श्रीत गी हमएकाता यूइएर्डक माम् नाती करना अन्तर्कान, वश्ता निक्षि त्यन त्म भावी ज्ञान। ভালিল আমার মুম ধরিত টি: লিখিতে আরম্ভ কাব্য করিত্ব অমনি অংগত শর্ণকাল গগন মণ্ডল . আবরিল প্রীতিকর নীলিম। উজ্জ্বল। निर्याल नाष्ट्रामण्य नीलिमा वहर्ग, পূর্ণ চক্রমার যাহা চিক্ণ আসন। ভারি'পর, শশধর রজনী সময়, নক্ষ্য নিকর চর সহিত উদয়। তাহার সুষ্মা কিবা নয়নর্ভন, তাহার মাধুরী আঁকা স্থু আকিঞ্চন। শরতের নিশাকাল পূর্নিমা সংযোগে, मट्दोयथ नानिवादत आतु विखादतारग । শরতের স্থাপুর্ণ শশী নিরীক্ষণে छिथनिया नाहि एम काराय जीवता? ' क्र्युमिनी निज्ञ्नात्थ कति नित्रीक्नन, সরোবরে বিকসিত হসিত বদন। निश्र नम्भरे हान जाबि श्रेश्वर्श्वन, একেবারে সমৃদ্ধিত সরোবরতল। जरे तथ नाती भार्ष थिडिवियक्तन, চুখিছে निक त्रमशी वननम्थरमा



्य याचारत जान्दीरम् र्रात किया करत ? नक काण बादशीत रख नाती शहत। मानजी कोमूनी द्रिम रेदननादका श्राम, मधी (भारत मध्यान स्वीत जान। শুত্ৰ বৰ্ণ কৰা কুল কুল চতুৰ্ভিতে, आहि कि। दिन जना आँथि आनिमाउ नंतर उंजिंगरम यन शृक्षीमजी st हो डिक यात सरमाम्बर्ग जाउ। ক্তমেত্র ধাত্তে পূর্ব রূপ চিকণিয়া, যাহার মাধুরী হেরি উঠে উথলিয়া হুদয়-সরসী-নীর আৰম্ভ স্বরূপ বরষার বারি পাতে; কবি ভাব কুশ मर्खारव मञ्ज करत हैनमल हैन। ধান্তক্ষেত্ৰ কৰি কাৰা উদ্দীপনাস্থল। শরতের জোতশ্বিনী নীরে থর থর, यादात मोन्नर्गात्रानि क्लाग्न जलत। জाक्रवी-জीवन (वर्गा रहा ध्रवाहिछ, মোহন সহর ছাড়ি চলিলা সুখীত। তরণী ছাড়িয়া দিল নাবিক জুয়ারে, ছুটিল তরণী বায় কে ধরে তাহারে! শরতের প্রাতঃকাশ অতি মনোহর, তাহাতে মোহন পুনঃ তরণী উপর। উঠিছে শরৎ-রবি मদীতীর হতে, ষাহার দৌব্দগ্য তুলা আছে কি জগতে? হইতে পশ্চিম তট রবি নিরীক্ণে জ্জার ন্রন মন চাক হলোভনে।

উদিত রবির মুর্ত্তি পার্ভ গঙ্গানীরে, अधिखंख छेटठ यन नमीमीटन थीटन। পুরু, তীর, হতে পুনঃ নির্ধি পশ্চিম, मानव-इनता, इंग्र जानन जनीम [ै সুরমা হর্ম উপরি পরকলা শোভা, নর-মন মুগ্ধ করে প্রভা মনোলোভা। কাচখণ্ডে রবিরশ্মি প্রতিবিশ্ব পড়ি, কিবা শোভাষর মূর্তি আহা মরি মরি! প্রজ্ঞানিত বহিশৈখা গৃহ অভ্যন্তরে, জ্বলিতেছে বোধ হয় দর্শক অন্তরে। নিশা শেষে শরতের রুষ্টি নিপতনে, সুমিক্ত রহিছে করি চাক তক্গণে। তাহারি উপরি মরি রবি-রশিষ্ট। উত্তত করেছে আছা কিবা রূপছটা। শরৎ আনদে মাতি বেন তকগণে. আবরিত করিয়াছে কাঞ্চনভূষণে। ्रक्टिरकां हो। इनिरुट्ड उक शब्मम, তাহারি উপরি পড়ি রবিরশ্মি রয়। লক্ষ লক্ষ্য প্রাপ্ত পারদ তপন, সজ্জীভূত করি যেন শাখীর আনন। याकात स्वमा ृ (इति स्वक्त स्थीमन, যাহার হুষমা করে আঁথি আকর্ষণ। श्राक जनगीत्थानी हिलाई वाहिला, পড়িছে তরীর জার আর্বণ মোহিয়া। স্থীর স্বিজ জন করে প্রতিঃ মান, गर्पा गर्पा जारह जात तमनी-वन्नान।

मत्था भरथा लच्चेरके बह्नि लर्जन. नित्रभिष्ट तमगीत आनम ल्यां छन। जनहंत्र शकी नान। (मन्न महद्रव), যাহার সৌন্দর্যা করে নয়ন হরণ। মুত্ন মুত্ন সমীরণ হয় প্রবাহিত, যাহার পরখে হয় শরীর মোহিত। जांद्रवी - जीवन शिद्य पृष्ट् मभीतन, হাদর উথলি উঠে উর্দির সৃত্তন। च्चकुछ शिक्षानकून खांदक ममीछा है, व्यवनकूरता मिरे स्थानृष्ठि वरहे। এইরপ নানা পোড়া মানস মোহন, स्याइन निविध यूक्ष, ध्यांच विरुचन। অসার সংসারে সার প্রকৃতিশোভন, यक्ष्ट्रम यक्षणांन (यमन मुखन। यथम প্রকৃতিসতী ছেরি নদীতটে, गानम - पूक्रत जाद आकृष्ठि धकरहे। थारशंक शिलांग जारक मानम-मन्दित, नमी-देशि निवानता यथा समीओदर। পরাণ নাচিয়া উঠে সে শোকা দর্শনে, জ্গতের যত জ্বালং ভূলি রে সেক্ণে। श्रांत ता, कविश्वमश्न, . किवा मणा खब राजा ता, धाक्ति मजी मर्गन, छेश्मव यनि बाष्ट्रमादत्र मिछ छद्दत्र याजना १ कि मना एटा दि उर उर उ रन न।। यथा एके भिक्तकरह आयमं अध्यान, कारण कार्छ विज्ञान अदक क्रिकान।

कवित मि मा ठिक भेड़ि इसे करत, মতিজ্ঞ পাপিছর। কথন কি করে। किश्व यक्षा भाख इत्रा वना नद्राभन, मीकात्रकद्रग তत्त्र शन्हा९ धावन। ভয়ে ভীত জ্বস্তান্বিত কম্পিত শরীর, নিবিড় অরণো ধার ছেরিণ অহির। र्ठिक मिड्क्रेश कित द्वर्ध नज्ञ हारा, নদীর বিজ্ঞান তীরে শক্ষিত স্থানীয় পলে গিয়া ছেরিবারে প্রকৃতি রমণী, मर्क इः ४ मृत्रीकृत्र, मर्गत य धनी। ट्रिकाटन रमहे इट्रल यिंग यात्र नद्र, নর দেখি ছেরে ছরি কবির অন্তর। মোইনের তরী আসি হলে। উপন্থিত, শূকপুর বাঁধা যাটে; মোহন হরিত। শূরপুর আম স্থা হয় কি ম্রণ ? জীবনের জমভূমি হে পাঠক জন। শ্রপুর আম খানি অতি মনোছর, প্ৰাহ্মণ কায়ত্ব বাস আছে ত্ৰিভীয়। অটালিকা মনোহর আছে শত শত, উদ্যান প্রযোদ স্থান আছে কব কত। একক জীবন বাবু আমের গৌরব, ना इहेरन र्कम बाद र्जंजून विख्न ? **अक की वन इराज और नंकी पछ।** প্ৰভূত প্ৰভাৰ মান ঐম্বা অনস্ত। অন্ত আর একবার স্থীর মোহন अटमहिना अरे आदम कूडूरनी मन।



ष्यपूर्व छेम्यान अर्क षाट्य की बरंगत, দেখিবারে যাহা কাঞ্চা পুনঃ মোহনের। शृंदर्व येटर अरे औरम जारेना मारून, निट्यामान मिथारेमा जारादा जीवन। মোহন জীবনসহ তাই পরিচয়; मिथियादा त्म छेमान थ्रकूझ - इनग्र চলিলা मार्चन धीत नामि जती इत्ज, মোহন প্রকুল কত কহিব কেমতে। বাঁধা ঘাট হতে পথ অতি মনোহর, इरे शांद्र मियमाक कां छे कि सुन्दर! নানা লতা ফুলভরে ঝোলে তকবরে, यादांत्र मिनांदा तानि भाष्ट्र मत्नाद्रतः। তরপরে নানা পক্ষী হুখে করে গান, তৰতল অৰ্গছন মনে হয় জান। मट्या मट्या मभीत्र वटक भाषी'शद्र, স্মধুর স্বর সমুস্তিত করে। মোহন প্রবর্ণ করি শব্দ সুললিত. শরীর শীতল তার জীবন মোহিত। আসি উপস্থিত ধীর জীবন - ভবনে, मत्नादत पढ़ोनिका भूग स्ताउत्। बिउन श्रवमा द्यं अत्र ध्वनिउ, স্তম্ভশিরে কাৰকরি অভি স্থশোভিত। मर्पूर्य क्रार्मानान क्रमञ्जू क्रन কত পুষ্প প্রকৃলিত সাক্টার্ণ মুকুলে। দেউড়িতে দীর্থকায় 'বিপাই পাহারা; হুদর শক্তি হয় নির্থি চেছারা!

माइटनत आगमन कानाहन। मात्री, মোহনে বসিতে স্থান দিল। কর্মচারী। শেহনের আগমন কারণ জিজাস। করে কর্মচারীগণ অতিমিষ্ট - ভাষা। জीवन खबर्त नाई अनिना माइन, পলীপ্রাম দরশনে অনাত্র গমন। -জীবন কেমন বাস্ত প্রকৃতি দর্শনে, অবিদিত হে পাঠক আছে কোন জনে! জীবন ভবনে নাই শুনিয়া মোহন, বিষাদে মান্স তার হইল মগন। জীবন কি সর্বনাশ করিছে তোমার, জাননা কিছু মোহন সংবাদ তাহায়: कीवरनत अधान य हिना कर्माहाती মোহনের সহ জানা আছিল তাহারি! মোহনেরে করিল সে যথেষ্ট আদর। ভোজনের আয়োজন করে অতঃপর। চর্ব্ব, চুষ্য, লেছ, পেয় ভোজন স্থন্দর, ভোজনাত্তে ভারাক্রান্ত মন কলেবর। আলম্ম বশত ধীর করিল শয়ন, भारत्व राला भारत निमा स्नाकर्वन । মোহনের নিক্রাভঙ্গ হলে অপরাত্তে, अमीश वामनामिशा मिशिए छेमान। নিজ মনোগত ভাব কহে পুরজনে, পড़िल विषय॰ গোলে কর্মচারীগণে। জीवन व्यवस्थात छेनान कहेक উন্থাটিতে ছিল মানা শুনহ পাঠক।

ইহার কারণ হবি অব্দর সহিত त्नई तं छेमान इनी हिमा मरवाबिंड। कीवन स्थाइत्य तिष्ठु कति अभानत, एमधारेब्राहिमा भूटर्स डेमान सम्बत्त। সে কারণ পুরজন করিতে বারণ, जनक रहेना अर्व ए शिक्किन। कतिना आरम्भ जारे छेमान मानीरत, ফটক খুলিয়া দিতে মোহন সুধীরে। र शाठिक श्वीवत डेम्यान वर्गतन, আমার নিভান্ত বাঞ্চা বর্লিব কেমনে। अत्मात्मी कृष्णनात्मवि वत्मा अकवात मीरनद्र लथनी भरत व वाक्षा आमाह। তুমি দৈবি নাহি হও যে কবি সহায়, কেংখার তাহার কাব্য সমাদর পার ! श्रमीर्घ डेम्यान मिरे विश विश कुन, श्रुडेक शाहीरत राता बद्रग धवन। জীৰনের অটাদিকা পূর্বভাগে স্থিত, ज्ञातमहम मह यादा मः याद्विछ। थार्माम-डेमान वहे भाज मत्नाहत, যাহার সৌন্দর্যা হেরি, প্রকুল অন্তর। क्रोरकत इरे ভिट्ड इंगे मीर्च खन्न, শুন্ত শিরে হুটী দিংছ বিস্তারিয়া লম্ব। বিয়োনিয়ালতা খেরি আছে শুরু অল, স্মীরণ সহ যাহা করিতৈছে রজ। छेगान धाराम कति अमंख मंत्रनी, बाडि खनी, भद्रशीत इशार्ष कमनि।

দিখণ্ডিত স্থাশস্ত পথ কিছু পরে, इंगे পथ अर्काट्स मम अर्क धरत। তারি মধ্যে গোলাক্তি চানকা স্থলন নব দুর্মাদলে পূর্ণ অতি প্রীতিকর। তাহারি উপরি নানা তক্ত্বলে নত, শোলাপ কত থকার তাহা কব কত। क्रमीर्व मि शामाक्रिक हानकाः मात्यः, वार्शन मोमर्था कृति धारमाम विदारक। কুকির সৌন্দর্যা রাশি বর্নিবে কে আরে ? তাহার মাধুর্যা তুলা আছে কি সংসারে ? य जन कथन कृषि करतह मर्गन, श्रृ (महे अनं कारन (मधन कारन) শরতের শশী কতু নছে কাছে তার। সরস্থিত সরোক্ত আস্পদ লজ্ঞার। তাহার মাধুরী কুধি এমনি কুন্দর, मन्मर्गरन ज्यासहीन जांचि करनवत। (यमन विश्वभाषत विदय जाकर्राण. জীবনের যত জ্বালা সে তক রতনে তেমনি শুবিয়া লয় ছে পাঠক জন. শরীর পবিত হয় দর্শনে যে ধন। श्रुमीर्श (म गामाकृष्ठि हानका छेश्रत, কত শোভামর তক আছে শোভাকরে। अकी अकी उक वर्ग कड जुन. যেটি হেরি সেটি যেন-পুষ্পতক-ভূপ। अर्काट्यम्य इति भन्नती सम्बद्ध, थक **ब्रे**झार्ट भागि किছ एव शव।

পুনকার স্থানত পথ আর্ডন, यात्र शार्त्य क्लंबिनी कूछ्य इंट्लांडिन। কিছু পরে প্রস্তর-নির্মিত বাঁখা মাট. यादा रहति धूनि म्या मानमकवाछ। गत्नाच्य मत्यायत नीतः 'छेनमन ত্র একটা আছে তায় ফুলশতদল। কুমুদ কোরক কত শোভে সরোবরে. নীর ছাড়ি শির তুদি যেন বন্ধবরে কুমুদিনী অথাসর করিতে আহ্বান, কি কচি তাহারি মরি জুড়ায় পরাণ। সরসীর চতুর্ভিতে ঝাউ সারি সারি, সর-চতুর্ভিতে পথ অতি মনোহারী। ঝাউতরপরে নানা লতা ফুলে নত, গুঞ্জিছে মধুকর তাহে অবিরতঃ ঝাউত্ত্ব লতিকার গলাগনি করি, गदमी मुकूदत मुर्च स्माट्ट एमए पति। चक्द मदत भीनकून जारमारम जाकून, मलितिष् मत्न मत्न मोमर्था प्रकृत। भीन-मखंद्रर्ग नीत जेमम कांभिड, তৰু প্ৰতিকৃতি নীরে তাহে আদাড়িত। বোধ হয় সরঃনীরে গছন কানন, এর অঙ্গে উহা পড়ি অপুর্ব্ধ শোভন। সরসীর চতুর্ভিতে সুশ্রশন্ত পথ, **এक পার্শ্বে বাউ অন্যে বর্তুল, মন্মথ।** নিবিড় পাদপ-পত্ত শোড়া মনোহর, তৰতল সুণীতল খুনা রবিকর।

विमाल मा उक्डाम विमाधमभन आगीत आर्वत आमां मृतीक्ठ रहा। फेरेटला॰, शांकश इंगे - मत इंगे धारत, আপনি বিযাদবদে হৃদয় আগারে नित्रीकान कित यात्र विभर्ग माछन, एक नुष्टेकिश यन कदिएक दिक्ता কোপায় লতামওপ শোড়িছে উত্থানে, যার তল তৃপ্ত করে সম্ভপ্ত পরাণে। মঞ্জ নিকুঞ্বম কোথা সুশেভিন, यादात माधुकी केंद्र , जाबि जाकर्षन। পাদপ মণ্ডপ কোথা কৌশলে নিৰ্বিত. যার তলে অর্কিট পুল্প হুলোভিত। পामर्थ मण्य धारक जारह जदकिष्ठे, হেরি দুবীকৃত হয় নর-চিন্তা-কীট। কত রূপ অর্কিট কে করে গ্ণন, তকর উপরে মরি তকর সূজন। কত মত ক্যাক্টাস শোভে স্তম্পালে याकांत गठेन (क्ति क तार्थ कांनिता। কোথায় ভারবেনা শোভে চানকাউপরে, কে খার রঞ্জিত তব্দ শোভে থরে খরে। (काषा ऋषु जृमिष् भूगं पृक्षामतन, যাহার শাবন শোভা অতুন ভূতলে। কোথা কোয়ালিস কুল দিক আমোদিয়া माधवी मानजी काश्वा जरू आक्रामिशा। काका मधुगद्धा डार्टन अरमान डेक्कान, কোথা শিরোপজি ফুল আফুলে পরাণ।

কোথা ব্ৰুমকাৰতা শোভে মঞুৰ মুৰতি, পাধীনতা কুন কোৰা সুচিকণ অভি। নত। নজাবতী কোথা পরশে লক্ষিত नाती लक्कावजी यथा नत्रम्भार्म छीछ। পলাশ বছন কোথা কোখা জেসামিন याकात क्रशतिमाल मन क्रांच मीन। ठम्भक कूछेज कांधा कांधा (मकानिका, প্রদাপদ্ম জ্বা কোখা কোখায় মলিকা। কোখা খা নৰমল্লিকা কোথা ভূচম্পক, কোখা বা যুথিকা জাতি কোথা কুৰুবক। কোথা শোভে গন্ধরাজ, সেঁওতি সুন্দর, কোখায় কুটজ শোভে জাখি-প্রীতিকর। কোধা ভূক্তপত্ৰ শোভে কোধা হরী চকী. স্থচাক চন্দন কোথা কোথা আমলকী। धनारेक माधनाना काथा नाकिकी. কতই ব্ৰুতী তথি উদ্যান-শোতিনী। হত তৰু আছে তথি কে করে গণনা ? কে পাত্র উদ্যান শোভা করিতে বর্ণনা ? मिर्ड म छेम्। व जात महत्व मंद्रशी, পারিপাটা ঝিবা তার কছিব কেমনি। मर्था मर्था जारक कान विमर्क कुमाब, বিনিশ্বিত শ্বেড শিলে অতি প্রীতিকর। डेल्गव डेल्ट्रक इंडी डेमान (माडन. त्री भाखरंख मूक्तां वकी त्यन डेक्ती रूप। কোথায় গোলকধারী লতিকা নির্বিত, প্রবেশিলে তার মধ্যে শরণী-বিশ্বত।

কোখার প্রভুল কুলে 'গুঞ্জিছি অলি, (य श्रीन कश्र-क्वानी जूनांग्र नकि। কোখা मगीत्र हृषि श्रक्त कूछ्म विखातिया शतिमन धारमारमत धूम। কোথা তৰুসহ ক্ৰীড়া করে গন্ধবহ কিবা সুদ্দিত তান তুলে অছরহ। काथा मधिमुची करत मधुन्यक्त गान, কি তান এমন আছে তাহার সমান। কপোত কপোতী কোথা বসি শাখী'পরে, **ठकु मर्भा ठकु मित्र। तर्ह (श्रमाख्या**। বায়স বায়সী কোপা জ্বোড় বাঁধি বসি, বায়স বাড়ায়ে জীবা সোহাগে বায়সী। वात्रमी वांजादत हक्षू अमनि आंगदत, খুটিছে বায়সপুত্র প্রফুল অন্তরে। अद्य द्व विष्टक्कून कानी नद्रगर्ग, প্রেমশিকা দে রে তোরা শিখুক যতনে। প্রেম কি অমূল্য ধন জানিস রে তোরা, প্রেমের কি ধার ধারি মানব যে মোর।। প্রবৈশিয়া এ উন্থান স্থীর মোহন, প্রমোদে উদ্থানশোভা করে দরশন। কভু কোন তৰুপাৰ্শ্বে বসি হৰ্ষমন, তৰুর অপূর্ব্ব শোভা করে সন্দর্শন। কভু বসি পুষ্প ধরি জ্রাণ লয় তার **डेशनिया डेटरे जारंग ऋथ भावानात्।** কভু কোন পৃষ্পাশোডা করি নিরীকণ, আনন্দে উথলি উঠে তাছার জীবন।

কভু ৰা লতামগুণে পশি কিছুক্ণ, কপোলে বিভন্ত কর সচিত্তিত মন্। ভূচশাক ৰাৰ্দ্নি এক, পদে ভ্ৰাম্ভিক্লমে, যত্ত্বে তুলি সম্বোধন করে সসত্ত্রমে। . " ওরে রে প্রস্থন বল আছি: কি কুক্ষণে, " সাক্ষাৎ হইল তোর এ অভাগা সনে।. " এখনি বিবর্ণ হবে এ তোর বরণ, " कि माधा जामात श्रनः अमानि की वन। " जब ध्यमाकां उकी मधुमकि जामि नरे, " মুদ্রে ধরি সমাদরে তোষে সে কতই। " এ তোর উপর দিয়া ৰঞ্চাৰাত ৰছে, " সেই কষ্ট চিত্তানন্দে তোর অঙ্গ সহে। " চাকচকাশীল कूटन नदा] रंगभाषदा, "কতই যতন তার উদ্যানাভান্তরে। " যদিও সে শোজা নাই তবু শোভাময়, " এক পার্শ্বে এ উজ্ঞানে তোহার উদয়। "বিস্তারিয়া তব দল হবির কিরণে, " এই যে আছিলি তুই কত স্থাপোডান। ' 'কিন্তু রে এখন তুই পড়ি পদে মোর, " এ ভ্রম্ভ ক্রন এবে সেই শোভা তোর। ' मदना वर्षावधवा मना ठिक द्या, " भन्नीत श्रेक्स कून ठिक मरे यन। " পঞ্জি। প্রণয়কাঁদে কি ছগতি তার, " कुसकनकिनी इत्र जांकुम नकात। " कबडिया यांगी-कून कबडि शिजारत, " नीन नम्न-प्रकृत स्थित वेंश्वात बाह्यतः।

" गत्रल कविश्व मना, अर्दे शूष्ट्रा श्रीह्र, " জীবন সাগরে পড়ি ছারুছুরু খায়। " भश्चिंत् त्कि-झाजूकी चल्क निष्टिनंत्र, " দেখি দেছতরী দক্ষ চালাইতে নয়। " জীবন - সাগার - উর্বি উঠি ভয়ঙ্কর, '' गग्न करत मिছजती किছ मिम शत। " कर्के अभी फ़िड छुनी मुन्ना (इन र्रिक, 'रुड़ यखना (मर मीनजा वानीक। " মানব চাতুরী গর্বন, ধেদাইয়া তারে, " नदत्र योत्रः चहचत मृत्यु शश्त्र शह्त । " महात्र बहेता होन मकल एकात, " (नेशरतद मद्या श्रंश जनमा यो मत 'ধংসহদে পড়ি প্রাণ তার হয় সন্ত, ু" ভবে জন্ম ভূঞিবারে যন্ত্রণা অনন্ত। ' ' ভোমারে। 'এ দশা ঠিক যার পুষ্প করে: " দুঃখ ভাবি এ পুসৌর বিলাপ যে করে। ं भोग नाम तम मनात शहम जाना नत्न, ' আদিতেছে শর্ম করি নাশিতে জীবনে।" जमन क्रि जैमान धक्रा भारत. कत्वदश्युक विभए भनन। आगि शीत **रांश शाटि विमन** माइन, विजानस्य (इस्त भीत मत्रमी (भाजन। मिवारलांक मृत्र कति शाश्ले इकरत, ध्मत रत्न वाम शकि इविख्टत,_ नामिल गगन राउ राउ शाही निक, শোভিল ললাটে তার তার। আকমিক।

প্রাচী পরি পাংশু রাস পশ্চিম লোহিত. নিৰ্মল নীলিষা শোডে জার মধ্যভিত। এক একটা করি ফুটি তারকাকুস্বম, वर्ग मतमीटङ किया मिमर्सात ध्रम। गांध्नित शिष्ट शिष्ट धाला निनीधिनी, ताका कार्या कतिबादा अहे तम (मिमी। শারদ হ্রধাংশু উঠে পূর্ণী উলাসিতে, কি দ্ৰব্য স্থীর মন ছেন আনন্দিতে? স্থামি কৌৰুদী মন মোহিতে মহীপ আবরিল অঙ্গথানি প্রকৃতি পতীর। সুচাৰু চল্লিকা লোৱে চাৰু তৰু শিৱে, সে শোকা হৃত্তিম করে মানৰ জাঁথিরে। कूभूम-वास्तर (इति कूपूमिनी धनी, কোমল সুৰক্ষঃত্বল বিস্তারে অমনি। সরোবর স্থােশিভিত কুমুদিনী কুটে, क्रमूमिनी क्लीमूमीएउ मिन शामि गुरहे। इंट मरी दामि (पिथ शमिल मानजी, ছুটিল স্থরভি তার প্রীতিপ্রদ সতি। শেফালিকা কান্তাকান্তি করি বিলোকন. আর কি রহিতে পারে হেরি সে শোভন। নেও হলো প্রকুল্লিত, হাসি মিষ্ট হাসি, সুসক্ষিত হলে। কিবা সৌন্দর্যা প্রকাশি। मिलका हिल्लका (भरत्र माधुती विकारण, वृशिका मिलिका भगारण थल थन हारम। (बंडे नेपक् ठक्तिकां हुः ४७% ४० करत. वाइङ আइङ शिरत वक्-मधु स्रत।

कान कून भाग (भरत विश्व कि कृतित. হাসি ,ঢলে ৰায়্বলে কিম্পিত শরীর। कामिनी कुछम कूल किया कुछमिछ, বিধুর বিমল বিভা বাসে বিশোভিত। धवनिञ इत्यीं शिति हिस्ति। धवन, भश्ं भभ् कतिराज्य अति अनमन। य পাৰে ফিরাও আঁখি সব • अखमत्र, শরতের শাদা কদি খুলি যেন রয়। ह् शिक्त उर मर्श योत मीना मन, শরতের শাদা হয় তাহে নিপতন। भाषा मन (यह जन धरत अ जूनन, ১ শরতের শাদা তাছে সোহাগে কাঞ্চন। জাঁধার অন্তর যার সে কি ইছা বুৰে. কপি হিরণায় হার মূল্য কড়ু ছবে: धनगरम गढ. यह मि कि श्रेक्टिव সমাদর জাবে কভু পাঠক স্থীর! जरकाती. इतांचाती, ७७ स्थीलन, अकृतित (अभाकां क्की क्या कि कथन ! धनमाम जब्द त्यहे जात बाख मान, প্রকৃতির প্রেমস্থা কডু বরিষণে ? উত্তপ্ত বালুকাময় মক্তৃমি'পরে, वत्रशांत वित्रवर्गं कडू कि दि करत ? यांशांत कानग्राक्य मर्ककृषि नम, সে স্থল করিতে সৈক্ত প্রকৃতি সক্ষ্ नृथीं भरत (थे योता खक्रां भारति তারা কি কছু হে বুঝে ! বুঝে কি স্থনীতি ?

প্রেত বেই প্রেতকার্যা,ধর্মগ্রস্থ তার, প্রেতপক্ষে প্রকৃতি হে কেবল জাগার (মোছনের শাদা মনে শলতের শাদা भिक्षां वाक्ष्म **अब्र** क्रुंशार्टित दाँमा। প্রকৃতির প্রেমনীরে ছদি-সর তার, উছলিয়া উঠি প্রেম ধরে নাছি আর। **मार्मित्र स**नि-मत्त्र जात त्थम-नीत. পাইবে কেমনে স্থান পাঠক স্থীর। পঞ্চ ইন্দ্রির তার পঞ্চ পথ দিয়; প্রকৃতির থেমনীর সয়নে বছিয়া, क्रमत्र - गत्रभी जोत्र मिल छेष्क्रलियां. (धम-मीत कामां जांद जांद्र हक्क निज्ञः বহিতে লাগিল সুধি, তাই বেগবান্, মোহন হাধ জুরারে তাই এত টান। সেই সে উছান-শেহতা অতি রমণীয়, ছে পাঠক, ভাব তুমি মনে ভবদীয়। তাহে নামা জাতি কুল সন্ধা-আগমনে বিকসিত সুহসিত স্থাংশ কিরণে। তাহে সমীরণ চুহি সুগন্ধি কুসুমে, ভরিক্লাছে পুলেপালাম পরিমল-ধূমে। তাহে সমীরণ হার কাউ ভক্-শিরে, মাতাৰ করিয়া তুলে জোতা হুহুধীরে। সম্পূৰ্ণ স্থাংশু শোডে ভাছে শন্ধতের, अधानि श्रमांन चन चनल बद्दन, नाजीमात महिलाइ, मोक्या कम्म ?

यन भारमारमें कान ्जीताराण हुएछे, र्श अधूमिकिशन शीम (यम कूर्छ। योर्ध - मक्ष्मिकिशन ना क्रिंग्डिंव रकने ? সুধাংশু - সরোজ - মধু পীতে ধার বেন। অলক্ষত সুরঞ্জিত সেই নডজল, बांश मित्रा मदःनीत शकि अविकल। यदाकिनी जावि महन क्यूनिनीगत्न, यर्ग - मधुमिक (यन मत्रमी - कीवटन। करल (इ शांकित अन भा डेमान-डल. হটয়াছে ঠিক যেন সুর বর্গ ছল। জগতের যত আহে দ্রব্য জীতিকৰ, इहेबार्ट जगार्वण डेमानां छाउत। একটা হুন্দর জবা সে ছল বজিত, বল দেখি কোনু মব্য পাঠক পণ্ডিত ? अम्भीत मधुमार। वनन मछल, नाती-जान नाहि यथा गृज मिरे द्रन। (क् शांठक, ऋधीवत्र, अटक्स উन्ताहन, -क्ष भी (अंद्रमी-मद्ध कि सूथ अमार्ग। क्रभमी युक्जी खाई।। महहती कहि, न्त्रभन्ने किया करत कह धति विषारित व जेमाम किया श्रीिकक, मर्टिश मरका मधूमांथा वामा-कर्शव्यत्र, ত্ একটী শুল্লি তৃপ্ত আৰণ-বিৰয়। म स्थ ज्वले काड कि स्थ मर्था मर्था जारह जोत क्ष्म हजन, বসাইতে বেণীপার্মে, সে স্থুখ কেমন গ

मर्था भर्था चार्ह हाक करत कत छत, আৰিজন ও চুম্বন, কিবা পরিসর ? উদ্যান অপুর্ক্ক শোডা করি নিমীকণ, অপার আৰম্মনীরে মোহন মগন। প্রকৃতির প্রেমস্থা করি স্থাধ পান, সে অন্তর মাতোয়ার। প্রায় শুক্ত জান। হেন কালে গৃহয়ার উল্লাটিত ধনি, रामा थीति थीति धक महा खन गंगि। পরক্ষণে রমণীর ভূষণ-সুন্মর, क्षण्डिन छेगादिन अवन - विवत । অগ্রসর সেই অর মোছন সরিধি, किছू ना अर्न माइन तारे मंद्र विधि। এমনি অজ্ঞান হয়ে বসিয়া মোহন, राष्ट्रकानमूख धीत, कि करत खना? जाशूर्क तमनी अक शीक्र धीति जानि, দাঁড়ালে। অপুর্বারণ তাহার বিকাশি। ह् भार्रक स्थीवत त्म तमगी - क्रभ, वर्ति उ नामना मम वर्तित कि क्रश। जामि जिंछ मृहमि विमा दुकि नारे, সুধীরে ভূষিব কিসে চিত্ত কুল্প তাই। तीनां शांवि बाग्राहिष छेत्र धकवात भीरनत्र (मथनी पूर्व, मझा किंदा जात। विश्वविमानत - विमा यमिष्टू मा नार्र विकास मान जार कि जबारे। প্রকৃতি প্রদত বুদ্ধিকণা দেহ দীনে, विश्वविद्यालय - विद्या मृत्य ग्रिशिय।

गेनित मा इंटगांस अंटगांस, तमात्रम ग्निम मा बाक्यर्ग माख नतम्न। ए श्राप्तक, ऋधिवत, अ तमनी कर्भ এ ভবন মোহনিয়া এ বিশ্ব লোলুপ। এ নারী সৌন্দর্যা সহ তুলনা কাহার मिर (इ शिठक खन, मम कई जात! ब नातीत ज्ञान किंक ब नातीत मछ, তুলনা তুলিতে তার কাবা অসমত। তবে ত পাঠক জন যে ছেরেনি তারে সে রূপের অভুত্তৰ পাবে কি প্রকারে? সেন্দর্যোর এ স্থন্দরী যুবতী ছহিতা, মঞ্জ - মৃত্তি মশ্বথ পুন: এর পিতা। त्म बामाज्ञभ डेभमा मिवकांत्र मत्न १ जित्नांखमा मह जूना अजूाकि जूरता। यावजीत त्रमगीत वक्ष कि मरत्र, বিশ্বকর্মা তিলোভমা সুজে ধাতা ভয়ে। ध नाजी अ राहे जा त्र ज्ञावल मात्र. তিলোভদা দেবী, ইনি দানবী-আকার। जित्नाखमा हात्रामाख देनि वह-नाती, দেখ হে পাঠক স্থাৰ স্থানা তাহারি। স্বার বর্টুকু গোউর উজ্বল, आतमिनिया नामी यथा करण बनमन्। গোলাল গোলাল ক্ষান্ত কৰ্মান্ত, **ভাবিলে ছদরে ত্বারে নিজা আকর্ষণ।** হন্দরীর বেণীলোভা কচির চরম, ধূম-বন্ধ * বিনিগত ধূমপুঞ্জ সম।

^{*} Chimney.

যেমনি চিকণ কান নিবিড তেমনি, विनारेश (वंशीश्व लिख श्रि श्री) यर्ग जोशा कुन याक म हिक्न हुतन, क्रिनीन निर्दापि काम इम्र कृत्न। সুক্ষর ললাটধানি যেম শক্ষয়, বিস্তার করিয়া তার চিকণিয়া তত্ন। কি চাৰু জয়ুগ তাম কিবা তার টান, यादां इसमा कार्ड श्रक्रव लाग। সে চাৰু জয়ুগ সহ তুলা দিব কার, প্রতিমার সধী সম অধ্যুক্তকার। आंत्रज लाइन इही मिल्का - मार्गत्र, তারা ছটা মহাশিরি তদ্ অভাতর। म औथि दिल्लालां शिंह शिक्टल शांठक, বুজিতরী বান্চাল ছুরায় মস্তক। সে আঁখি কটাক স্থাধি অতি ভয়ম্বর, कुछनी ভाषित्रा यन मश्य विषयत। কুর্মিণী আঁথি সহ কুলনা কি তার ? मिर मदनजा रेका कृष्टिनजा थाता কুটিলতা ধার ছোক, সেন্দির্ঘের খনি হেন ক্ৰমলে তারা ধরে কে ধরণী ? হেন ভাসা ভাসা চকু কে দেখেছে আরে? त्म भौषि कुमनो मारे अञ्जित मश्मारत। ত্ৰিল জিলা কিলা বিভেগৰটি ভাৰ, এমৰ জ্ব্য নাসা কার আছে আর ? নাসা নিমে ক্ষাতর ওঠাণর শৌড়া, हेक्हेक् करत नान (भाषा मरनारमध्या।

তামূল জকণ বিনা,তামুলের রাগ, जधद पक्षन थाटा नृंदी. नूसंडाग। मधूत जशरत शति किसे मिसे शामि कि माधुती जारा मित्र जाहर तम अदानि। পুৰুষের আঁথি'পরে পড়িলে সে ছাসি, চবু চকু চক করি যেরে তমোরাশি। त्रीमामिनी बिक यथा विकारण आधात, সে রপদী ছাদি হেরি তম ত্রিসংসার। इमि-त्रि (शरा कूछ मन्त कुँममाय, धर्भ धर्भ भर्भ करत धरमञायात। কি চাৰু চিবুক খানি কিবা তার ভাতি যাহার হ্রমা হেরে আড়ে রে অর্ডি। करन (इ পाठिक अन म नात्री जानन, ইউরোপী চিত্তকর ছবির মতন। य त्रमगीनिध - मूच नित्रचि भाष्ठक, শরীর লোমাঞ হয় পড়েনা পলক; (य नाडीत भूथ-इवि कति निडीक्का, रेष्ट्रा कर स्मथ जारूत हरक गर्ककण ; এ নারীর মুখ-শোভা ভজপ মধুর, म पूर्वाच चित्रीकर्ग मर्क इःभ नृत। थीनारमण लाजायत अर्गित जाही, ঝক্ ঝক ঋক্ করে ভারামগুলকাটা। कामन मि नकश्यन धर्ति शुद्धानक तिक सनत केला नीटिंग थेर थन। সে সৌন্দর্যরোশি সহ করে দিব তুলা, कमच, माড़िच, शिक्ति शंवाकनि क्षत्रा

महिज पूननां निष्ठ शांफ स्मान करि, পচা कथा विठा बर्ला क्यान प्रशी-ति ? আর দেধ ছে পাঠক কদৰ সহিত পরোধরে তুলা দেয়া অতি রিগর্হিত। कमच सूकुछ खता (कमंत्र कर्फरक, নহে অকুষার-তত্ত জানহ পাচকে। गिति मह भरताथरत कुमा एमा यहे, का ७ कान मुंब स्थि कृषि (कारना मिहे। যে পারে কোমল বক্ষে চাপাইতে গিরি, দয়া তার দেহ দিকে নাছি চার কিরি। পদ্মকলি কুচে তুলা দেয় যেই জন, কারে বলে কুচ-শোভা জানে না সে জন। তবে এ কুচ-গঠন কাছার মতন্? এ কুচ-গঠন স্থা নাগর - মোহন। य कृष्ठ-लाख्दन नाजी नद-निद्धामनि, বে কুচ-শোভনে নারী সৌন্দর্যোর খনি। य-कूछ-ल्गाख्टन नाजी-क्रथ ख्रेशनाज, যে কুচ-শোভনে নারী ভূবন ভূদায়। म कूछ यजन श्रि ध कूछ गठन, এ কুচ মাধুৰা নর অমুদা রতন। इसती (बांफ्नी क्रिंक, नश्चाम बानीक रतिन त्य बक्करभाष्ट्रा जाएका जारह ठिक। **एन-स्थर**्कूहार्भित बरकः वर्षे हात्र, रून काक क्रिकिंगित बर्के बूकांगात। আৰ্বর এহেন ক্লচ সাঁচার আৰার: काल मारेट्र शांठक (म कंशांत्र जात,

माजा जात हिक त्याद्वा रेजेंद्राणी नाती, পরিধিয়ে কোর্জা বাস অতি মনোহারী। নিতম্ব নীচে ভাষার কত মে বিশাল, অতুল গুৰুত্ব ভারে সুগম্ভীর চাল । निउट्य (मिनि। जुना (मग्न कविकारन। ্রিস্ক তা কঠিন বলি ছেন লয় মনে। নিতম মাধুষ্য তার কিবা স্থলনিত, कोमन कूर्यन यथा इस विकनिज। এ হেন নিত্রোপরি স্বর্ণ চন্দ্রহার কাজ নাই হে পাঠক, গে কথায় আর। शानान शानान करत हांक वर्ग हत, **मत्रभारम श्रुकरयत क्रिय इत्र इत्रै।** এ হেন রমণী এক ভূষণে ভূষিত, দাঁড়াল মোহন পাশে বদন হসিত। म नाती-मान्या-तानि करत अनमन. विकनी विकिन (यन (म छेक्कान छन। হেথার মোহন হেরি উভান শোভন, নিজোছান পড়িমনে ব্যাকুলিত মন। निक नाती-डाममूथ পড़ि शन मत्न, একবারে জানশুর অনারী চিন্তনে। मभी भन्न वामा 'शत शिष्ट्र लाइन, निकामानिक नाती जाविन माहन। " रा (अन्निम्म) विन धीत धात श्रीवा उन्हें. " अटमा श्रिरत इति मात्य स्किन्धक्वात । " वह मिन शदा आंकि मिथा उर मान, " কহ কথা চল্ৰাননি কুড়াই অবলে ।"

किय मर्ग।

' माद्राबंद जालि दूसि मिदे निज्यिनी, करह कथा शामि शाम मध्यक्षाविगी। " अटह हिज्दहाद जय आया जामि नहे, " হবো তব প্রাণজারা ছেন পুণ্য কই।" (गाइन एनि এ कथा जदाक इहेन, निक गारी निकामान यभन जाकिन। मञ्जात अशीत शीत वरन " अकि आत, "করস্পর্শ করিলাম রপ্সী কাছার। " (क जाशिव ७ छेमात्म तकनी ममत्र, " জानिवाद क्ष्रम बाक्ति कमश्र। "ক্ষা কর, ছে রপসি, মম জান্তি যোর " शद-माद्री-जन न्मार्म कार्र कार्र जन माद्र।" खनियां सम्बरी करह शाम-मिके शाम-राजि नश ति ए स्थि नश-धरा काँनि। " কহিতেছ, জাঁখি-চোর, কাঁপে তব অঙ্গ, " কাপে অন্ধ তার যারে আক্রমে অনক। "ত্ৰ অঙ্গ-কম্প শুনি আশালতা মম " मकीब हरेशा (मांडा भरत अज़्राम। " मिला छे जारिश (महे आहिन निक्की न, " उर जब-कला उनि इरेन मञ्जीत। " অথবা হে মনোচোর তব ও কম্পান, " তব্দ প্রতিকৃতি; সরে কম্পিড) যেমন। " সৰঃনীয় আলোডনে তক আভিকৃতি " केंद्रिश बहु केंद्रिश कर उक्का आकृति। " তৰ তারা লোক্ত পড়ি এ বৌৰন সরে, ' योगर्व जन्मी मध कारण अन्वध्दत ।

" आमात्र कंशन युग नी दित कंशन, " তোমার ভড়াগে ওঁক ছায়ার মতন। " किकामिह हिन्द्रहोत मम, श्रीहरू , " এ উল্লান ও ভবন এ দাসীরি /হয়। " জीतरनत जांत्रा जामि ; इत्र मम जान, " छनिश्रा शांकिटव मम खामी-अखिशान।" শুনিয়া মোহন কয় "শুন গোঁ জুন্দরি, " তব কথা আকর্ণনে উঠি গো শিহরি। " হইরা বড়র ভার্যা এ বাঞ্চা কেমন, " পরিহরি হেন ইচ্ছা নাই গো ভবন। " যে জন অপর নারী অঙ্গে দের কর " তার মত পাপিষ্ঠ কে অবনী ভিতর ? " যে জন নারীর করে সতীত্ত "হরণ, " তার মত হুরাচার কে আছে ভুবন 🕈 " হেন বাঞ্ছা করি দূর বাছ নিজ মরে, ' शूद्रक्रम পেলে টের পড়িবে काँ পিরে। " হেন মনোমত স্বামী থাকিতে তোমার, " অপরের সঙ্গ বাঞ্চ এ কেমন আর। " कामिनीक्टंबर कून जम्मा दलन, " कूणांग कनहिनी मांशिनी (यमन।" শুনিয়া কামিনী কদ "এ আর কেমন, "তৰ মৰ পুৰুষ তো দেখিনি কখন। " এ তব মেবিনকাল আঁক্তি এমন, " তৰ মুখে হেৰ কথা না পায় শোভন। " এ তব বয়সকাল ক্রুড় রসে ভরা, " উপরে চিকার, বুঝি ভিতরে ফোঁপর।।

4.

" गडीप कर कोशादा ? तम खर्रा कमन ? " হৰো সতী হেন পতি কই সে ভূবন ? " পতি মম পরনারী নিয়া সদা রত, " আফোদে কাটেন কাল, আমি স'বো কত ? " তিন মাস হলে৷ গত দেখা নাই তার, " शिल्लाम (मधा हत्म इत्त्र नाती कात्र। " সতীনারী ভূঞ্বারে ইচ্ছা থাকে যার, " আগে প্রয়োজন করে শুদ্ধ হ'র। তার। " या देक्हा इस्टेंब मान कतित्वन जिनि, " किन्न दीटि कि किन्न अवना कामिनी ?" শুনিয়া মোহন কয় "শুন সুহাসিনি, " হতে পারে সত্য তব হংখের কাহিনী। " কানিতাম তব পতি অতি বিজ্ঞ জন, "তব ছুঃখ কথা শুনি ছুঃখিত জীবন। " পতি মন্দ লোক যদি হয় তব জ্ঞান, "তা বলি কি ভূমি হবে তাঁহার সমান। " যুবতীর পাতিব্রত্য অস্তর - ভূষণ, " সমুজ্জল করে সেই সৌন্দর্যা-রতন। " अन मा जमिति जारे मिरे छेशामम, " याद्य स्थ रेष्ट् जूमि नाहि स्थ द्वारी।" রমণী-হলভ লভা ঢাকে মুখু তার इलाइडि थूनि र्वेत्र म यूथ अवित। करह तम ऋमती थूनः 'माहरनंत' क्षेत्रि, " ভব উপদেশ কথা আক্ষয়ী হে জতি। " মম ৰাঞ্জা অগ্নিশিকা জোনো, চিভচোর, " উপদেশ ७ कड़न कार्न इंग्र स्थात।

" जरमा जिल्ला खानमृत्य, भर्षत काहिनी " রাখি দেও, পিপার্দায় মরে চাত্তিনী। " তোমার মানদে यদি এমনি আছিল, " কেন ও কোমল কর কারা পর্যশিল। " दोथ दोथ धेर्मकश (लंग मम वारक, " স্বৰ্গপথে যেতে কেবা নাছি বল সাজে? " স্বৰ্গপথে যেতে পাপ কোন থাছে আছে? " ७ (इन (नर्थक-मूथ ७८न मम कार्ड " পোড़ारेश निरे बानि या अत्नत नू है, " এসো এসো প্রাণ্যথে ছলনার কুটি।" रिगाउिक प्रिंथि भीत करह कति इन, '' (कमत्न वामना भूति छ्ला छक्षन। " প্রতিজ্ঞা আছে যে মম একটা বৎসর, " कतिव ना जीमश्मर्ग द्रावा मिनाखत। " করজোড় করি ধনি হাড় বাঞ্চা হেন, " কুকথা ও মুখে আর নাছি আদে যেন।" শুনিরা হলরী কহে বিষাদিত-মন "কৰে তৰ প্ৰতিজার শেষ সংঘটন গ " মোর মাথা খাও মোরে দিবা করি বল, " প্রতিজ্ঞা হইলে শেষ আদিবে এছন। "নতুৰ ভোষায় আমি ছাড়ি নাহি দিব, "বল বনঃ তব দেখা ক/ব ছে পাইব।" ছাড় श्रा पिश्व शीत करह कति इन, " প্রতিজ্ঞার পরে পুনঃ আসিব এক্স।" হুম্বী কছিল পুন: " ওছে চিত্তচোর, " কোন্ মালে পুন দেখা হবে সাথে মোর?

" (मह यानाहात मिन मिन तिछ कति. " बकार्ख गंगिव वंत्रि ज्लामाना भति।" कार्विनीत क्या अपि कहिल याहन " কাল্পনে আমার হবে প্রতিক্তা পুরণ।" এ कथा अर्ग कति चर्मती उपन, विबन्न कतिन्ना कट्ट खुनान-वमन। "বল ৰোৱে ফাল্লনের অমা নিশীথিনী · " आंत्रि फिट्ट मन्नान न्ना आका किनी। " डेम्रांस मिक्स्त जाटक गंबाटकात पात. " (थाना द्राव तिने जारमहम जामाद्र। " अन अन आगमार्थ, क्लान महा नाहे, " ठाउकिनी मम तर्वा थाजामिनी छाई।" মোছন এ কথা শুনি না দেখি উপায়, তক্ষীর বাকো কাজে কাজে দিলা সার। তৰে বিষাদিত মহন নারী গোলাখন, जामाम छेठिन नाहि माइन-जड़द्र। मृग सथा बाजी-कदा (भटन भदिजान, डेइबारम शाम (वर्ग कन्नाविक धान। তজ্ঞপ মোহন আসি উদ্যান বাহিরে, कीयत्वत वाही जांक हत्न वनीजीदा। কেই নিশাকালে খুলি দিল ভরী চার, हिन्द्रा छत्रने त्व_्षे (कवा बटह बाहर । উত্তর পশ্চিম দেশ এমণের তরে, कुष्टमभिथा । स्टान : स्पादन अस्टन।

নবম সগ্।

Oh then what soul was his, when on the tops of the high mountains, he behold the sun Rise up and bathe the world in light".

THE EXCURSION.

Unnatural doeds

Do breed unnatural troubles "

MACKBATH

मधुमान नगांगंठ नव मधुमग्र, স্বৰ্গস্থল হলে। যেন তুবনে উদয়। - (य भार्ष किता अ माथि ध्यमकथा कता, প্রেমপূর্ণ প্রাণীকুল ভব প্রেমময়। শীতরাজ্যে তক্তুল হয়ে ভরাকুল উলন্ধ জীহীন অতি, হরিত তুকুলা -পরিহরি মনোত্বংখে ছিলা বিষাদিত, বসত্তে নির্থি তার। হলে। উলাসিত। চিকণ রঞ্জিত বাস কিসলয় নাম. পরিধিল অমনি রে, কিবা গুণ্থাম কহিতে স্কুম্ তার? করি মনে মনে, কাছে রাখিতারে দেখি , দাই নয়মে। কোন তক সুঞ্জিত কৈছ পলবিত, কাহারো প্রকুল কুলে বদন হসিত। সহকার শাথীকুল আকীণ মুকুলে, मञ्जूल माधवी कूल श्रंत ठाटक इटल।

কাননে কুতুমকুল' কত কুতুদিও, কানন-শোভিনী দঠা তাহৈ মুঞ্রিত। विविध विष्ेषी'शास विविध बल्लती. मभीत्र । उद्भ केटि मिन्स्या नहती। मत्न देख्यां कति मध गृह शतिहति, সে সৌন্দর্যাশ ছেরি আঁখি ছির করি। মঞ্জরী উপয়ি অলি গুঞ্জরিছে সুখে, मधुरीति मकु जमा श्वासि मूर्य। मलश मांकड मर्था मर्था मुद्र वज्र, চুৰিয়া কুমুম কুল প্রিমল ক্ষয়। পরশনে সে অনিল কি সুধ উদয়, সে হ' বুঝিৰে কেবা বিনা সছদয়। शांधीकृत भाशीभितत स्रूपं करत गान, अवटन भीजन मिर सूथी इत थान। गगन मधन करा करम नित्रमन. विमल स्थार्ड भार गर जातामन। मानरवत्र ऋथमिञ्ज स्म म्माउन मर्मात्न, . छेड्निजा छेर्फ स्थि मग्न करत मत्न। পाहेशा वमलकाम कीवक्रजुगन, रता अकवादा मत अत्यादन मगुन। मकरमरे स्थी यमि जरव क्विजन, সমধিক श्रुवी देग्हें मा इदा कमना কিন্ত হে পাঠক জন, কলিজবতার ভাবি ভাবি কবি-হৃদি হইল আঁঙার কলিঅবভার করে পড়িয়া পাঠক, শরীর হইল কা^লে সুরিল মস্তক।

कनित्र हिंदानी जीकि कहा कित मन्त्र छता कारण केविकत जाकिव क्यान। गाउ राज मीर्च मर वर्ग जावनूम, मकरम कार्म शिक्ष कवि जारन पूर्व। শিরোদেশে কুর কেশ শিরোকোণ চিত্র কে তাৱে চিনিতে পাল্ফ কৰি জন ভিন্ন। আত্ত থানা ভূষা পড়া যেন ডোলো হাঁড়ী সক সোঁক তাও ছাটা জাৰি লয় কাড়ি। ভাবোর ভাবোর চোক দেখি হয় ভর वामा बूर्ता किंगा वाग् हास् वन इह। দস্তপাটী সব পচা হুর্গন্ধের খনি यात शत्क हुটि शत्र ईंटक्त (भड़िन। हाउ इंग नामा नामा " अब माता" माग, চাঁপ্কানের হাতা ঝুলে অসুনির আগ, बुकार्ड म क्रिक करम क्रिया (र शांठक, वमत्न कि छोका यात्र खुन छ भावक ? যেমন চেহারা থানি অন্তর তেমনি সে অন্তর রাণীগঞ্জে করলার ধনি। कनि व्यवजात निष्ट व्याष्ट्र पूने हिना, नित्रीर मान्दर माद्र जगाद्वा'कि एजा। **७क कम (भौकार्य मिर्ट मि कनित्र,** क्रॅंरत উएए चेर्च जक बद्ध इस दित। थूनि बान माँड़ावेटन छ्डूत शांठक, জন্মে মাগুর মত সার সৈ মন্তক। इति हक्ट्रकार्ग जात्र धावक्षमा बनि, कवित्र भन्नीक कार्रा सिवि मि स्वयमि।

धर्यायम् नाहि कान् दृष्टिक प्रदेशः रेर्टालांक गठ किंद्र जनत्वी वर्ग । অপর চেলাটা স্থাধ এক চোকো দেই कटत शेंटम छितिभ अञ्चल भटत यह ।" मृद्धिमान नेदी लारे, धक्छि धमनि, আপনার অন্তরাক্ষা চিবার আপনি। विमाण्य खड़ी हार्या, अमनि श्रीकम, गंधमूर्थ इता जांत हा अधार्थम। मिनियांत गण्य कति **इ**टव खुतिक. मिश्ट **जाकि**मिट होत इहेग्री मुस्कि। এঁদেরি করেতে পড়ি ছে পাঠক জন, भंदीत करेन कानि कानि श्लामन। (मट्ट नंदि मन मम डाकिन ध मन, मन माइतनत जरक शिक्तम अरमणा নগর রাজমহল স্থান প্রীতিকর धक कारल हिना मिरे मखारिंद शता `অভিধাৰ তার হজা বিখাতি ভূবন, নিশাইলা এ নগর বিচিত্ত শোভন। " ट् बाजन मध उर जड़ीनिका मधी, खार्याम धामान मधा कांत्र म खतमा হইতে সমাধি স্থান উঠাংএক বার, দেশ দেখ এক বার: তবন্ধ তোমার। विकटक एक ब्राम कूमि कर्क दमगीत ! ষীরকথচিত গৃহ অতি শোভনীয়। हित्रग्राम निश्हामत्म बात्र मित्रा विम, মণিময় বিভূষণ মাজিত বালসি।

गिरतारमा गैजाउभ कंउ क्षायकति, পার্যচর ব্যঞ্জনিত তালরন্ত ধরি। দেই বাসগৃহ-দশা এবৈ হে কেমন [?] • তथि भौथी की जा करत जह मधौंत। নানা তৰু নানা লতা শোভিছে সে ছব, ভবনে বিবিধ জন্ত কলে কোলাহল। যে স্থলে বসিতে তুমি পাতি সিংহাসন, শগাল রহিছে তথি হয়তে। এখন। कमनीय काखिमशी बमनीत चाब. হয়তো সাপিনী বাস করে হর্ষান্তরে। শোভিত যে ছুলে তব হন্দ্রাতপ লিরে. হয়তো বাহুড় তথি উড়ি উড়ি ফিরে। (कानाइनमग्र शाम हिना अक कान, জনশৃত্ত সেই স্থলী ভাষিছে শৃগাল। সম্ভাটের ভয় বাটী দে পাঠক জন, তোমার মান্দে ভূমি করছ স্বরণ। মনে কর এক দিন চিন্তিত অন্তরে, দাঁড়ায়েছ নৃপতির ভগ্নাটী'পরে। मगग्न मर्खनी, श्रवि भून श्रवाकव, উদিত হইয়া ঝকে প্রাসাদ উপর। ভগ্নবাটী মধ্য দির। নিশাকর কর, গও খণ্ড শোচভ যেন সঞ্জেজ হুন্দর। - उक शब मधा निम्न भेगीतन्त्र शिक्, অগণ্য মল্লিকা শোভে থেন বাটা'পরি। मकिन निरुद्ध- (शांत्र-सूधू मभीदर्ग, পরের স্থার শব্দ করে উত্তোলন।

সকলি নিজন্ধ দোৱ-ছতু দিখাজীত, छानिए धहाछि भीन ; छिछ छमकिछ । শকলি নিভন্ধ খোর—বিলির শহার, ৰহারিছে প্রকৃতির ছদি-বীণা - তার। সকলি নিত্তম যোৱ-কেবল বাস্তড, मर्था बर्धा बर्जनरंष्ठे किन कुछ छछ। जकिन निखन्न योज-यह मिरक हा छ. कारनत क्वान पृष्टि मिथिवादि भाउ। मिथ मिथ जावि जावि तम श्रामत जात, हरत ना कि द्रशि उर्व गरकान जड़ाव ! रटन नांकि मिरे दान धर्म धर्म धर्म कान ? হবে নাকি ভোজবারি জান ভব স্থান ? করাল বদন কাল খুলি প্রস্থৃ তার, ধরিবে না হেন পাঠ সন্মুখে তোমার ? "মম অভিধান কাল এই ত্রিসংসার. " সকলি আমার সৃষ্টি মম অধিকার। " নাহিক আমার জন্ম নাহি কর মম, '' আমা হতে ব্ৰহ্ম জেনো আমা হতে ব্ৰা। " সক্ষত্ৰেষ্ঠ জীব মম পৃথী স্থিত নর, "তাহারি এ অটালিকা গঠন স্থার ৮০ " किन्छ भूखगंग मम ध्यकृत्ति विवम, " आमि जनानां । बात आमि इरे यम। " अरे जड़ेशिका कांत्र? कांबा मिरे मत्र? " व्हेज़ार्ह नीन मैंग छेन्द्रा छा छत्र। " किছू विवद्यांत्री नम् निव कारण भीम, " আমি হাত্র পুত্রগণ ছই না প্রাচীন।

" निताहि जाँगात जर्भे किहू श्र्लगटन "नाहिक कोंद्रांत ४२म छन्द अवटंग। " যশরত ভার নাম নাছি যার করঁ, " कारम ऋभी शूखकारह विश्वनिक हत्र। " मक्का चुकीर्खि कन्न, बरम नाहि यान, " धन गर्स एत थर्स करतरू आंगात। " দিতেছে এ ভগ্নবাদী তারি পরিচর; " अककारन ल्यां छनीई अरव श्रममंत्र। " जनम श्रेष्ठि जांब पर बाम मन, " পরিপ্রমাণ প্রাণ শুন আলম্ম মরণ।" कारमद इंदेरम भिष्ठ गेत्रिया वर्गम, প্রকৃতি ভগিনী তার করে সংখাধন। " আমার প্রকৃতি দেখ সদা বাস্ত রই " हक्क, स्वा, जाबा, मही शूरत गठउरे। " এক রূপে আদি আমি এক রূপে যাই, " এक क्रार्थ बहे, शद ज्यमा क्रार्थ शहे। " क्विंनि श्रीत्वर्श्वम स्नाम्बत छेश्रत, " জড়তা কেমন নাহি জানে এ অন্তর। "এভুবন যুদ্ধকেত সম সুভগণ " छव शूरक बीत इड़ मछ यरनाशमः। " সৰি কিছু দিন তবে লভ যদোদালি, '' চিরন্থারী যাহা লভ করিছ প্রকাশি। " जाम जाम व्यवमान मात्र कत थान, " ऋकौर्खि मख्य मत्य कि कब्रिट्य यम ।" প্রকৃতি ধরিষা থাত্ব পড়িবে এ পাঠ, भूमि मिर्व मर्मरकत अञ्चेत्र कताहै।

বিমর্থ পুরিত সেই প্রীর ভিতরে वियाम कृतिए चान (इंटे शिक कृत्या। হে পাঁচক তবে যার রম্ভডাঙা মন, বিযাদ বিতরে তারে প্রমোদ রতন। এই নগরীতে এবে মোহদের বাস, মোহনের মনোভাব কে করে প্রকাশ ? मभाटिक ভधवांनी (इतिक्रा भाइन, আনন্দ সাগন্ধে তার অন্তর মগন। নিত্য নৰ নৰ শোভা নিৱপি সুধীর মানস-পক্ষজ কুল পবিত্ত শরীর। अक मिन डेवाकाल सक्त माइन, জাগিয়া উঠিল শুনি বিহৃত্ব কুজন। कुरू कुरू शिककून डातक भांधी शित, পাপিয়া ঝঙ্কারে কর্ণে সুধারাশি করে। মলয় অনিল ৰছে তক্শাথা'পরে, गाइन भामभ यन गीठ - मधुखात। ু প্রকৃতি-পরম - শোড়া দেখিবার তরে উঠিল পর্বতে ধীর প্রফুল অন্তরে। श्रुडेक म मशेधत लांडा हमंदकात, নিরীকণে যার শোভা আনন্দ অপার। পাদপে বেকিত গিরি শোভা চিকণীয়া ধীরি ধীরি উঠে ধীর প্রফুল হইয়া। रेगलगुरक উঠে शीत इतना मः छाडीन, নির্থি প্রকৃতি-শোডা মধুর নবীন। পর্বতের পাদদেশে পার্বতীর নর পর্বের কুটার-জেদী-শোডা কি স্থনর।

পর্বতের পুর্বাদিকে গাঁহন কানন, কত রূপ শাখী শোড়ে কে করে গণন ? उमान, शिशोन, जान, मान माति माति, जाम, जाम, हलकम, शामश शाहाजी। मधु मीन नमींगरम मधुत मुत्रि, খরেছে বিটপীপুঞ্ প্রীতিপ্রান্ধ অতি। গিরিশৃদ্ধ হতে শোঁডা করি 'নিরীকণ' थामान नागाद मन कांत्र ना मर्गन ? युक्तु विभान उक मम अव कान, বিচ্ছিনতা নাহি করে নয়নে প্রদান। তারি পরে দুর্কাক্ষেত্র খ্রামল বরণ, তাহারি উপরি চরে যত গাভীগণ। বড় গাভী গিরি হতে যেন বংস মত, দীর্ঘকায় নর্গণ যেন শিশু কত। তারি পরে নদীগর্ভ পূর্ব বালু রাশি, भन् भन् कतिराज्द मोमार्था अकानि। জাহ্নবী জীবন বেগে তারি পরে বয়, মরাল আবলী মরি তহুপরি রয়। মোহন পর্বত হতে শোভাষয় স্থান, जम्मर्गन कति मति इरेल ज्ञान। পর্বত পশ্চিম ভাগে শোভে গিরিভোণী, জীবন র্থাই তার যে 'কভু দেখেনি। গহন কাৰন শোভে তারি পাদদেশে मार्क, जहरू, थड़गी अग्रह्त त्रतम कतिरङ्ह विष्ठत्र निर्देश क्षात्र, কতরূপ শোডা কছে কেবা সমুদয়?

करम थाड़ी निक हं'एउ डेनिक उनम, मारम निज्ञी मुख्यांक विरंडजन। লোহিত তপত লোভে অথে গিরি অছে, मील निया क्यांठे हत्ना महक्उ मरक। গিরি হ'তে তক্শিরে নামে রবিকর, অন্য রূপ শেষ্ডা হলে। নিসর্গ উপর। গিরি হতে এঁকৃতির শোর্ডা হেরি ধীর, करक कथा मन मत्न शक्त भन्नीत। " আহা কি জপুর্বারপ হেরি চতুর্ভিত্তে, " थङ्खि भाषिन काम मानेन ध्रिट्छ। " मचूर्य मिसर्व-मिझू इत थेराहिउ, " शंबरम माधुर्धा-छेबि इक्ट्र छेविछ। " সে তরজমালা আসি মম দেহ-তীরে, " अच्दि कदिन मय मानम शाशीदा। " থাইতেছে হাৰুড়ুবু সে তরজ-ভারে, " পারে কুল পুনঃ চরে প্রকৃতি উপরে। " श्र्वेः त्म जबक्रहामा (वर्षा मरह जानि, " মানস পাধীর ছৈর্য্য দের আহা নাশি। " ठकू, कर्व, नामा, षक, कायन प्रमना, " হাৰুভুৰু খায় ভাষা পাইয়া ভাড়না। " তর্ম প্রহামে প্রঃ পার তারা তুল, " विচद्रत अङ्गद्धि शंद्रत जानरम गांकूम। "मार्थक इरेन थान मार्थक भन्नीक, " মৰ মোহনিরা রূপ হেরি আফুডির। " পূৰ্বে প্ৰকিনের শোজা? ও কি ৱে তপন ? " कथम का जांचि, भाषा द्रातमि धमम।

"নানান ও রবি নয় ফাদ প্রকৃতির, " पतिरें मानंगभाशी मत्न कृति चित्रं। " পাতित अकृति काँफ मधुक्ता मित्री, " কেমনে স্থৃত্বি থাকে মন-পাখী-হিয়া। " উড়িল রে মন-পাখা তাই দেহ ছাড়ি, ' কি আশ্চর্যা ও মারুর্যা লবে মন কাড়ি। পেবিত্র হইল প্রাণ পুরিত্র শরীর, '' ইচ্চা করি হেরি রবি আঁখি করি স্থির।'' তেজোরাশি তপনেতে ক্রমে আবির্ভ্ ঝলদিল আঁধি যে রে ও তেজ উদ্ভত। :মাহন চাহিল তাই তক শিরোপরে, মপুর্ব শোভন ছেরে আঁখি ভূরে করে। পর্বতের কিছু দূরে দ্বাক্ষেত্র'পরে, মুগ এক ঘূগী সহ রহে গেণ্ডরে। भृगी - मूर्यन् भृग भूथ कतिश अर्थन, চতাবেশে প্রেমভরে করিছে ঘর্ষণ। আহা কি অপুর্ব প্রেম্ তাহাদের মরি, নাহি জানে কপটতা ভিতর উপরি। गांनरवत्र मठ नाहि ङारन ध्ववक्षना, ভিতরে পৰুষ ভাব মুখে আরাধনা। मृग - मृगी - (ध्यानांश निदंश (यांइन, প্রীতিপূর্ণ হলে। দেহ এফুল জীবন। এক দৃষ্টে চাহি ধীর মৃগী-চক্ষু পরে, কি যেন ভাবনা এক উঠে সে অন্তরে। হেন কালে তীক্ষ এক স্থবিশ্লি শর, বিদীর্ণ করিল আসি মৃগীর অন্তর।

পড़िन अमनि मृशी इहे कहे कति, श्री-जांबि रान जांति जांबिनीत बिता, ज्ञान्तर्भ (मह जाँकि नित्रिध मार्चन, (माहिनी - इतिगी - जांशि इहेन अत्र।। **षधीत हरेन धीत मिलू येथा अ**एं, কিন্তা বধা শিশু - মন বন্ধ-কড়মড়ে। মোহিনীর মৃত্তি উঠি মানস নয়মে, আকুল করিল অতি মোছন-জীবনে। অবতরি গিরি হ'তে ব্যাকুলিত-মন, কহিলেক রামধনে আপন মনন। " শুন শুন রামধন আজি মম প্রাণ " कां मिशा छेटिइ (कन शारे ना मसान। " আজি আমি যা'ৰ বাটী কহিছি নিশ্চয়, " তরী সারোহণে যেতে দেরি নাছি সয়। " गाड़ी ठड़ि छन जुता इरे एः। यारे, " ফুকরিছে প্রাণ কেন সন্ধান না পাই।" প্রভুষুথে ভুতা যবে এ কথা শুনিল, আনন্দে তাহার মন নাচিয়া উঠিল। मणवाख इरे जत्न जारेमा वामाय, द्रामधन निम मार्थ खरा ममूनाय। गाड़ी जारताहिए हरन शर्त दूरे जन, कविन छिकिछे का बताबिक मन। .व्याद्वादिन यांत्न (माँट्र मिन यांन हाड़ि, ঘরম্বরি শব্দ করি চলিলা সে গাড়ী।. क्रमि-वाष्ट्रयान-गंजि क वर्तित जादर. जरे **रह पर्दे इरमा** कि मिर्ट जोहारित।

এ रे प्र वक्क तां कर्ण मात्रम, এই বাটী একতল কণে সে ত্রিতল। এই রক্ষুত্র বোধ ক্রে দীর্ঘাকার বিদ্যিতা হলো তার যেই একাকার। मार्ठ, यांचे, शर्व, शृद्ध मत्म इत्र कान, डेज्डीयमान शक्लीदर किन ছूटि योन। गउ राना धक मिन गंड धक दांडि, রামধন মোহনের যান লোক সাতি। পর দিন গাড়ী হতে উত্তরি গোহন, স্থাম - পথাভিমুখে করিল গমন। वाजिन अधिक दिना मिशि त्रांभधन, क भगामाना मत्या अत्यत्म इकन। त्याहम वार्मम उथि क्रांच-कटनवत, গতক্রম মোছনের কিছুক্ষণ পর। হেন কালে "হা প্রাণেশ রহিলে কোধায়।" ্ষ্ম মূহ স্বর ধীর শুনিবারে পায়। भूनः (मरे वामान्यत्र धीति धीति कत्र, "রহিলে কোথার নাথ এমন সময়। "এসময় একৰার দাঁড়াও সমুধে, " ত্যক্তি হে এ পোড়াপ্রাণ তবে আমি স্থাধ।" পুনঃ সেই খেদধনি শুনি কামিনীর, মোহনের মন হলে। অতীব অভির। দয়ার অন্তর যার মে কি পরছুখ মেচন করিতে কভু হয় হে বিমু**ধ** ! मज्ञान्त्र शत्रष्ट्र (भनमम वार्ष्ट्र, পরহিত কাধিবারে ভুলে নিজ কাজে।

विरम्हिट शहक्ष मरह निर्देश क्रिम, अमनि (कारने। (इ स्थि महोत्र कारमे। রবিফর ভক্ষবর ধরি শিরোপরি, जनात्रारम करत यथा शासू-इःश मति। কিন্তা যথা সুধানিধি পুড়ি রবিকরে, स्था दित्रको कर्त्र मानव - निकर्त्र। মোহন - এবণে পশি সেই খেদধনি. উদ্বেল করিল তার অন্তর অমন। পণ্যাজ্ঞীৰ কাছে ধীর কৃতৃহলী চিতে জিজাসিল কোন জন কাঁদে আচহিতে? कहिल मि भगाजीव "अकी उमगी, " উচ্চকুলো দ্রবা তঁংরি ক্রন্দনের ধনি। " मूम्र्य अवस्। जात मिर कार्टिन्त," মোহন দেখিতে তারে অতীব উৎস্ক। উপস্থিত নারী-পাশে বামা মেলি আঁথি हारिन त्याइन शादन पूर छ दि हारि। হতজান হলো নারী হইলা মূলিছ ত भारत्नत समि कार्थ (मह हमकिछ। ,ৰছিতে লাগিল বেগে মোহন শোণিত, বিশার বিপ্লব চিত্ত দেহ লোমাঞিত। कूछि धीद आमि नीत मिल मादोबूत्थ. সংসার आधारमञ्ज क्रि श्रेर इरथ। किছूक्न शरद्र भरका इहेन छेन्द्र, হাসিয়া উঠিল তবে মোহন - ছদয়। উঠিয়া বিদল নারী কোন রোগ নাই, বার জন্ম রোগ সে যে সমুখে রে ভাই।

হে পাঠক সহদয় কিবা প্রয়োজন বলিকারে এই নারী হয় কোন জন! माहरनत अनित्रनी माहिनी सम्बती, পাষও জীবন দেছে এ হুর্গতি করি। গুপ্তভাবে প্ৰাইলে পিত্ৰালয়ে ধনী, क्वीवट्नइ... इद कति मन्नान जर्मान, মোহন - শভরালয়ে আসি উপন্থিত, भाइन-थंखरत कक निजा यरशिकित। (भाककमा जात्न किन भाहिनी जनतक, বঞ্চিত ক্রিলা অর্থ শুষি কপর্দ্ধক। অন্যো হইয়া ধনী হতে গিতালয় পলাইয়া আমিতেছে শুশুর-আলয়; শশুর জনকালর ভিন্ন রমনীর কোথা স্থান আছে সার পাঠক স্থীর। मुक्का मन्पानि उपरि इतना (माधिनीय, मग्रंथ नार्थरत रहति जानरक जभीत। মোহিনীর মনোভাব কি হলে! তখন. সে ভাব বনিতে দক্ষ হয় কোন জন গ शार्ठक अधीवत स्म जात्वत जात. তোমা ছাড়া কার হবে অনুভব লাভ। হে পাঠক তাই বলি তব হৃদি-পটে, মোহিনীর মনোভাব তাঁক অকপটে। কাব্যপটে দে ভাবের পাইকে অভাব, করি দিল। স্থসন্ধান আঁক তুমি ভাব। সহাদয় - করে যদি গড়ে সেই ভাব তবে সে ভাবের পাবে যথাপু ফভাব।

त्याहिनीद्ध मीना कीना निवृति त्याहन, উঠिमा विश्राम - यन टिम क्रिम गंगन। विका आम्बर्श अर् मिन महाकार्भ, ভাঙ্গিল। ইন্দ্রির তক দেখি লাগে জাস। কুতৃহল - শিখা তায় হানিছে বিদ্বাৎ, नीत्रम-निर्दाय जांत्र अठि अम्कूर। অঞ্চ - রুফ্টি বরিষণ হল্পে কিছু ক্ষণ, থামিল আক্ষর্য বড়ি তাণি দেহ, মন। দেহ-তরী ত্রাণ পেয়ে যন্ত্রণা তুফানে, মোহন সম্বোধি কহে মোহিনীর পানে। * একি একি বিধুমুখি কেন ছেন দশা, " সে শরীর চেনা ভার দেখিলে সহসা। " म नावगामती मूर्खि किन जिताहिलं, " সে সৌন্দর্য্যরাশি কোথা, হলো লুকায়িত। " কেন বা এ স্থলে প্রিয়ে যেন অনাথিনী, " কেন বা এ বেশ তব যেন পাগলিমী। " वल वन इंस्क्रूथि वक्त फिट्टे यात्र, * ঘটিয়াছে কি জঞ্জাল কহ লো আমায়। " নাথেরে উত্তর দিতে অঞ্ধারা শত বহিল মোহিনী-গতে বেগে অবিরত। দর দর অঞ্চ ঝারে বাক্য নাহি স্ফুরে क करत का का न मिया विश्वाम मिसूरत। करत औषि इन इन गम गम ভाষে প্রাণকান্তে বিদোদিনী এরূপে সন্তাবে। "চল চল প্রাণনাথ আগে বাটী চল, " (म कथा कवृति नम्न धरे रोगावृत्म।

" कहिट दूर्ध काहिनी मण निणि निर्व, " ফুটিবে অরাতি-বক্ষ যবে সে শুনিবে।" মোহন ও রামধন হয়ে জুরারিত আনে পালিক ছ'তে এক পল্লী সনিহিত। প্রবেশিল পাক্তি মধ্যে মোহিনী স্থন্তরী, চলিল। বেছারাগণ ভ্রম হাম করি। ু চিন্তাপুর আমে ক্রমে আসি উপস্থিত, পড়ি গেলা কোলাহল সবে চমকিত। মহোৎসৰ পড়ি লীল মোহন-ভবনে, প্রতিবেশীগণ এলো নিধিতে মোহনে। (याइन - जननी - क्रिन धितन कि जात, স্বেহময়ী ুমাতা ভিন্ন সে ভাব-সভাব वुकारक में कम (रुवा ? वुका भा जननि, হারা অঞ্চলের নিধি পেলে স্থতমণি, ক্রনে তোমার হৃদি হয় বিকসিত। অপুরে সে ভাব আশা পণ্ডিতাচ্চিত। माइन-क्रनी छनि जाहेल। माइन, ধেয়ে আসি পুত্র কাছে করে সম্ভাষণ। " थिन कि माइन माइ अक्षान धन " আয় বাছা কোলে করি মুখানি চুম্বন। " কাঁদি কাঁদি তোর তরে ও মোর রতন, " হইরাছে দৃষ্টিহার। ৫ ছ্টী নয়ন। " সাঁচলে রেখেছি বাঁধি হলো কত দিন " এই भिष्ठे जनापूर्क, श्र-जात-विशीम " तुति इरेग्नां ए अटन मिथ मिथ थिए. " এই भूँ हो मिनम की तहुँकू भिष्म

- " तारिशाहि वाधि वाहा धत कहत धत,
- * দেখিরা জুড়াক মম এ পোড়া অন্তরী।-
- " विटिन ना श्राय भारत खकारतह मूथ,
- "পাইয়াছে বাছা মোর কতই অহথ।
- े " वर्षे या नक्षी आभात ननीत श्रक्ति,
 - " करके इडेश्लोट्ड मात शीखत (कवनि)"
 - ৰোস মা গোঁ বোস্বোস্মোছনের বাদে.
 - "কাজনি মা আর তোর কাজনি প্রণামে।
 - "দেখিয়া জুড়াক চোক জুড়াক হৃদয়,
 - **" কি আনন্দ আজি নো**র অন্তরে উদয়।" মোহন - জননী ভাবি ভাবি পুত্র তরে, जर्क भागनिनी थात्र जाहितन, घरत। উপযুক্ত হুত তরে নহিলে 🗤 কার, এক টুকু क्लीत वैरिध आँ हरनत धात? আনন্দের সীমা নাই মোহন-ভবনে, আখীয় স্বজন এলে। দেখিতে মে হনে। পরম মিত্র মাধব, বন্ধু দরশনে, আ'দি উপস্থিত হলে। মোহন-ভবনে। মোহন মাধ্বে করি বথেষ্ট আদর, সদর বাটীতে এলো ধরি তার কর। नाना कथा करह सिंहर अकटा विमान, क्रम शर्द कहिं। गांधव विवित्रिया অ্ভোপান্ত সমুদায় রভান্ত ভয়াল, ঝরিল মোহন-অত হামিল কপাল।

जनरकद ভ्याह्म प्रभूग छत्म धीत, হ্ইল তাহার মন বিষাদে অভির।

कीवत्वत्र कर्श्य छनि । योश्न-पछत्र, काॅिश्डि नांशिन। त्कांदिश्यत्थत् थत्। ক্রোধ সম্বরণ করি স্থার, মোইন, জীবন-জায়ার গুণ করিল। বর্ণন। म खंडो कामिनी-कथा वर्नितन माहन, माध्य धकाधिहित् कतिमा अवन। উঠিল মাধৰ-ছদে জিখংগা ভাষাল, দে বৃত্তি করিতে তৃপ্ত উপস্থিত কাল। गाध्व त्यां इत्न कानि मश्तमव मम, दाथिन रंगापन कति (म वाक्षा विसम। মাধব মোহন - কাছে চাছিল বিদায়, পর দিন শুঝপুরে চলিলা জরায়। यागि मृज्यश्रुत अक महित्यह बरा. মাধৰ লছল। বাসা প্রফুল অন্তরে। ইবনের পুলোভান বাহির ভ্রমিয়া, রাখিল গৰাক দার ঠিকানা করিয়া। কাল্পনের অমানিশি করিয়া প্রত্যাশা মাধব রহিল সেই আপনার বাসা। নির্দ্ধারিত নিশীখিনী ক্রমে জাবিউ্ত, মাধব পূরিতে বাস্ত কামন। অন্তত। মেদিনী আর্তা দেখি যোর অন্ধকারে, উপস্থিত মাধব সে উভানের দারে। পরশিল যেই দার খুলিল অমনি, मचु एथ माधव प्लिथ अक्ती क्रमी। 'कीवटनत कांत्रा छनवजी मधुमजी, তাহারি কিন্ধরী ইনি মিষ্টর্মুপী অতি।

माधटव (मथाट्स अर्थ 'दांधा शहर जानि. विभिन्त विभाग खर्थ (शिला खरुतानी) कहिल नकल कथा मधुमछी कार्ड, ভবে হেম স্থমংবাদ বল কিবা আছে। व्यागमरा-वागमन-कथा छनि धनी, आस्तीरम नाहिन मन धनीत उशिन ! दामना-मर्जिका इतम मुक्षत्रित जाजि, এত দিনে জগদীশ তার প্রতি রাজি। আভরণ নানাবিধ হীরকে খটিত, পরিল ক্মনারী অঞ্চে বদন হসিত। করি বেশ মনোহর শয়ন-ভবনে চলিলা কামিনী হর। ভেটিতে জীবনে। মিষ্ট মিষ্ট কথা কহি আপন স্বামীরে, ভুলাইল তার মন কতই ফিকিরে। কতক্ষণে নিজা যায় দয়িত্ আপন, করিতে লাগিলা করে সেবা ছচরণ। ज्ञानत श्रृक्राय यात ध्रमन क्रमत्त. স্বামীরে সে নিশি যতু কতই গো হয়। . জীবন নিদ্রিত দেখি স্থন্দরী উঠিল, চিত্তচোরে ভেটিবারে অমনি চলিল। पानाम प्रभीता धनी इता जलाविज, মাধবের সরিধানে আসি উপস্থিত। जांशाद माथत जावि स्थीत माइन, কছে কথা কলঙ্কিনী করি সম্বোধন। " अटमा अटमा आगमत्थ खुड़ाई नहन, " তোমার ও চাদমুখ করি দরশন।

" চারি মানু ভাবি ভাবি ওহে চিভচোর, " শুরীর হয়েছে কালি চৈয়ে দৈখ শোর। " এক দিন হ'তে জ্ঞান একটা বংসন, " জাগিত ও মুখশশী হ্লদে নিরপ্তর। " আমার যৌধন ধনে তুমি সক্ষেশ্বর, ' ধন মন কি যৌবন লহ ওণাকর। " वरमा बरमा थानमत्थ इमग्र-आमरन, ''কৰুক্ ব্যজন পাখা সোহাগ-প্ৰনে। " गीउन विभन मात्र जानम-जीवन, ' कबक् थार्गम उत् भन अकानम। ' कबक् इं कूनश्च भन्न जाकर्रन, " হউক সার্থক মম জীবন যৌবন। 'কর সংখে সুখে এই তামুল ভক্ষণ 'কহ কথা সূহদেশ জুড়াক ভাবণ।" रह পाठक ऋधीयत अन्तरह साहन, যেমনি সে মধুমতী মাধ্ব তেমন। মধুমতী-রূপ হেরি মাধ্ব মোহিত, कि रयन जातना करन रहन डेनिछ। কটে সৃটে মনোভাৰ করিয়া গোপন, মধুমতী প্রতি কছে মাধব তথন। " শুন শুন বিধুমুখি অপুৰ্ব কথন, " রাখিতে হইবে মম আর এক পণ। " আমার বান্ধব-পত্নী হরিবার তরে, " তব স্বামী কত কফ দিলা সে অন্তৱে। " ভোমার স্বামীর ছদি গঠিত পাষাণে, " निक स्थ उत्त वर्ष ज्ञानतत्त्र क्षार्तु । "

"কত কট প্ৰদানিল বান্ধক ভাৰ্যাৱে " वहमः न। नत्त्र मर्मः छाङ्। वर्तिवादः। " निल केंद्र कृषि यपि शाक् मानिवाद्य, " তোমার আমীরে ধনি তীক্ষ তরবারে, " তবে ছে প্রেরসি হব তোখারি তথনি "নতুবা চলিছু আমি শুন সুবদনি।" मधूमजी अभि अरे कथा ज्यानक, শরীর কাঁপিল তার ঘুরিল মন্তক। কছে সে কামিনী পরে মাধবের প্রতি " তৰ কথা প্ৰাণকান্ত আৰুৰ্য্য হে অতি। " (कपटन विधव जामि सामीदः जाभम, " নারী হয়ে পুরুষেরে বধিব কেমন।" মাধৰ কছিল তবে "চলিলাই আমি " হুখে লয়ে থাক ধনি আপনার আমী।" **७७ द**िन कति घ्ल मांधव छनिन, मधूमजी माधरदरत अमनि धतिल। यामीत हतिज्ञानां श्रीन कर्ल धनी, উঠিছিল কোপানল অন্তরে অমনি। মুখে প্রকাশিল শঙ্কা অন্তর অভয়, সকলি করিতে দক ভ্রমীর হৃদয়। माधरव कश्चि পরে কথা বিনাইয়া, " (कबरन श्रूरक विधि तमगी हरेहा। " সাহায্য করিতে হবে তোমারে হে নাথ, " তार विन अरमा कृषि अ अधिनी माथ।". **७७ विन भाषायात्र मान नाम धनी**, আপৰ জন্দরে চলে শকা নাছি গণি।



জীবন পর্যাক্তে মগ্ন প্রসাঢ় নিজায় वर्ज्जि-जात्नाक स्थू वंनिष्ट उथात्र। ञ्चीक इतिका हिन मांधरदृतं करतः, नरेना (स मधूमजी जाजीव मखरैत। क्षीवत्नतः पूरे कत्र माधव धतिन, " मध्यजी धीवारमा इति वमारेम। উঠিল চীৎকার করি জীবন 'ভয়াল, শোণিত বহিল বেগে উপস্থিত কাল। মাধক সৈ দৃশ্য দেখি ছুটি পদাইল, मध्यजी जाद शिष्ट् अमेनि शारेन। गांधरवत मधा जांत शांचरव काथात ? মধুমতী হানে কর আপন মাথায়। साम दांत करत भनी हरत जनाधिनी. मधूमजी, अक्तारत शात जैवामिनी। আলু থাকু উন্নাদিনী ছুটিয়া বেড়ায়, * কি করিত কি হইল হার হার হার। "

नगाल ।